E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 09 | अंक : 239 | गुवाहाटी | रविवार, 26 मार्च, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

असम सरकार और फ्लाईबिग में करार पेज 3

पीएम मोदी ने देवागेरे में किया रोड शो पेज 4

उप्र अब माफिया नहीं, महोत्सव का प्रदेश बन चुका है : सीएम योगी पेज 5

महंगाई भत्ते में चार प्रतिशत की बढ़ोतरी पेज 8

पूर्वोत्तर में अफस्पा के तहत अशांत क्षेत्रों को कम करने का निर्णय

नई दिल्ली/इटानगर (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शांत और समृद्ध पूर्वोत्तर की परिकल्पना को साकार करते हुए केंद्र सरकार ने एक बार फिर नगालैंड, असम और मणिपुर में सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम (अफस्पा) के तहत अशांत क्षेत्रों को कम करने का निर्णय किया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ट्वीट कर बताया कि पूर्वोत्तर के लिए एक ऐतिहासिक दिन! प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने एक बार फिर अफस्पा के तहत नगालैंड, असम और मणिपुर में अशांत क्षेत्रों को कम करने का फैसला किया है। यह निर्णय पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा स्थिति में आए उल्लेखनीय सुधार को देखते हुए लिया गया है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर की सुरक्षा, शांति और विकास को प्राथमिकता देने का काम पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुआ। आज उसके परिणामस्वरूप पूर्वोत्तर शांति और विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर हो रहा है। शाह ने आगे कहा कि पूर्वोत्तर के लोगों के जीवन में यह सकारात्मक परिवर्तन लाने और इस क्षेत्र को पूरे भारत के साथ दिल से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार व्यक्त करता हूं। इस महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्वोत्तर के लोगों को बधाई।

हम पूर्वोत्तर में एक स्वर्ण युग देख रहे हैं : मुख्यमंत्री

गुवाहाटी (हि.स.)। हम पूर्वोत्तर में एक स्वर्ण युग देख रहे हैं। जैसा कि जमीनी सुरक्षा की स्थिति में सुधार हुआ है। असम, मणिपुर और नगालैंड में अशांत क्षेत्रों को और कम करने के लिए मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दिल की गहराइयों आभार व्यक्त करता हूं। ये बातें शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कही है। उन्होंने कहा कि एक वर्ष से भी कम समय में यह दूसरी बार कमी की गई है। यह इस बात को प्रतिबिंबित करता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शासन मॉडल निर्णयशीलता और उत्तरदायित्व के जुड़वां स्तम्भों पर निर्भर है। मुख्यमंत्री डॉ शर्मा ने कहा कि एक सुरक्षित और समृद्ध पूर्वोत्तर को प्राप्त करने के भव्य लक्ष्य पर अपना अविभाजित ध्यान देने के -शेष पृष्ठ दो पर

ओबीसी समुदाय का अपमान

राहुल अगर माफी मांग लेते तो मामला वहीं खत्म हो जाता : डॉ. शर्मा

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शनिवार को कहा कि राहुल गांधी माफी मांग सकते थे या उस टिप्पणी को वापस ले सकते थे जिसके लिए उन्हें सूरत की एक अदालत ने सजा सुनाई थी। शर्मा ने कहा कि कभी-कभी जुबान फिसल जाती है और हमने भी इसका अनुभव किया है, लेकिन हम यह कहते हुए माफी मांगते हुए बयान जारी करते हैं कि यह अनजाने में हुआ था। राहुल गांधी भी ऐसा कर सकते थे और मामला वहीं खत्म हो जाता। शर्मा ने मानहानि में राहुल गांधी को दोषी ठहराए जाने के सूरत अदालत के फैसले का जिक्र करते हुए दावा किया कि गांधी ने माफी नहीं मांगी और न ही पिछले -शेष पृष्ठ दो पर

मैं सावरकर नहीं, गांधी हूं, माफी नहीं मांगूंगा : राहुल

नई दिल्ली। संसद से अयोग्य ठहराए जाने के एक दिन बाद जुझारू राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर निशाना साधा। गांधी ने आरोप लगाया कि उन्हें -शेष पृष्ठ दो पर

अरुणाचल में भारी भूस्खलन, खाई में गिरे कई वाहन

इटानगर (हि.स.)। अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग में भारी भूस्खलन हुआ है। कुछ कारें मलबे में दबकर सड़क से फिसलकर खाई में गिर गई हैं। इसके चलते यातायात बाधित हो गया है। हालांकि अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पिछले दो दिनों से हो रही लगातार बारिश के कारण चीन की सीमा से लगे अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग जिला में शुक्रवार दोपहर से शनिवार की सुबह तक भारी भूस्खलन हुआ। इंक्योंग-तुतिंग शहर को जोड़ने वाली सर्कुलर रोड पर भूस्खलन हुआ है। मलबे के नीचे कई कारें दबकर खाई में गिर गईं। साथ ही इस घटना में -शेष पृष्ठ दो पर

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के लिए कर रहे लगातार प्रयास : सीएम

गुवाहाटी (हि.स.)। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को घरेलू नल कनेक्टिविटी के माध्यम से लगातार स्वच्छ पेयजल मिलता रहे। ऐसे में सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में नल से स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने शनिवार को *जल जीवन मिशन* के कार्यान्वयन के संबंध में ठेकेदारों और तीसरे पक्ष की निगरानी एजेंसियों आदि के प्रतिनिधियों के साथ गुवाहाटी के मछखोवा स्थित प्रागज्योति आईटीए में समीक्षा बैठक में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने कहा -शेष पृष्ठ दो पर

पूर्वांचल केशरी
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

राहुल के समर्थन में आज देशभर में सत्याग्रह करेगी कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस राहुल गांधी के समर्थन में रविवार को महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने एक दिन का सत्याग्रह आयोजित करेगी। कांग्रेस के पार्टी नेता लोकसभा में राहुल गांधी की सदस्यता रद्द किए जाने के खिलाफ पूरे देश में जिला मुख्यालयों के बाहर प्रदर्शन करेंगे। यह सत्याग्रह सुबह 10 बजे शुरू होगा और शाम पांच बजे तक चलेगा। इसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा राजधानी दिल्ली में राजघाट पर सत्याग्रह करेंगे। कांग्रेस को लगता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कारोबारी गौतम अडानी के बीच संबंधों पर -शेष पृष्ठ दो पर

चिक्कबल्लापुर में श्री मधुसूदन साई आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन

वोट बैंक की राजनीति के लिए, कुछ दलों ने भाषाओं का *खेल* खेला : पीएम

चिक्कबल्लापुर/नई दिल्ली (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चिकित्सा शिक्षा में भाषा की चुनौती का जिक्र करते हुए कहा कि राजनीतिक स्वार्थ और वोट-बैंक की राजनीति के लिए कुछ दलों ने भाषाओं के साथ खेल खेला। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने कन्नड़ सहित सभी भारतीय भाषाओं में मेडिकल की पढ़ाई का विकल्प दिया है। भाजपा सरकार 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सभी की भागीदारी पर जोर दे रही है। उन्होंने कहा कि *सबका प्रयास* से भारत विकसित राष्ट्र बनने की राह पर है। प्रधानमंत्री ने आज कर्नाटक के चिक्कबल्लापुर में श्री मधुसूदन साई आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान (एसएमएसआईएमएसआर) का उद्घाटन किया। संस्थान सभी को पूरी तरह से नि:शुल्क चिकित्सा शिक्षा और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा देखभाल की सुविधा प्रदान करेगा। यह शैक्षणिक वर्ष 2023 से अपना कामकाज शुरू कर देगा। प्रधानमंत्री ने चिकित्सा शिक्षा में भाषा की चुनौती का जिक्र किया और अफसोस -शेष पृष्ठ दो पर

कैलाश काबरा बने पूप्रमास के नए प्रांतीय अध्यक्ष

गुवाहाटी (विभास)। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सोलहवें प्रांतीय अधिवेशन में प्रांतीय सभा के दौरान चुनाव सत्र में चुनाव अधिकारी मधुसूदन सिकरिया ने चुनाव परिणामों की घोषणा करते हुए कहा कि कैलाश काबरा को निर्विरोध आगामी सत्र के लिए प्रांतीय अध्यक्ष घोषित किया। उनके अध्यक्ष के नाम की घोषणा होते ही सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा एवं पूर्वोत्तर के सभी शाखाओं के प्रतिनिधियों ने उन्हें फुलाम गमछा पहना कर अभिनंदन करना शुरू कर दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. एसएस हरलालका, प्रांतीय अध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल ने उनको शुभकामना संबोधन प्रेषित किया।

door graph
Premium Quality Hinges
S.S.
Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path,
Near Dona Planet
ABC, G.S. Road,
Guwahati - 05
97079-99344

भाजपा काल में नक्सल प्रभावित इलाकों में बढ़ा रहा विकास : केंद्रीय गृहमंत्री

जगदलपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश के सुरक्षाबलों ने वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ पिछले नौ सालों में एक मजबूत लड़ाई लड़ी है। इसमें सफलता भी मिली हैं। उन्होंने कहा कि साल 2010 के उच्चतम स्तर के मुकाबले नक्सली हिंसा में 76 फीसदी की कमी आई है। वहीं जान गंवाने वालों में करीब 78 फीसदी की कमी आई है। उन्होंने कहा कि दशकों तक वामपंथी उग्रवाद के गढ़ रहे बिहार और झारखंड के बूढ़ा पहाड़, चक्रबंधा और पारसनाथ के क्षेत्रों को उग्रवाद से मुक्त किया गया है। केंदीय गृहमंत्री शनिवार को सीआरपीएफ के स्थापना दिवस समारोह में पहुंचे थे। छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में हुए कार्यक्रम में शाह ने कहा कि सीआरपीएफ ने अलग-अलग राज्यों की पुलिस के साथ मिलकर ज्वाइंट टास्क फोर्स बनाई। इससे वामपंथी उग्रवादियों को अंतरराज्यीय सीमाओं का लाभ उठाने से रोका जा सके। कहा कि जो -शेष पृष्ठ दो पर

एक बार फिर पीएम की सुरक्षा में चूक

बेंगलुरु। कर्नाटक में रोड शो के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में बड़ी चूक हुई है। बता दें कि पीएम मोदी कर्नाटक के दावणगेरे में रोड शो कर रहे थे, जिस दौरान एक अनजान शख्स उनके काफिले के करीब पहुंचने की कोशिश कर रहा था। अनजान शख्स ने पीएम मोदी के पास जाने की कोशिश की। हालांकि, सुरक्षा बलों ने उन्हें काफिले से दूर कर दिया। बाद में उन्हें पुलिस ने हिरासत में लिया गया। इससे पहले, पीएम मोदी -शेष पृष्ठ दो पर

बुजुर्ग दंपति की हत्या के आरोपी को सजा-ए-मौत

तिरुवनंतपुरम। केरल में कोट्टयम की एक स्थानीय अदालत ने 2013 में की गई बुजुर्ग दंपति की हत्या में दोषी पाए जाने पर 39 साल के एक व्यक्ति को मौत की सजा सुनाई है। कोट्टयम की स्थानीय अदालत के न्यायाधीश जे नासिर ने कोट्टायम में मणिमाला के पास पझायिडोम के मूल निवासी अरुण ससी को फांसी की सजा सुनाई है। वहीं, उस पर दो लाख रूपए का जुर्माना भी लगाया गया है। साल 2013 में अरुण ससी ने अपने रिश्तेदार थंकम्मा (68) और उसके पति भास्करन नायर (71) की लूट के इरादे से हत्या कर दी थी। इस मामले में अदालत ने मौत की सजा सुनाते हुए कहा कि दोषी को बुजुर्ग दंपति की रक्षा करनी थी क्योंकि उनकी बेटियां विदेश में थीं। लेकिन उसने एक नृशंस हत्या की जिसे -शेष पृष्ठ दो पर

सुप्रभात

जीवन न तो भविष्य में है, और न ही भूतकाल में है, जीवन तो सिर्फ वर्तमान में ही है।

– अज्ञात

न्यूज गैलरी

संरा तक पहुंची राहुल को सुनाई गई सजा की गूंज

संरा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को सुनाई गई दो साल की जेल की सजा की गूंज संयुक्त राष्ट्र तक जा पहुंची है। संयुक्त राष्ट्र इस संबंधी खबरों से और इस बात से अगवत है कि राहुल गांधी की पार्टी इस निर्णय को चुनौती देने की योजना बना रही है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंतोनिया गुतारेस के उप-प्रवक्ता ने यह बात कही। उप-प्रवक्ता फरहान हक से संवाददाता सम्मेलन में पूछा गया था कि क्या गुतारेस भारत में लोकतंत्र -शेष पृष्ठ दो पर

फिर मंडरा रहा कोरोना का खतरा

10-11 अप्रैल को होगा राष्ट्रव्यापी मॉक ड्रिल

नई दिल्ली। देश में एक बार फिर कोविड-19 और मौसमी इन्फ्लुएंजा के मामले बढ़ने लगे हैं। इस बीच सरकार अस्पतालों की तैयारियों का जायजा लेने के लिए 10 और 11 अप्रैल को राष्ट्रव्यापी मॉक ड्रिल की योजना बना रही है। इसे लेकर केंद्र सरकार ने एडवाइजरी जारी की है। इसमें कहा गया है कि सभी जिलों के सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की स्वास्थ्य इकाइयां इस मॉकड्रिल में भाग लेंगे। एडवाइजरी में यह भी कहा गया है कि 27 मार्च को होने वाली वर्चुअल मीटिंग में मॉक ड्रिल के सटीक विवरण के बारे में राज्यों को जानकारी दी जाएगी। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण और आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ राजीव बहल द्वारा जारी की गई एडवाइजरी में यह भी कहा गया है कि फरवरी के मध्य से देश में कोविड-19 मामलों में क्रमिक लेकिन निरंतर वृद्धि देखी जा रही है। इस समय, देश में अधिकांश कोरोना मामले केरल (26.4 प्रतिशत), महाराष्ट्र (21.7 प्रतिशत), गुजरात (13.9 प्रतिशत), कर्नाटक (8.6 प्रतिशत) और तमिलनाडु (6.3 प्रतिशत) जैसे कुछ राज्यों द्वारा रिपोर्ट किए जा रहे हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) द्वारा -शेष पृष्ठ दो पर

चीन में रोजा रखने से रोकने के लिए किए जा रहे सख्त प्रयास

पोर्क खाने का दे रहें हैं दबाव

बीजिंग। दुनिया भर के मुसलमान रमजान के पवित्र महीने की शुरुआत के साथ ही रोजा रखने लगे हैं। चीन के मुसलमानों को रोजा रखने पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है और उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं पर लगातार हमले हो रहे हैं। स्थानीय अधिकारियों और समूहों का कहना है कि शिनजियांग के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में उइगरों को आदेश दिया जा रहा है कि वे अपने बच्चों को रोजा न रखने दें, अधिकारियों द्वारा बच्चों से पूछा गया कि उनके माता-पिता रोजा रख रहे हैं या नहीं। विश्व उईघुर कांग्रेस के प्रवक्ता दिलशात ऋषित ने कहा कि रमजान के दौरान अधिकारियों को 1,811 गांवों (शिनजियांग) में चौबीसों घंटे निगरानी प्रणाली को लागू करने की आवश्यकता होती है, जिसमें उइघुर परिवारों के घर का निरीक्षण भी शामिल है। अधिकार समूहों ने एक नई रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि चीन के 11.4 मिलियन हूई मुस्लिम जातीय चीनी के घनिष्ठ समुदाय जिन्होंने सदियों से अपने मुस्लिम विश्वास -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

कानूनी पेशे में महिलाओं के समान अवसर पैदा करने होंगे : सीजेआई

मदुरै। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने एक बार फिर कानूनी पेशे में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने की वकालत की है। शनिवार को मदुरै में एक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कानूनी पेशे में महिलाओं और पुरुषों के अनुपात को *निराशाजनक* बताया। इस दौरान महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि देश में प्रतिभाशाली महिला वकीलों की कोई कमी नहीं है। वह यहां जिला अदालत परिसर में अतिरिक्त न्यायालय भवनों के शिलान्यास समारोह और जिला एवं सत्र न्यायालय और मयिलादुत्रयी में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि युवा महिला अधिवक्ताओं की भर्ती के बारे में चैंबर्स को संदेह है। इसका कारण युवा प्रतिभाशाली महिलाओं की कमी नहीं है। बल्कि यह हमारी रूढ़िवादिता का परिणाम है जो हम महिलाओं के प्रति रखते हैं। उन्होंने कहा कि सबसे पहले भर्ती कक्षों का मानना है कि महिलाएं पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण काम पर लंबे समय तक काम करने में असमर्थ होंगी। हम सभी को सबसे पहले यह समझना चाहिए कि बच्चे पैदा करना और बच्चों की देखभाल करना एक विकल्प है और महिलाओं को यह जिम्मेदारी उठाने के लिए दंडित नहीं किया जाना चाहिए। कानूनी पेशे में महिला-से-पुरुष अनुपात का हवाला देते हुए न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि आंकड़े बताते हैं कि कानूनी पेशे में आने के लिए तमिलनाडु में 50,000 पुरुष नामांकन के अनुपात में केवल 5,000 महिला नामांकन हैं। उन्होंने कहा कि कानूनी पेशा महिलाओं के लिए समान अवसर प्रदाता नहीं है। ये आंकड़े केवल तमिलनाडु में नहीं हैं, बल्कि ऐसे आंकड़े पूरे देश में समान हैं। इस दौरान उन्होंने बदलती स्थिति पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि हालांकि ये माहौल बदल रहा है। जिला न्यायपालिका में हाल ही में हुई भर्ती में 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं। लेकिन हमें महिलाओं के लिए समान अवसर पैदा करने होंगे। इस कार्यक्रम में केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन सहित अन्य लोगों ने भाग लिया।

इकराबाड़ी में विस्फोट की केएलओ (केएन) ने ली जिम्मेदारी

उदालगुड़ी (हि.स.)। उग्रवादी समूह कामतापुर लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन (केएलओ-केएन) ने उदालगुड़ी जिला में रौता चाराली के पास इकराबाड़ी में हुए विस्फोट की जिम्मेदारी ली है। संगठन ने एक बयान में कहा कि मांगे गए पैसे का भुगतान नहीं करने के कारण विस्फोट किया गया है। संगठन ने कहा कि यह घटना अप्रत्याशित है। केएलओ (केएन) के प्रचार सचिव डीएल कोच द्वारा हस्ताक्षरित एक बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है। खबरों के मुताबिक, रौता के इकराबाड़ी में गुरुवार की देर रात करीब 12 बजे बम धमाका हुआ था। इकराबाड़ी में तन दास नामक व्यक्ति के आवास पर बम फेंका था। विस्फोट से परिवार की जान तो बच गई, लेकिन घर की खिड़की के शीशे टूट गए और घर की दीवारें क्षतिग्रस्त हो गईं। विस्फोट के बाद पूरे इकराबाड़ी इलाके में अफरा-तफरी मच गई थी। उल्लेखनीय है कि गत 20 फरवरी को उग्रवादी संगठन केएलओ (केएन) ने तन दास से 25 लाख रुपए की मांग की थी। परिवार के सदस्यों ने संदेह व्यक्त किया है कि मांगे गए पैसे का भुगतान नहीं करने पर आवास पर हस्त निर्मित बम फेंका गया। परिवार ने मीडिया को बताया है कि विस्फोट से काफी पहले उग्रवादी समूह ने पुलिस को पैसे मांगे जाने की सूचना दी थी। पुलिस ने अभी तक घटना के संबंध में कोई जानकारी जारी नहीं की है, लेकिन जांच जारी है।

बच्ची की शिक्षा के लिए आगे आया लायंस उमंग

गुवाहाटी। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की बच्ची की शिक्षा के लिए लायंस क्लब ऑफ गुवाहाटी उमंग आगे आया है। क्लब की जनसंपर्क अधिकारी आरुषी सोनी गर्ग ने बताया कि अध्यक्ष सीमा सोनी ने एक बच्ची की शिक्षा के लिए आर्थिक अनुदान दिया। इस मौके पर सोनी ने कहा कि चैत्र नवरात्रि के मौके पर सभी देवी की अराधना करते हैं। ऐसे में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की बालिका को इस नवरात्रि शिक्षा में सहयोग किया गया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भी क्लब की ओर से जरूरतमंदों की शिक्षा में सहयोग किया जाएगा।

लंका के सार्वजनिक नामघर में चोरी

होजाई (हि.स.)। होजाई जिला के लंका स्थित सार्वजनिक नामघर (पूजा स्थल) में चोरी की घटना घटी है। इसको लेकर शनिवार की सुबह स्थानीय लोगों में भारी नाराजगी देखी गई। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बीती रात को चोर नामघर के प्रवेश द्वार और मणिकूट के ताले तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। आज सुबह नामघरिया (पुजारी) के आने के बाद चोरी की घटना का पता चला। लंका शहर के पुराने नामघर से चोरों ने कांसा और पीतल के कई बहुमूल्य सामानों के साथ-साथ दौल-गोविंद की मूर्ति भी चुराकर फरार हो गए। लंका पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल में जुट गई है। इस संबंध में नामघर प्रबंधन की ओर से एक प्राथमिकी दर्ज करायी गई है। पुलिस चोरी की तलाश में जुटी है।

नाउजान में सड़क किनारे लगे पेड़ों की कटाई की कोशिश

गोलाघाट (हि.स.)। गोलाघाट जिला के धनसिरी अनुमंडल के नाउजान में दिनदहाड़े वनों को नष्ट करने का कार्यक्रम चल रहा है। कुछ शरारती तत्व सड़क किनारे लगे कीमती पेड़ों को काट रहे हैं। शनिवार सुबह नाउजन में स्थानीय लोगों ने एक समूह को सड़क किनारे कीमती पेड़ों को काटते देखा तो इसका विरोध किया, जिसके चलते शरारती तत्व मौके से फरार हो गए। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया है कि शरारती तत्व नाउजन वन अधिकारी के कार्यालय से कुछ ही दूरी पर पेड़ों को काटने के कार्य में जुटे हए हैं, लेकिन वन विभाग इस पर नकेल कसने में विफल हो रहा है। लोगों का कहना है कि इससे पहले भी नाउजान में सड़क किनारे से पेड़ों को काटकर बेचने का मामला सामने आया है।आज बदमाशों के गिरोह ने फिर से एक बार अवैध रूप से सड़क किनारे लगे पेड़ों को काटने की कोशिश की।

जनता व कार्यकर्ता की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी : मनोहर लाल

हिसार (हिंस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा है कि अधिकारी जनता के कार्यों को प्राथमिकता दें व जनता के काम लेकर आने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं की बात सुनें। उन्होंने स्पष्ट लहजे में कहा कि जनता व कार्यकर्ताओं की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वे शनिवार को हिसार के गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में आयोजित शक्ति केंद्र संगम से कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक भी ली। उन्होंने कहा कि आम जनता की सुनवाई के लिए जिले के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को हिदायत दी गई है कि वे हर रोज सुबह 11 बजे से एक बजे तक अपने कार्यालयों में उपस्थित रहें और नागरिकों से संवाद कर उनकी समस्याओं व शिकायतों का निदान करें। जनता की सुनवाई न करने वाले अधिकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार ने अंत्योदय दर्शन पर चलते हुए हर जरूरतमंद परिवार के उत्थान के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को धरातल पर उतारा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे हर पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना सुनिश्चित करें। कार्यकर्ता केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर घर-घर तक जाएं और लोगों को उनका लाभ लेने के लिए जागरूक व प्रेरित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार सबका साथ-सबका विकास-सबका प्रयास और सबका विश्वास के मूलमंत्र पर चलते हुए गरीब से गरीब व्यक्ति, किसानों और पिछड़े वर्ग की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने सहित हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हमारे पास हर नागरिक की जानकारी है जिसके आधार पर भविष्य में भी जनकल्याण की योजनाएं बनाते रहेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार समाज हित में निरंतर काम कर रही है। सरकार का ध्येय पारदर्शिता के साथ नागरिकों के लिए बनाई गई हर योजना का लाभ धरातल तक पहुंचाना है। ईज ऑफ लिविंग की दिशा में बढ़ते हुए नागरिकों के जीवनस्तर में सुखद बदलाव लाना है।

पुलिस ने 24 लाख की बर्मीज सुपारी जब्त की

हैलाकांदी (हि.स.)। बर्मीज (म्यांमार) सुपारी के खिलाफ हैलाकांदी पुलिस का अभियान जारी है। इसी कड़ी में बर्माज सुपारी की 120 बोरियां पुलिस ने जब्त की हैं। पुलिस सूत्रों ने शनिवार को बताया है कि हैलाकांदी जिला के विभिन्न हिस्सों में छापेमारी कर बर्मीज सुपारी जब्त की गई है। जानकारी के अनुसार अब्दुल्लापुर पुलिस चौकी प्रभारी बिप्लब नाथ की देखरेख में एक गुप्त सूचना के आधार पर लाला नतुन बाजार के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक ट्रक (एएस-24एसी-3817) को रोककर तलाशी ली तो उसमें से 60 बोरी बर्मीज सुपारी बरामद की गई। इस तरह लाला पुलिस ने लाला पुलिस चौकी अंतर्गत रूपछोड़ा कटखल नदी के किनारे से 30 बोरी बर्मीज सुपारी जब्त की है।

हेरोइन के साथ तस्कर गिरफ्तार

दक्षिण सालमारा (हि.स.)। पुलिस ने दक्षिण सलमारा-मानकचार जिला के दक्षिण सलमारा में मादक पदार्थ हेरोइन के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। तस्कर की पहचान मनीरचर के वैदेर गांव निवासी अनवर हुसैन के रूप में हुई है। सूत्रों ने शनिवार को बताया कि गिरफ्तार तस्कर अनवर हुसैन वेदेर के घर से 12 ग्राम हेरोइन और 200 याबा गोलियां जब्त की हैं। पुलिस ने बीती रात को अनवर हुसैन के घर पर छापा मारकर यह सब जब्त किया।अनवर हुसैन की पत्नी परमिना खातून को पुलिस ने हिरासत में लिया था, लेकिन वह पुलिस को चकमा देकर भाग गई। सूत्रों ने बताया है कि लंबे समय से दोनों पति-पत्नी पर नशे का कारोबार चलाकर इलाके के माहौल को खराब करने का आरोप लगता रहा है। पुलिस एनडीपीएस एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कर आरोपित से पूछताछ कर रही है।

अहंकार राहुल की परेशानी का सबब बना : दिलीप सैकिया

दरंग (हि.स.)। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद दिलीप सैकिया ने कहा कि गांधी परिवार का कोई क्या कर सकता है, इस तरह के अंहकार ग्रस्त होने के कारण ही आज राहुल गांधी का सांसद पद परेशानी का सबब बन गया है। उन्होंने कहा कि राहुल अक्सर इस तरह की अपमानजनक टिप्पणी करते रहते हैं लेकिन राहुल गांधी की इस तरह की टिप्पणियों ने अन्य पिछड़ी जाति समुदायों के लोगों को विशेष रूप से आहत कर दिया है। दिलीप सैकिया ने शनिवार को दरंग जिला मुख्यालय शहर मंगलदोई स्थित जिला पुस्तकालय में विशेष रूप से सक्षम 1841 लोगों को सामाजिक न्याय एवं सबलीकरण विभाग के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की राहत सामग्री वितरण समारोह में हिस्सा लिया। यहां उन्होंने कहा कि न्यायालय द्वारा दिए गए न्याय का भारतीय जनता पार्टी या राजनीति से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के समय में लगभग हर चुनाव में हार के बाद कांग्रेस का एक धड़ा राहुल के करियर को समाप्त करने की कोशिश करने में जुटा हुआ है।

सियालतारी में बीएसएफ का नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

दक्षिण सालमारा (हि.स.)। दक्षिण सालमारा-मानकचार जिला में भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती सियालतारी में शनिवार से सीमावर्ती लोगों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। बीएसएफ की 45वीं बटालियन के कमांडर चंद्रकांत उपाध्याय ने शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में बीएसएफ के चिकित्सक डॉ. शमीउल जस्टिन, मानकचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक डॉ. तौफीक अहमद और डॉ. शहनाज सुल्ताना द्वारा शिविर में आए सभी सीमावर्ती गांवों के मरीजों की जांच और चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई है। चिकित्सा शिविर में बच्चों, बुजुर्ग, पुरुषों और महिलाओं को जांच के साथ-साथ नि:शुल्क दवाएं वितरित की गईं।

पृष्ठ एक का शेष

हम पूर्वोत्तर में ...

लिए मैं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का विशेष रूप से आभारी हूं। अपनी दृढ़ता में उन्होंने निर्णय लेने को समाधान केंद्रित दृष्टिकोण के साथ तैयार किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा पिछले 9 वर्षों में अष्टलक्ष्मी राज्यों के ऐतिहासिक विरासत मुद्दों की निरंतर प्राथमिकता अब समृद्ध लाभांश दे रहा है। एक जीवंत अर्थव्यवस्था, मजबूत सुरक्षा नीति और गहरी सामाजिक सद्भाव के परिणामस्वरूप हमारे क्षेत्र के लोगों से एक के बाद एक दो जनादेश प्राप्त हुए हैं। सबसे बढ़कर प्रधानमंत्री ने वास्तव में हमारे लोगों का दिल जीत लिया है और शारीरिक और मानसिक दूरी दोनों को कम कर दिया है जो कभी पूर्वोत्तर और शेष भारत के बीच मौजूद थी। हम एक बार फिर से इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

राहुल अगर माफी ...

पांच वर्षों में टिप्पणियों को वापस लिया और यह सब ओबीसी समुदाय का अपमान करने के लिए किया गया था। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी का नाम लिए बगैर कहा कि देश एक संवैधानिक लोकतंत्र में नई गिरावट देख रहा है। टीएमसी सुप्रीमो ने एक ट्वीट में कहा कि पीएम मोदी के न्यू इंडिया में, विपक्षी नेता भाजपा के मुख्य लक्ष्य बन गए हैं! जबकि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले भाजपा नेताओं को मंत्रिमंडल में शामिल किया जाता है, विपक्षी नेताओं को उनके भाषणों के लिए अयोग्य घोषित किया जाता है। इसी तरह, झारखंड के मुख्यमंत्री हिमंत सोरेन ने भी शुक्रवार को देश के लिए अयोग्यता को *आपत काल* (आपातकाल) करार देते हुए केंद्र की भाजपा नीत सरकार पर हमला बोला। सोरेन ने एक ट्वीट में कहा कि आज के *अमृत काल* में भाजपा और केंद्र द्वारा विपक्षी नेताओं को सत्ता के हर हथकंडे का इस्तेमाल कर चुप कराया जा रहा है। असम के मुख्यमंत्री ने शनिवार को कहा कि ऐसा नहीं है कि उन्हें किसी भाजपा सदस्य या प्रधानमंत्री नरेंद्र से माफी मांगनी पड़ी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और अपना अहंकार दिखाया। यह एक न्यायिक प्रक्रिया है...एक चक्र है और इसमें कुछ भी राजनीतिक नहीं है। पांच साल की लंबी न्यायिक प्रक्रिया के बाद यह फैसला लिया गया है। मुख्यमंत्री ने फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि कर्म (भाग्य) ने आखिरकार उसे पकड़ लिया है। हालांकि उन्होंने संकेत दिया कि न्यायिक सहारा खुला है, और गांधी उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय में फैसले को चुनौती दे सकते हैं।

मैं सावरकर नहीं...

अयोग्य ठहराया गया क्योंकि प्रधानमंत्री संसद में *अपने अगले भाषण से डरे हुए हैं*। उन्होंने वीर सावरकर के संदर्भ का भी इस्तेमाल किया, जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने लंदन में अपनी टिप्पणी और मानहानि के मुकदमे के दौरान माफी क्यों नहीं मांगी, जिसमें उन्हें दोषी ठहराया गया था। कांग्रेस नेता ने कहा कि मुझे अयोग्य ठहराया गया है क्योंकि प्रधानमंत्री मेरे अगले भाषण से डरे हुए हैं। मैंने उनकी आंखों में डर देखा है। इसलिए वे नहीं चाहते कि मैं संसद में बोलूं। माफी मांगने के भाजपा के आह्वान पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि मेरा नाम सावरकर नहीं है। मैं गांधी हूं। मैं माफी नहीं मांगूंगा। उन्होंने भाजपा के आरोपों का भी खंडन किया कि उन्होंने देश के घरेलू मामलों में अंतर्राष्ट्रीय ताकतों के हस्तक्षेप की मांग की थी। उन्होंने कहा कि उन्होंने अध्यक्ष से कहा था कि वह लंदन में उनकी टिप्पणी को लेकर लगे आरोपों पर सदन में जवाब दें। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं ने दावा किया कि मैं भारत विरोधी ताकतों की मदद कर रहा हूं। मैंने स्पीकर से कहा कि इन आरोपों का जवाब देना मेरा अधिकार है। लेकिन उन्होंने मुझे अनुमति नहीं दी। मेरे पास केवल एक कदम है और वह है सच्चाई के लिए लड़ना और इस देश की लोकतांत्रिक प्रकृति की रक्षा करना। मुझे जीवन भर के लिए अयोग्य ठहराओ, मुझे जीवन भर के लिए जेल में डाल दो, मैं चलता रहूंगा। क्या मैं दिखने में चिंतित हूं? मैं उत्साहित हूं, एक अविचलित गांधी ने कहा। राहुल गांधी को गुरुवार को गुजरात के सूरत की एक अदालत ने एक आपराधिक मानहानि मामले में दोषी ठहराया और दो साल की जेल की सजा सुनाई। नतीजतन, उन्हें अगले दिन एक सांसद के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया गया, जिससे विपक्षी खेमे से तीखी प्रतिक्रिया हुई।

अरुणाचल में भारी...

कई वाहन घंटों तक फंसे रहे। यात्रियों ने अपने वाहनों को बोमडो-जानबोर के बीच सड़क किनारे खड़ा कर दिया है। कई वाहन मलबे में दबने के साथ पलट गए और बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। भारी बारिश और भूस्खलन के मद्देनजर ऊपरी सियांग जिला प्रशासन ने अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने वाले यात्रियों और निवासियों के लिए सुरक्षा अलर्ट जारी किया है। जिला प्रशासन ने स्थानीय लोगों से भारी बारिश के दौरान कहीं भी यात्रा न करने की सलाह दी है। इसके अलावा दोपहिया वाहन चालकों से हेलमेट पहनने और कार सवारों को सीट बेल्ट लगाने को कहा है। इसके अलावा, प्रशासन ने लोगों से भूस्खलन संभावित क्षेत्रों के पास वाहनों को पार्क न करने का भी आग्रह किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में ...

कि हमारी सरकार प्रधानमंत्री मोदी के लक्ष्य को साकार करने के लिए मजबूत कदम उठाकर आज तक इस संबंध में बहुत सफलता प्राप्त करने में सक्षम रही है। मार्च 2024 से पहले, हम सभी से इस मिशन के उद्देश्यों को पूरा करने में सहयोग सुनिश्चित करने का आह्वान करते हैं। इस अवसर पर मंत्री जयंत मल्लबरूवा, अतिरिक्त मुख्य सचिव एस अब्बासी, मिशन निदेशक जल जीवन मिशन कैलाश कार्तिक एन के साथ ही राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

राहुल के समर्थन में ...

लगातार सवाल उठाने को लेकर राहुल गांधी को लोकसभा से बाहर किया गया है जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है। कांग्रेस ने कहा है कि राहुल गांधी अकेले नहीं हैं और सच्चाई और न्याय की इस लड़ाई में लाखों कांग्रेसी और लोग चाहे वे किसी भी राजनीतिक जुड़ाव से हों उनका साथ देंगे। इसके लिए सभी प्रदेश कांग्रेस कमेटियों को रविवार को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक सभी राज्य और जिला मुख्यालयों में गांधी प्रतिमाओं के सामने एक दिवसीय सत्याग्रह आयोजित करने को कहा गया है।

वोट बैंक की राजनीति...

जताया कि पूर्व में चिकित्सा शिक्षा में स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए अपर्याप्त प्रयास किए गए। उन्होंने कहा कि इसके कारण गांव और पिछड़े समाज से आने वाले युवाओं के लिए डॉक्टर बनना बहुत कठिन था। प्रधानमंत्री ने कहा कि अपने राजनीतिक स्वार्थ और वोट-बैंक की राजनीति के लिए कुछ दलों ने भाषाओं के साथ खेल खेला। लेकिन सही मायने में भाषा को बल देने के लिए जितना होना चाहिए था उतना नहीं हुआ। कन्नड़ एक समृद्ध भाषा है। कन्नड में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हो इसके लिए पहले की सरकारों ने कोई कदम नहीं उठाए। उन्होंने कहा कि ये राजनीतिक दल नहीं चाहते थे कि गांव, गरीब, दलित पिछड़े परिवारों के बेटे-बेटी भी डॉक्टर-इंजीनियर बन सकें। प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीबों के हितों में कार करने वाली हमारी सरकार ने कन्नड़ सहित सभी भारतीय भाषाओं में मेडिकल की पढ़ाई का विकल्प दिया है। प्रधानमंत्री ने अमृत काल में विकसित देश बनने के देश के संकल्प और इतने कम समय में इतने बड़े संकल्प को पूरा करने की लोगों की जिज्ञासा का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आजादी के *अमृत महोत्सव* में देश ने विकसित होने का संकल्प लिया है। कई बार लोग पूछते हैं कि भारत कैसे विकसित बनेगा? इतनी चुनौतियां हैं, इतना काम है, इतने कम समय में पूरा कैसे होगा? इस सवाल का जवाब है - सबका प्रयास। हर देशवासी के साझा प्रयासों से ये संभव होने वाला है। इसलिए भाजपा सरकार निरंतर सबकी भागीदारी पर बल दे रही है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति में सामाजिक और धार्मिक संगठनों की बड़ी भूमिका है।

भाजपा काल में ...

वामपंथी उग्रवादी जनजातीय क्षेत्रों के विकास में रोड़ा बने हुए थे, उन्हें हटाने का काम भी सीआरपीएफ ने किया है। समस्या वाले सभी क्षेत्रों में सीआरपीएफ ने स्थानीय पुलिस को साथ लेकर उनकी हौसला अफजाई करते हुए एक अभेद्य शक्ति का निर्माण किया और सामंजस्य के साथ अपने संगठन कौशल का भी परिचय दिया। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में हिंसा में बहुत तेजी से कमी आई है। अब इन इलाकों में आखिरी व्यक्ति तक विकास पहुंच रहा है। बिहार और झारखंड में सुरक्षा का वैक्यूम समाप्ति की ओर है। यह सीआरपीएफ के वीर जवानों और पुलिस बलों के संयुक्त पराक्रम के कारण ही हो पाया है। उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवादियों के फंडिंग स्रोत को रोकने के लिए एनआईए और ईडी की ओर से भी अनेक प्रकार के केस दर्ज कर हम कठोर कार्यवाही कर रहे हैं। मोदी सरकार द्वारा किए जा रहे विकास कार्य वामपंथी उग्रवाद-प्रभावित क्षेत्रों में भी पहुंच रहे हैं। गृहमंत्री ने कहा कि नक्सल प्रभावित इलाकों में विकास के लिए स्वीकृत 70,000 किलोमीटर में से 11,000 किलोमीटर सड़क बन चुकी है। 2343 मोबाइल टावर लग चुके हैं, एकलव्य स्कूल को प्रायोरिटी एरिया में खोलने का काम चल रहा है। बैंकों की 1258 ब्रांच केवल पांच साल में खोली गई है, 1348 एटीएम खोले गए हैं।

एक बार फिर ...

ने व्हाइटफील्ड (कादुगोड़ी) से कृष्णराजपुरा तक 13.71 किलोमीटर लंबी मेट्रो लाइन का उद्घाटन किया। 4,249 करोड़ रुपये की लागत से से बनी इस लाइन पर 12 मेट्रो स्टेशन हैं। उन्होंने नव-उद्घाटित मेट्रो लाइन पर सवारी भी की और अपनी यात्रा के दौरान मेट्रो के कर्मचारियों व श्रमिकों समेत विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के साथ बातचीत की। इससे पहले पीएम मोदी ने श्री मधुसूदन साईं चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान के उद्घाटन के दौरान कहा कि सबके प्रयास से भारत विकसित हो रहा है। सबकी भागीदारी से देश आगे बढ़ रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि चिक्काबल्लापुर की भूमि ने लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य प्रदान करके मानवता की सेवा के मिशन को पोषित किया है। ये उपलब्धियां अद्भुत रही हैं। साथ ही आज यहां जिस मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन किया जा रहा है, वह इस महान मिशन को और मजबूत करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा आजादी के अमृत महोत्सव में देश ने विकसित होने का संकल्प लिया है। कई बार लोग पूछते हैं कि भारत इतने कम समय में वकसित कैसे होगा? इतनी चुनौतियां हैं, इतना काम हैं, ये इतने कम समय में ये कैसे पूरा होगा? इस सवाल का एक ही जवाब है सबका प्रयास। बीते 9 सालों में भारत में भी स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर बहुत ईमानदारी से बहुत कुशलता से कार्य करने का प्रयास किया गया है। देश में मेडिकल एजुकेशन से जुड़े अनेक रिफॉर्म किए गए हैं। पीएम मोदी ने आगे कहा कि चिक्काबल्लापुर आधुनिक भारत के आर्किटेक्ट में से एक सर एम.विश्वेश्वरय्या की जन्मभूमि है। अभी मुझे सर विश्वेश्वरय्या की समाधि पर पुष्पांजलि का सौभाग्य मिला। इस पुण्य भूमि को मैं सिर झुका प्रणाम करता हूं।

बुजुर्ग दंपति की...

उचित नहीं ठहराया जा सकता है। स्थानीय अदालत ने दोषी पर 2 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है।साथ ही उसे लूटपाट के लिए घातक हथियार का इस्तेमाल करने और मौत की सजा के अपराध को अंजाम देने के लिए घर में घुसने के लिए क्रमश: सात और पांच साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। दरअसल यह घटना 28 सितंबर 2013 की है। अरुण ससी ने पैसों के लालच के चलते पझायिडोम में एक सेवानिवृत्त पीडब्ल्यूडी अधीक्षक भास्करन और एक सेवानिवृत्त केएसईबी अधिकारी थंकम्मा की सिर पर हथौड़े से वार कर हत्या कर दी थी। बुजुर्ग दंपत्ति की हत्या करने के चलते आरोपी अरुण ससी को आईपीसी की धारा 302 (हत्या), 449 (अतिचार) और 397 (डकैती) के तहत मौत की सजा सुनाई गई है। अदालत ने दोषी के लिए अधिकतम सजा की अभियोजन पक्ष की मांग को स्वीकार कर लिया और उसे जुर्माने के साथ मौत की सजा सुना दी गई। अरुण ससी ने 2013 में अपने ही रिश्तेदारों की हत्या कर दी। वह दंपति का विश्वासपात्र था। हत्या के इरादे से उसने दंपत्ति पर घातक हथियार से हमला किया था। जब थंकम्मा कपड़े लेने के लिए ऊपर गई, तो अरुण ने भास्करन के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया और तकिये से उसका गला दबा दिया। भास्करन के शरीर पर 13 चोटें थीं, जिनमें से 11 सिर पर थीं। वहीं अरुण ने दंपति की हत्या के 21 दिन बाद एक बार और घर में डकैती का प्रयास किया, जिसने साबित कर दिया कि वह किसी भी तरह की नरमी के लायक नहीं है।

10-11 अप्रैल को ...

शनिवार को जारी एक संयुक्त एडवाइजरी में कहा गया है कि पिछले कई हफ्तों में कुछ राज्यों में कोविड-19 की टेस्टिंग में गिरावट आई है। साथ ही यह भी पाया गया है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा निर्धारित मानकों की तुलना में वर्तमान में परीक्षण स्तर अपर्याप्त हैं। इसको देखते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और आईसीएमआर ने सभी राज्यों को कोरोना जांच में बढ़ावा देने और लक्षणों की जानकारी देने के लिए भी कहा है। इसके अलावा कोरोना के बढ़ते मामलों से निपटने की तैयारियों का जायजा लेने के लिए मॉकड्रिल में सभी राज्यों को शामिल होने के लिए भी कहा गया है। अप्रैल की 10 और 11 तारीख को होने वाली मॉकड्रिल में आईसीयू बेड, मेडिकल इक्विपमेंट्स, ऑक्सीजन और मैनपावर की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। इसमें केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के परामर्श के मुताबिक लोगों को कोविड के लिए तय सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करने की सलाह दी गई है। इसके साथ ही लोगों से भीड़भाड़ और बंद स्थानों में मास्क पहनने की सलाह दी है।

चीन में रोजा रखने ...

को बनाए रखा है । उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के कठोर धार्मिक नियमों के तहत पूरी तरह से मिटा दिए जाने का खतरा है। चीनी मानवाधिकार रक्षकों के नेटवर्क सहित अधिकार समूहों के एक गठबंधन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बीजिंग द्वारा उन्हें *जबरन आत्मसात करने के माध्यम से हल किए जाने वाले खतरे* के रूप में पहचाना गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा धार्मिक पूजा पर नए सिरे से हमले शुरू करने से पहले प्राप्त सापेक्ष स्वतंत्रता के विपरीत है। जिससे ईसाइयों, मुस्लिमों और बौद्धों को समान रूप से अपने पापीकरण के तहत पार्टी नियंत्रण और अपने धार्मिक जीवन की सेंसरशिप के अधीन होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

संरा तक पहुंची ...

को लेकर चिंतित हैं? हक ने कहा कि मैं कह सकता हूं कि हमें राहुल गांधी के मामले से जुड़ी खबरों की जानकारी है। हमें पता है कि उनकी पार्टी फैसले के खिलाफ अपील करने की योजना बना रही है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को उनकी *मोदी उपनाम* संबंधी टिप्पणी को लेकर 2019 में दर्ज आपराधिक मानहानि के एक मामले में गुजरात के सूरत शहर की एक अदालत ने दोषी ठहराया तथा दो साल की सजा सुनाई है। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एचएच वर्मा की अदालत ने भारतीय दंड संहिता की धारा-499 और 500 के तहत गांधी को दोषी करार दिया। हालांकि अदालत ने राहुल गांधी को जमानत भी दे दी और उनकी सजा पर 30 दिन के लिए रोक लगा दी, ताकि कांग्रेस नेता उसके फैसले को ऊपरी अदालत में चुनौती दे सकें। राहुल गांधी ने सजा सुनाए जाने के बाद महात्मा गांधी की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि उनके लिए सत्य ही भगवान है। उन्होंने ट्वीट किया कि मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन- महात्मा गांधी।

स्वर्वेद भाष्य

चतुर्थ मंडल **नवम अध्याय**

(संत)

तीन भाव तिन वृत्ति में, सन्त रहें संसार।
शरणागत प्रभु तीन है, सुमिरन भजन विचार॥ 45॥

शब्दार्थ : (सन्त) विहंगम योगाभ्यासी (शरणागत) आश्रित अर्थात सद्गुरु-शरण में आया हुआ।

भाष्य : उपरोक्त तीन वृत्ति, यानि तीन भाव से संत संसार में रहते हैं। वे तीनों प्रभु की शरणागत हो कर सुमिरन, भजन और तत्वज्ञान को प्राप्त करते हैं।

मन वाणी हरि में लगे, श्रवण रहे हरि माहिं।
आतम हरि का वास है, सब अंग देव समाहिं॥ 46॥

भाष्य : मन, वामी एवं श्रवण प्रभु में लगा हुआ है और आत्मा एवं सारे देह-संघात, अंग-प्रत्यंग में परमप्रभु व्यापक हो कर समाया हुआ है। शरीर, इंद्रियों, आत्मा एवं प्रकृति के सर्व स्थानों में ईश्वर एकरस परिपूर्ण व्यापक है।

असम सरकार और फ्लाईबिग में करार

अंतर्राज्यीय उड़ान सेवाएं शुरू करेगी कंपनी

गुवाहाटी (हि.स.)। असम के भीतर हवाई संपर्क को एक नई गति देते हुए असम सरकार ने शनिवार को यहां जनता भवन (असम सचिवालय) में आयोजित एक समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्वशर्मा की उपस्थिति में बिग चार्टर प्राइवेट लिमिटेड (फ्लाईबिग) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। राज्य सरकार की ओर से असम पर्यटन विकास निगम (एटीडीसी) एमडी कुमार पद्म पानी बोरा और फ्लाईबिग के निदेशक संजय नटवरलाल मंडाविया ने गुवाहाटी-डिब्रूगढ़-गुवाहाटी और गुवाहाटी-सिलचर-गुवाहाटी मार्गों के बीच दैनिक आधार पर उड़ानें संचालित करने के समझौते पर हस्ताक्षर किए। एमओयू के तहत भारत सरकार की उड़ान योजना के अनुरूप उड़ान संचालन शुरू किया जाएगा। राज्य सरकार वायबिलिटी गैप फंडिंग के तहत उड़ानों का संचालन करेगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने कहा कि फ्लाईबिग के साथ समझौता ज्ञापन, जिसके तहत दैनिक उड़ान सेवाओं की संख्या बढ़ाई जाएगी, राज्य के भीतर हवाई संपर्क को एक नई ऊंचाई प्रदान करेगा। सेवाएं सुनिश्चित कनेक्टिविटी और सुनिश्चित मूल्य प्रदान करेंगी। समझौते ने मूल्य निर्धारण पर नजर रखने का फैसला किया है। अधिकतम मूल्य 4000 रुपए निर्धारित किया गया है। नई सेवाएं डिब्रूगढ़ के मोहनबाड़ी हवाई अड्डे और सिलचर के कुंभीरग्राम हवाई अड्डे को नई गति प्रदान करेंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार जोरहाट, तेजपुर आदि में समान्य सेवाओं को संचालित करने के लिए व्यवहार्यता का अध्ययन कर रही है। डॉ. शर्मा ने कहा कि यह राज्य सरकार के बजट प्रस्तावों में से एक था। उन्हें इस प्रस्ताव को पूरा करने में खुशी महसूस हुई। उन्होंने गैर-उड़ान मार्गों में हवाई सेवाओं की सुविधा के लिए आगे आने के लिए फ्लाईबिग और एटीडीसी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य सचिव पर्यटन मनिंदर सिंह ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में पर्यटन मंत्री जयंत मल्ल बरुवा, उपाध्यक्ष एटीडीसी दिलीप दास, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव समीर कुमार सिन्हा और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

मुख्यमंत्री का आज रंगिया विकास के लिए कई कार्यक्रम

रंगिया (निसं)। कामरूप (ग्रामीण) जिला के रंगिया में रविवार को मुख्यमंत्री का विकास के लिए एक दिन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री लगभग 400 करोड़ रुपए के विभिन्न विकासपरक कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। असम के भीतर पहले एकीकृत उप-विभागीय मजिस्ट्रेट कार्यालय की आधारशिला भी रखी जाएगी। रंगिया में जिला खेल संघ मैदान में इसके लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं। स्थानीय विधायक और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भवेश कलिता ने शनिवार को तैयारियों का जायजा लिया। मुख्यमंत्री एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे। जनसभा में करीब 20 हजार लोगों के जुटने की उम्मीद जतायी गई है। भवेश कलिता ने कल के दिन को रंगिया के लिए ऐतिहासिक दिन करार दिया है।

गौहाटी हाईकोर्ट ने दी राकेश पॉल को जमानत

गुवाहाटी। नौकरी के बदले नकद घोटाले में मुख्य आरोपी एवं असम लोक सेवा आयोग (एपीएससी) के पूर्व अध्यक्ष राकेश पॉल को गौहाटी उच्च न्यायालय ने जमानत दे दी है। न्यायमूर्ति देवाशीष बारुआ की एकल पीठ ने कृषि विकास अधिकारी पद पर नौकरी देने के लिए घूस लेने के संबंध में यहां भंगागढ़ पुलिस थाने में दर्ज एक मामले में शुक्रवार को पॉल को जमानत दे दी। जमानत इस आधार पर दी गई है कि पॉल पहले ही इस अपराध के लिए अधिकतम सजा की आधी सजा काट चुका है। न्यायमूर्ति बारुआ ने पॉल को कुछ शर्तों के साथ जमानत दी जिसमें पासपोर्ट जमा कराना, पूर्व सूचना दिए बगैर गुवाहाटी छोड़कर न जाना और मामले के सबूतों से छेड़छाड़ न करना शामिल है। अदालत ने उसे हर निर्धारित तारीख पर विशेष न्यायाधीश के समक्ष पेश होने का भी निर्देश दिया। पॉल को आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद शनिवार को रिहा किया जा सकता है। डिब्रूगढ़ पुलिस ने नवंबर 2016 में पॉल को गिरफ्तार किया था और तब से वह न्यायिक हिरासत में है। इस घोटाले के संबंध में पॉल के अलावा असम सिविल और पुलिस सेवा के अधिकारियों समेत 70 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया।

राहुल गांधी की संसद सदस्यता रद्द करने के विरोध में कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

गुवाहाटी (हि.स.)। असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एपीसीसी) ने पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द किए के खिलाफ शनिवार को गुवाहाटी में विरोध रैली निकाली। हालांकि, पुलिस ने असम सचिवालय पहुंचने से पहले विरोध मार्च को रोक दिया और कई कांग्रेस नेताओं को हिरासत में ले लिया। दिसपुर में शुरू हुई विरोध रैली में असम विधानसभा में विपक्ष के नेता देबब्रत सैकिया, कांग्रेस विधायक रकीबुल हुसैन, जाकिर हुसैन सिकंदर, महिला कांग्रेस और पार्टी के सभी सहयोगी संगठनों के बड़ी संख्या में सदस्य मौजूद थे। पार्टी नेताओं ने भाजपा पार्टी के खिलाफ जमकर नारे लगाए।

पूर्वांचल जाट समाज का रक्तदान शिविर आज

गुवाहाटी। महानगर के गढचुक चारााली स्थित जाट भवन में रविवार को पूर्वांचल जाट समाज की ओर से मेगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया जाएगा। संयोजक व समाज के कार्यकारी अध्यक्ष केआर चौधरी ने बताया कि सुबह 9 से दोपहर 2 बजे तक रक्तदान शिविर का आयोजन गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के सहयोग से किया जाएगा। रक्तदान शिविर से संबंधित सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। उन्होंने कहा कि मानवता के इस नेक कार्य में हमारे समाज के युवा बहुत ही उत्साहित है और अपने दोस्तों व परिचितों को भी इसके लिए प्रेरित कर रहे है। इस रक्तदान शिविर में चिकित्सा मानकों के अनुसार कोई भी स्वैच्छिक रक्तदान कर सकता है। श्री चौधरी ने आगे बताया कि जाट समाज अपने सामाजिक सरोकारों के तहत समय समय पर रक्तदान व अन्य चिकित्सकीय शिविरों का आयोजन करता रहता है।

एसएल गोयनका को नंदकिशोर माहेश्वरी साहित्य-संस्कृति समन्वय पुरस्कार

गुवाहाटी। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शंकर लाल गोयनका को पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन नंद किशोर माहेश्वरी साहित्य और संस्कृति के लिए समन्वय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की पहल पर शनिवार को गुवाहाटी के फैंसी बाजार स्थित तेरापंथ भवन में 16वें प्रांतीय सत्र का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। असम के विभिन्न हिस्सों के लोगों के साथ-साथ समाज के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन ने असम के प्रमुख सांस्कृतिक कार्यकर्ता और तीन बार के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शंकर लाल गोयनका को नंद किशोर माहेश्वरी देव का साहित्यिक और सांस्कृतिक समन्वय पुरस्कार प्रदान किया। साहित्य और संस्कृति के लिए समन्वय पुरस्कार प्राप्त करते हुए, उन्होंने कहा कि मैं बहुत प्रफुल्लित महसूस करता हूं और मैं हमेशा पूर्वोत्तर भारत की कला, साहित्य और संस्कृति पर काम करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। यह पुरस्कार कला, साहित्य और संस्कृति में मेरे अपार योगदान के लिए जीवन भर की उपलब्धि रहेगा। इसके अलावा मैंने जो हासिल किया है वह मेरे प्रयास और सहज समर्पण के साथ-साथ मेरी पूरी टीम की कड़ी मेहनत है।

मंत्री अशोक सिंघल ने किया एंकरेज का उद्घाटन

गुवाहाटी। महानगर के पलटन बाजार के आशी अप्सरा बैंक्विट हॉल में बीएनआई एंकर की ओर से एंकरेज नामक दो दिवसीय मेगा बिजनेस प्रदर्शनी का उद्घाटन कैबिनेट मंत्री अशोक सिंघल ने शनिवार को किया इस मौके पर प्राचीन अलके सीएमडी संजीव नारायण उद्योगपति कैलाश लोहिया, कुलवंत सिंह चीमा, बीएनआई गुवाहाटी व ग्रेटर असम के कार्यकारी निदेशक सिद्धार्थ गाड़ोदिया, एसोसिएट सपोर्ट डायरेक्टर पुनीत अग्रवाल, बीएनआई एंकर के अध्यक्ष रोहित सरावगी एंकरेज कार्यक्रम के संयोजक अंकित जाजोदिया, सुकांता विश्वास, अंकित जैन, पवन खाटूवाला मौजूद थे। इस मौके पर मुख्य अतिथि मंत्री सिंघल ने कहा कि समय के साथ व्यापार करने के तरीकों में काफी बदलाव आया है युवा पीढ़ी नई सोच, नई तकनीक का इस्तेमाल करते हुए अपने कारोबार को आगे बढ़ाने में लगी हैं, जिससे राज्य की ही नहीं बल्कि देश की उन्नति भी होगी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि नारायण व लोहिया आदि ने भी बीएनआई एंकर द्वारा आयोजित एंकरेज कार्यक्रम की खुले दिल से सराहना की। अध्यक्ष सरावगी ने बताया कि दो दिवसीय कार्यक्रम एंकरेज शहर के सबसे बड़े बिजनेस इवेंट में से एक है। इसमें लोगो की सभी जरूरतें को ध्यान में रखते हुए एक ही छत के नीचे विभिन्न प्रारूप तैयार किया गया है। इससे व्यवसायियों को कारोबार में आदान-प्रदान करने में मदद मिलेगी। इस दौरान अद्वितीय श्रेणियों के 50+ व्यापार प्रदर्शक अपने विभिन्न उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन कर रहे है। एंकरेज के संयोजक सुकांता विश्वास, अंकित जैन, पवन खाटूवाला ने कहा कि यह दो दिवसीय कार्यक्रम प्रदर्शकों और आगंतुकों के लिए एक-दूसरे के लिए सहयोग, कनेक्ट और नए व्यवसाय उत्पन्न करने के लिए एक बेहतर मंच हैं। इवहीं वित्तीय कोच अमित त्रिवेदी सहित कई प्रख्यात वक्ता भी आयोजित सत्रों को संबोधित करेंगे।आयोजकों ने कहा कि एंकरेज अपनी तरह की एक अनूठी व्यावसायिक प्रदर्शनी है जिसके पहले दिन भारी भीड़ देखने को मिली। हमें उम्मीद है कि इस आयोजन में 5000 से अधिक आगंतुक आएंगे। प्रदर्शनी के अलावा कई तरह के अन्य मनोरंजन से जुड़े कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे रविवार को संपन्न होने वाले इस दो दिवसीय कार्यक्रम में सभी से उपस्थित रहने का आह्वान आयोजकों द्वारा किया गया है। एंकरेज को सफल बनाने में बीएनआई एंकर के सभी सदस्य जुटे हुए हैं।

कुल्हाड़ी से हमला कर पिता ने की पुत्र की हत्या

तिनसुकिया (हि.स.)। तिनसुकिया जिला के जागुन इलाके में पिता द्वारा बड़ी ही बेरहमी से अपने बेटे को मौत के घाट उतारे जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने बताया कि आज (शनिवार) को दीना करवा नामक व्यक्ति ने परिवारिक कहल की वजह से गोद लिए बेटे विजय करवा (28) की बड़ी ही बेरहमी से कुल्हाड़ी से हमला कर मौत के घाट उतार दिया। घटना के समय विजय खाना खा रहा था। इसी दौरान उसके पिता ने पीछे से कुल्हाड़ी से हमला कर उसकी हत्या कर दिया। घटना की खबर मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस की टीम शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है। वहीं पुत्र की हत्या के आरोप में पुलिस ने हत्या के आरोपित पिता को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार आरोपित से सघन पूछताछ कर रही है।

वरिष्ठ पत्रकार महेंद्र कलिता सम्मानित

रंगिया (निसं)। रंगिया के वरिष्ठ पत्रकार महेंद्र कलिता को अखिल असम प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की ओर से उन्हें सम्मानित किया गया है। उल्लेखनीय है कि पत्रकार महेंद्र कलिता समाज हित में दिन-रात काम कर रहे हैं और लंबे समय से अपने क्षेत्र और दूर-दराज के इलाकों से समाचार एकत्र कर समाज की समस्याओं के लिए आवाज उठा रहे हैं। इसलिए लखीमपुर में एक समारोह में तेज आवाज वाले पत्रकार महेंद्र कलिता को शिक्षाज्योति पुरस्कार से नवाजा गया है। संस्था की ओर से उन्हें फुलाम गामोछा, जापी, मानपत्र और उपहार देकर सम्मानित किया गया है। मालूम हो कि इससे पूर्व भी पत्रकार महेंद्र कलिता को भ्रष्टाचार विरोधी पुरस्कार, साहस पुरस्कार सहित और कई अन्य विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। रंगिया में प्राग न्यूज और दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से रंगिया के संवाद क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे पत्रकार महेंद्र कलिता को यह पुरस्कार लखीमपुर में आयोजित अखिल असम प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षक संघ के द्विवार्षिक सम्मेलन में प्रदान किया गया है। उन्हें शिक्षाज्योति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष और सचिव ने महेंद्र कलिता के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

चापरमुख-लामडिंग खंड का विद्युतीकरण सफलतापूर्वक संपन्न

गुवाहाटी (विभास)। वर्ष 2030 तक भारतीय रेल के शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जक बनने के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल पूरे जोर-शोर से प्रगति कर रहा है। पूर्ण विद्युतीकरण के प्रयास में, लामडिंग मंडल के चापरमुख-होजाई-लामडिंग (90.77 आरकेएम/181.5 टीकेएम) खंड (लामडिंग यार्ड को छोड़कर) में पूर्ण अनुभागीय गति से दोनों दिशाओं में गति परीक्षण के बाद रेलवे विद्युतीकरण कार्यों का निरीक्षण 24 मार्च, 2023 को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया। चापरमुख से लामडिंग के बीच के खंड में नौ स्टेशन हैं। इस खंड से कई स्थानीय और लंबी दूरी की ट्रेनें गुजरती हैं। विद्युतीकरण कार्य पूरा होने के बाद गुवाहाटी से लामडिंग तक ट्रेनें इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन पर संचालित होंगी। अधिक से अधिक यात्री और मालवाही ट्रेनें अपनी समयबद्धता बिना खोए पूरी गति से इन खंडों से गुजरेंगी। इस खंड के बीच यात्रा करने वाले व्यापारियों और यात्रियों को लाभ होगा क्योंकि यात्रा समय में बचत होगी। पूसी रेल के विद्युतीकरण परियोजनाओं का कार्य जोरों पर चल रहा है। विद्युतीकरण से पूसी रेल में ट्रेनों की गतिशीलता में काफी सुधार होगा। जीवाश्म ईंधन से बिजली की ओर शिफ्ट होने के कारण प्रदूषण में कमी के अलावा, इस क्षेत्र में रेलवे प्रणाली की दक्षता में भी सुधार होगा। इससे निर्बाध परिवहन की सुविधा होगी और पूर्वोत्तर से अन्य राज्यों में आवागमन करने वाली ट्रेनों के यात्रा समय में भी बचत होगी।

सीएम ने किया श्रम भवन का उद्घाटन, स्वत: पंजीकरण और नवीनीकरण प्रणाली शुरू

गुवाहाटी (हि.स.)। मुख्यमंत्री डॉ हिमंत विश्वशर्मा ने आज (शनिवार) गुवाहाटी के गोपीनाथ नगर में आयोजित एक कार्यक्रम में श्रम भवन के नाम से नवनिर्मित श्रम आयुक्त कार्यालय का उद्घाटन किया। साथ ही डॉ. सरमा ने श्रम विभाग के लिए स्वचालित पंजीकरण और नवीनीकरण प्रणाली का भी शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रम भवन के उद्घाटन से श्रम आयुक्त कार्यालय को प्रदेश की जनता के कई दावों के निस्तारण को नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि ई-ऑफिस प्रणाली के अत्यधिक महत्व को देखते हुए, राज्य सरकार ने डिजिटलीकरण को नई गति दी है और इसके परिणामस्वरूप असम सचिवालय, विभिन्न निदेशालय और डीसी कार्यालय डिजिटल कार्यालय प्रणाली के उद्भव के साथ पेपरलेस हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्रम आयुक्तालय में ई-ऑफिस शुरू करने के साथ ही राज्य भर के जिला और अनुमंडल कार्यालयों में इस प्रणाली को लागू करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने असम सचिवालय के लगभग 99 प्रतिशत कार्यों को कागज रहित होने की बात कहते हुए कहा कि पूछताछ के अलावा सभी कार्य डिजिटल रूप से किए जा रहे हैं। डॉ. सरमा ने कहा कि मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए कई अधिनियम हैं। उन्होंने कहा कि श्रम आयुक्तालय को मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाने चाहिए। मुख्यमंत्री ने बताया कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत राज्य के औद्योगिक परिदृश्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ श्रमिक वर्ग के हितों को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए गए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य विधानसभा में श्रम अधिनियमों में संशोधन के साथ ही मजदूरों और व्यापारियों दोनों के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. सरमा ने कहा कि राज्य सरकार ने ऑटोमेशन के साथ-साथ डिजिटलाइजेशन के लिए कदम उठाए हैं। ऑटोमेशन की मदद से परिवहन विभाग में जबरदस्त सफलता हासिल की है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में नगर निगम कार्यालयों में ऑटोमेशन सिस्टम लागू किया जाएगा। श्रम आयुक्तालय में शुरू की गई स्वचालित पंजीकरण और नवीनीकरण प्रणाली आयुक्तालय में दावों को निपटाने में मदद करेगी। श्रम कल्याण मंत्री संजय किसान, पीएचई, पर्यटन मंत्री जयंत मल्लबरुवा, सांसद क्रीन ओजा, विधायक तेरेश ग्वाला, श्रम विभाग के प्रमुख सचिव बी. कल्याण चक्रवर्ती, विशेष आयुक्त पीडब्ल्यूडी (बी) राज चक्रवर्ती और सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

पीएम मोदी ने देवागेरे में किया रोड शो

सीएम बसवराज बोम्मई और बीएस येदियुरप्पा भी मौजूद

बेंगलुरु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर्नाटक दौरे पर हैं। पीएम मोदी ने श्री मधुसूदन साईं चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने बेंगलुरु में नई मेट्रो लाइन का भी उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेंगलुरु के देवागेरे में रोड शो किया। इस दौरान उनके साथ कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदुरप्पा और सीएम बसवराज बोम्मई भी मौजूद हैं। बता दें कि प्रधानमंत्री ने बेंगलुरु मेट्रो की वाइटफील्ड (कादुगोडी) से कृष्णराजपुरा मेट्रो लाइन की सवारी के लिए मेट्रो टिकट भी खरीदा। इस दौरान उन्होंने मेट्रो में मौजूद लोगों से बातचीत भी की। इससे पहले पीएम मोदी ने मधुसूदन साईं चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान के उद्घाटन के दौरान कहा कि सबके प्रयास से भारत विकसित हो रहा है। सबकी भागीदारी से देश आगे बढ़ रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि चिक्काबल्लापुर की भूमि ने लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य प्रदान करके मानवता की सेवा के मिशन को पोषित किया है। ये उपलब्धियां अद्भुत रही हैं। साथ ही आज यहां जिस मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन किया जा रहा है, वह इस महान मिशन को और मजबूत करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा आजादी के अमृत महोत्सव में देश ने विकसित होने का संकल्प लिया है। कई बार लोग पूछते हैं कि भारत इतने कम समय में वकसित कैसे होगा? इतनी चुनौतियां हैं, इतना काम हैं, ये इतने कम समय में ये कैसे पूरा होगा? इस सवाल का एक ही जवाब है सबका प्रयास। बीते 9 सालों में भारत में भी स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर बहुत ईमानदारी से बहुत कुशलता से कार्य करने का प्रयास किया गया है। देश में मेडिकल एजुकेशन से जुड़े अनेक रिफॉर्म किए गए हैं। पीएम मोदी ने आगे कहा कि चिकबल्लापुर आधुनिक भारत के आर्किटेक्ट में से एक सर एम.विश्वेश्वरय्या की जन्मभूमि है। अभी मुझे सर विश्वेश्वरय्या की समाधि पर पुष्पांजलि का सौभाग्य मिला। इस पुण्य भूमि को मैं सिर झुका प्रणाम करता हूं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा हमारा प्रयास भारत के हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाने का रहा है। हमने गरीब मिडिल क्लास के आरोग्य को प्राथमिकता दी है। हमने देश में सस्ती दवाओं की दुकानों, जनऔषधि केंद्र खोले हैं। गरीबों के हित में काम करने वाली हमारी सरकार ने कन्नड़ सहित सभी भारतीय भाषाओं में मेडिकल की पढ़ाई का विकल्प दिया है। लंबे समय तक देश में ऐसी राजनीति चली है, जहां गरीबों को सिर्फ वोट बैंक समझा गया है। भाजपा सरकार ने गरीब की सेवा को अपना सर्वोच्च कर्तव्य माना है।बता दें कि पीएम मोदी ने चिक्काबल्लापुर में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। उनके साथ राज्य के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई भी मौजूद रहे। पीएम मोदी दोपहर करीब 1 बजे बेंगलुरु मेट्रो की वाइटफील्ड (कादुगोडी) से कृष्णराजपुरा मेट्रो लाइन का उद्घाटन करेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री मेट्रो में सवारी भी करेंगे। बेंगलुरु मेट्रो की वाइटफील्ड (कादुगोडी) से कृष्णराजपुरा मेट्रो लाइन यात्रियों को आने-जाने में आसानी को बढ़ाएगी और शहर में यातायात की भीड़ को कम करने का भी काम करेगी। बता दें कि इस दौरान प्रधानमंत्री मेट्रो में भी सफर करेंगे। गौरतलब है कि कर्नाटक में विधानसभा चुनाव जल्द ही होने वाले हैं, प्रधानमंत्री ने पिछले दो महीनों में कई बार इस राज्य का दौरा किया है और कई परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया है।

पोखरण में तीन मिसाइलों में विस्फोट, जांच के आदेश

नई दिल्ली (हि.स.)। राजस्थान के जैसलमेर की पोखरण रेंज में सेना के फील्ड फायरिंग अभ्यास के दौरान 3 मिसाइलों में विस्फोट हो गया। इनका मलबा आसपास के खेतों में गिर गया, जिसमें दो मिसाइलों का मलबा मिल गया है। तीसरी मिसाइल का मलबा खोजने के लिए ऑपरेशन शुरू किया गया है। सेना ने घटना की पुष्टि करते हुए कहा कि जान-माल का कोई नुकसान नहीं हुआ है। मामले की जांच शुरू की गई है। जैसलमेर के पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में शुक्रवार को सेना के अभ्यास के दौरान तीन मिसाइलें मिसफायर हो गईं। अधिकारियों के मुताबिक जैसलमेर में ही सेना के एक अभ्यास के दौरान जमीन से हवा में मार करने वाली तीन मिसाइलें अलग-अलग जगहों पर गिरी। दो मिसाइलों का मलबा मिल गया है, जबकि तीसरी का पता लगाने के लिए तलाश शुरू की गई है। सूत्रों के मुताबिक तीनों मिसाइलें आसमान में फटीं और फील्ड फायरिंग रेंज के बाहर जाकर गिरी। फील्ड फायरिंग रेंज के बाहर अजासर गांव के पास एक खेत में एक मिसाइल का मलबा मिला। दूसरी मिसाइल का मलबा सत्यया गांव के पास सुनसान इलाके में मिला। हालांकि जनहानि तो नहीं हुई, लेकिन जिस खेत में वे उतरे वहां गड्ढे हो गए। घटना के पीछे के असल कारण का पता लगाने के लिए जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

सरकार और न्यायपालिका के बीच मतभेद का मतलब टकराव नहीं : रिजिजू

चेन्नई। केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने सरकार और न्यायपालिका के बीच टकराव की बात से इनकार किया है। शनिवार को अपने एक बयान में उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मतभेद जरूरी हैं लेकिन उन्हें टकराव के रूप में पेश नहीं किया जाना चाहिए। तमिलनाडु के मदुरई में मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी न्यायालय के उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और मद्रास हाईकोर्ट के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश जस्टिस टी राजा की मौजूदगी में कानून मंत्री ने ये बात कही। कानून मंत्री ने कहा कि हमारे बीच मतभेद हैं लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हमारे बीच टकराव है। इससे पूरी दुनिया में गलत संदेश जाता है। मैं ये साफ कर देना चाहता हूं कि सरकार के विभिन्न अंगों के बीच कोई समस्या नहीं है। यह तो एक मजबूत लोकतंत्र का परिचायक है और यह कोई संकट नहीं है। कानून मंत्री ने कहा कि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में सरकार और सुप्रीम कोर्ट या विधायिका और न्यायपालिका के बीच मतभेद के आरोप लगाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें यह समझना होगा कि हम एक लोकतंत्र में रहते हैं जहां मतभेद हो सकते हैं। हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। किरेन रिजिजू ने कहा कि केंद्र चाहता है कि न्यायपालिका स्वतंत्र रहे। बेंच और बार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। साथ काम करने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि अदालत परिसर में बंटवारा ना हो। अदालतों का माहौल मर्यादापूर्ण होना चाहिए। बीते साल सरकार ने जिला और अन्य अदालतों के लिए 9000 करोड़ आवंटित किए। उनका विभाग कोशिश कर रहा है कि फंड का सही उपयोग हो। सरकार चाहती है कि भारतीय न्यायपालिका पेपरमुक्त हो। तकनीक की मदद से सभी को समाहित किया जा सकता है ताकि जजों को सबूतों के लिए केस की सुनवाई ना टालनी पड़े।

महाराष्ट्र में भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी के खिलाफ किया विरोध प्रदर्शन

मुंबई। भारतीय जनता पार्टी ने शनिवार को यहां अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) का *अपमान* करने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और माफी की मांग की। दूसरी ओर, मानहानि मामले में गांधी को दो साल की सजा सुनाए जाने और फिर उन्हें लोकसभा सदस्यता से अयोग्य करार दिए जाने को लेकर कांग्रेस ने पुणे में विरोध प्रदर्शन किया। भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं ने दादर व लालबाग जैसी जगहों पर तख्तियां लेकर विरोध प्रदर्शन किया, जिन पर कांग्रेस नेता को ओबीसी का अपमान करने के लिए माफी मांगने के लिए कहा गया। सूरत की एक अदालत द्वारा मोदी उपनाम टिप्पणी मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद गांधी को शुक्रवार को लोकसभा की सदस्यता से अयोग्य करार दे दिया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ओबीसी समुदाय से आते हैं। भाजपा की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष चंद्रकांत बावनकुले ने कहा कि ओबीसी का अपमान देश बर्दाश्त नहीं करेगा। राहुल गांधी को ओबीसी से माफी मांगनी चाहिए। मंगल प्रभात लोढ़ा सहित राज्य के भाजपा नेता भी विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। गांधी को मानहानि मामले में दो साल की सजा सुनाए जाने और फिर उन्हें लोकसभा सदस्यता से अयोग्य करार दिए जाने को लेकर कांग्रेस ने पुणे में विरोध प्रदर्शन किया। एमजी रोड के पास हुए विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस पदाधिकारियों ने भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ नारेबाजी की। पुणे शहर के कांग्रेस प्रमुख अरविंद शिंदे ने कहा कि गांधी को अयोग्य ठहराने का कदम केंद्र सरकार के इशारे पर उठाया गया था क्योंकि गांधी जनता की आवाज उठा रहे थे।

हिंदू समाज को आगे बढ़ाने के लिए सभी लोग मिलकर करें काम : मिलिंद परांडे

बेगूसराय (हि.स.)। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने एक दिवसीय बेगूसराय प्रवास के दौरान प्रबुद्ध जनों के साथ बैठक कर हिंदू समाज को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने बैठक में उपस्थित बुद्धिजीवियों से सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होने की अपील किया। होटल जेम्स के सभागार में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए मिलिंद परांडे ने कहा कि अपने धर्म संस्कृति को जानें। अपने हिंदू धर्म-संस्कृति का अपमान नहीं करें, इसमें अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें। आज धर्मांतरण और लव जिहाद तेजी से बढ़ रहा है। ईसाई मशीनरी सिर्फ हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कराने के लिए लगातार अभियान चला रही है। इसके प्रति सभी हिंदू समाज को सतर्क होना होगा, सतर्क करना होगा। उन्होंने कहा कि देश में करीब छह लाख गांव हैं, जिसमें से एक लाख 35 हजार गांव तक हम पहुंच गए हैं। इन सभी गांव में रामोत्सव मनाना, प्रभु श्रीराम के आदर्शों को अपनाने के लिए हिंदू समाज को जागृत करना हमारा लक्ष्य है। इन सभी हिचिंतक गांव के बाद देश के सभी गांव में पहुंचकर हिंदू समाज में फैला अंधियारा भगाना है, उनके बीच ज्ञान की ज्योति जलाना जलना है। हिंदुओं का धर्मांतरण कराया जा रहा है, लेकिन इसके साथ ही धर्म बदल चुके जो लोग इससे होने वाली हानि को समझ रहे हैं, वह पुनः हिंदू धर्म में वापस लौट रहे हैं। कुछ दिन पहले ही किशनगंज में धर्म बदल मुस्लिम बन चुके करीब तीन सौ लोग हिंदू धर्म अपना चुके हैं।

कोरोना : पिछले 24 घंटे में 1,590 से ज्यादा नए मरीज

नई दिल्ली (हि.स.)। कोरोना की रफ्तार अब तेज होने लगी है। पिछले 24 घंटे में 1, 590 से ज्यादा मामले सामने आए हैं। वहीं, इससे छह लोगों की मौत हो गई है। पिछले 24 घंटे में 910 मरीज ठीक हुए हैं। अबतक कोरोना से 4,41,62,832 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के शनिवार सुबह 8 बजे तक के आंकड़ों के अनुसार देश में एक्टिव मरीजों की संख्या बढ़कर 8,601 हो गई है। दैनिक संक्रमण दर 1.33 प्रतिशत दर्ज किया गया है। वहीं, टीकाकरण की बात करें तो पिछले 24 घंटे में 9,497 खुराक दी गई हैं। अबतक देश में कोरोना से बचाव के टीके की 220.65 करोड़ खुराक दी जा चुकी है। कोरोना की जांच में भी बढ़ोतरी हुई है। पिछले 24 घंटे में 1,19,560 लोगों की जांच की गई है। अबतक कुल 92.08 करोड़ लोगों की जांच की जा चुकी है।

कर्नाटक सरकार का फैसला

अल्पसंख्यकों के लिए चार फीसदी आरक्षण किया खत्म

बेंगलुरु। कर्नाटक सरकार ने धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण समाप्त करने और इसे राज्य के दो प्रमुख समुदायों के मौजूदा आरक्षण में जोड़ने की घोषणा की है। इस फैसले के बाद ओबीसी श्रेणी के 2बी वर्गीकरण के तहत मुसलमानों को दिए गए 4 प्रतिशत आरक्षण को अब दो समान भागों में विभाजित किया जाएगा। दरअसल, कर्नाटक में अल्पसंख्यकों के लिए चार फीसदी आरक्षण अब समान रूप से वितरित किया जाएगा और राज्य के वोक्कालिगा और लिंगायत समुदाय के मौजूदा आरक्षण में जोड़ा जाएगा। वोक्कालिगा और लिंगायत समुदाय के लिए पिछले साल बेलगावी विधानसभा सत्र के दौरान 2सी और 2डी की दो नयी आरक्षण श्रेणियां बनाई गईं थीं। बताते चलें कि कैबिनेट ने धार्मिक अल्पसंख्यकों को ईडब्ल्यूएस श्रेणी के तहत लाने का फैसला किया है। यह फैसला कर्नाटक में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले लिया गया है। शुक्रवार को कैबिनेट की बैठक के बाद मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा कि धार्मिक अल्पसंख्यकों का कोटा समाप्त कर दिया जाएगा और बिना किसी बदलाव के ईडब्ल्यूएस श्रेणी के 10 प्रतिशत पूल के तहत लाया जाएगा। सीएम ने बताया कि चार प्रतिशत (अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण) 2सी और 2डी के बीच दो हिस्सों में बांटा जाएगा। वोक्कालिगा और अन्य के लिए चार प्रतिशत आरक्षण बढ़कर छह प्रतिशत हो जाएगा, जबकि वीरशैव पंचमसाली और अन्य (लिंगायत), जिन्हें पांच प्रतिशत आरक्षण मिल रहा था, उन्हें अब सात प्रतिशत मिलेगा। बता दें कि कैबिनेट ने वोक्कालिगा और लिंगायत के लिए क्रमशः 3ए और 3बी श्रेणियों के आरक्षण को समाप्त कर दिया था और पिछले दिसंबर में उनकी जगह 2सी और 2डी की दो नई श्रेणियां बनाई थीं। मुसलमानों के लिए कोटा खत्म करने के फैसले का बचाव करते हुए बोम्मई ने कहा कि धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है। आंध्र प्रदेश में अल्पसंख्यकों के लिए दिए गए आरक्षण को रद्द करने वाले एक अदालत के फैसले का हवाला देते हुए सीएम ने कहा कि भारतीय संविधान के निर्माता बीआर अंबेडकर ने भी कहा था कि आरक्षण जाति के लिए है। हालांकि, हम उस समुदाय को पूरी तरह से नहीं छोड़ सकते हैं। बोम्मई ने धार्मिक अल्पसंख्यकों को कोई समस्या न हो, इस देखते हुए अगर कोई उनके लिए आरक्षण को चुनौती देता है तो हमने एक सक्रिय निर्णय लेने का फैसला किया है। वास्तव में वे बिना किसी बदलाव के ईडब्ल्यूएस समूह के 4 प्रतिशत से 10 प्रतिशत पूल में चले जाएंगे।

अमृतपाल मामले में जम्मू से दम्पति गिरफ्तार

जम्मू। *वारिस पंजाब दे* के प्रमुख अमृतपाल सिंह को पकड़ने के लिए जारी छापेमारी के क्रम में पुलिस ने शहर के बाहरी इलाके में रणबीर सिंह पुरा से उसके करीबी सहयोगी के कथित संबंधों के आरोप में दम्पति को हिरासत में लिया है। जम्मू पुलिस ने शनिवार को एक संदेश में कहा कि आरएस पुरा निवासी अमरीक सिंह और उसकी पत्नी सरबजीत कौर को हिरासत में लिया गया है। साथ ही दोनों को आगे कार्रवाई के लिए पंजाब पुलिस को सौंप दिया गया। दंपति को कथित तौर पर पापलप्रीत सिंह (अमृतपाल सिंह के करीबी सहयोगी) के साथ संबंध होने के आरोप में हिरासत में लिया गया है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक अग्रिम जांच के लिए दंपति के मोबाइल फोन को भी जब्त कर लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब पुलिस मामले की जांच कर रही है और वे इस मामले में दंपति से पूछताछ भी करेंगे।

जम्मू-कश्मीर में अगले साल चलेंगी वंदे भारत ट्रेन : अश्विनी वैष्णव

श्रीनगर (हि.स.)। जम्मू कश्मीर के दो दिवसीय दौरे पर श्रीनगर पहुंचे केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में अगले साल वंदे भारत ट्रेनें चलेंगी, क्योंकि जम्मू-श्रीनगर रेल लिंक इसी साल खोला जाएगा। रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे भारत में रेल नेटवर्क को बदल दिया है और कश्मीर में भी रेलवे को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कश्मीर घाटी में कुपवाड़ा और अन्य दो स्थलों को जल्द ही भारतीय रेल से जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में रेलवे में सुधार किया जाएगा और यह सुधार साल के अंत तक देखा जाएगा। केंद्रीय रेल मंत्री ने कहा कि टेलीफोन कनेक्टिविटी, डबल लाइन, पार्सल सेवाएं, सीमेंट और दवा व्यापार साल के अंत तक भारतीय रेलवे के माध्यम से सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा सेब व्यापार के लिए सुविधाओं पर भी विचार किया जाएगा। अपने जम्मू कश्मीर के दो दिवसीय दौरे के दौरान रविवार को केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव रविवार को रियासी जिले में चिनाब नदी पर बन रहे विश्व के सबसे उंचे आर्च पुल का भी निरीक्षण करेंगे।

देश टीबी के खिलाफ लड़ाई में ग्लोबल साउथ की आवाज बनने को तैयार : डॉ. मनसुख मंडाविया

नई दिल्ली (हि.स.)। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने शनिवार को स्टॉप टीबी पार्टनरशिप की 36वीं बोर्ड बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में टीबी उन्मूलन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अटूट प्रतिबद्धता देखी गई है। देश टीबी के खिलाफ लड़ाई में आगे बढ़कर नेतृत्व करने और ग्लोबल साउथ की आवाज बनने के लिए तैयार है। सभा को संबोधित करते हुए डॉ. मंडाविया ने कहा कि भारत ने जी20 प्रेसीडेंसी के तहत 3 महत्वपूर्ण स्वास्थ्य प्राथमिकताओं की पहचान की है। ये सभी सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज पर केंद्रित हैं और टीबी उन्मूलन के लिए प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि टीबी के मामले खोजने, गणितीय मॉडलिंग, डिजिटल हस्तक्षेप और निगरानी में नवाचार के माध्यम से जमीनी स्तर पर बहुत से असाधारण काम किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत को इस तरह की अच्छी प्रथाओं को दोहराने के लिए अन्य देशों के साथ तकनीकी सहायता साझा करने में खुशी होगी। बीमारी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में टीबी के टीके के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि टीबी के टीके की तत्काल आवश्यकता है। डॉ. मंडाविया ने स्टॉप टीबी पार्टनरशिप बोर्ड से इस पर विचार-विमर्श करने और इस साल सितंबर में सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज पर संयुक्त राष्ट्र की उच्च स्तरीय बैठक में इस मामले को उठाने का आग्रह किया। इस मौके पर स्टॉप टीबी पार्टनरशिप की कार्यकारी निदेशक, डॉ. लुसिका डिटियू ने जोर देकर कहा कि टीबी को खत्म करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि भारत की प्रगति दुनिया को आगे बढ़ाएगी। उन्होंने नि-क्षय डेटा के साथ बहुत परिष्कृत मॉडलिंग करने के लिए भी भारत की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा को लोगों तक पहुंचाने के लिए उनके नवाचार, विचार और रणनीति कुछ ऐसी है जिसका पूरी दुनिया अनुकरण कर सकती है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने शहीद जवानों को दी श्रद्धांजलि

जगदलपुर /रायपुर (हि.स.)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 84वें सीआरपीएफ दिवस के अवसर पर कर्तव्य का पालन करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सीआरपीएफ जवानों को श्रद्धांजलि दी। इससे पहले अमित शाह ने परेड की सलामी ली। अमित शाह ने बलिदानी जवानों के परिजनों को सम्मानित किया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल शनिवार को अपना 84वां स्थापना दिवस इस साल जगदलपुर के करणपुर सीआरपीएफ हेडक्वार्टर में मना रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में देश के गृहमंत्री अमित शाह शामिल हुए हैं। नार्थ सेक्टर, मणिपुर, नागालैंड सेक्टर, कोबरा सेक्टर, साउथ सेक्टर, वेस्ट बंगाल सेक्टर, छत्तीसगढ़ सेक्टर के जवानों ने परेड की। गृहमंत्री अमित शाह ने परेड की सलामी ली। शहीद जवानों की पत्नियों को वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

राहुल गांधी ने पिछड़े समाज का किया अपमान : रविशंकर प्रसाद

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने पटना में प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर जमकर निशाना साधा और उनके आरोपों पर पलटवार किया। बता दें, राहुल गांधी ने आज नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय पर प्रेस कांफ्रेंस कर भाजपा पर कई आरोप लगाए थे। रविशंकर प्रसाद ने कहा कि राहुल गांधी को 2019 में दिए गए उनके एक भाषण पर सजा हुई है। आज अपनी प्रेस वार्ता में राहुल गांधी ने कहा कि मैं सोच समझ कर बोलता हूं तो राहुल गांधी 2019 में जो बोले थे, वह सोच समझ कर बोले थे। उन्होंने कहा था कि ये सारे मोदी चोर क्यों होते हैं? पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी ने पिछड़े समाज का अपमान किया था। आलोचना करने का अधिकार है, बेइज्जत करने का अधिकार नहीं है। राहुल गांधी ने गाली दी थी। वे अगर सोच-समझ कर बोलते हैं तो भाजपा ये मानती है कि राहुल गांधी ने जानबूझ कर पिछड़ों का अपमान किया और भाजपा इसकी भर्त्सना करती है। हम देश भर में उनके खिलाफ जबरदस्त आंदोलन करेंगे। रविशंकर प्रसाद ने कहा कि आज राहुल गांधी ने फिर झूठ बोला कि मैंने लंदन में कुछ नहीं कहा था। राहुल गांधी ने लंदन में कहा था कि भारत में लोकतंत्र कमजोर हो रहा है और यूरोपियन देश ध्यान नहीं दे रहे हैं। झूठ बोलना राहुल गांधी की फितरत हो चुकी है। भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा कि राहुल गांधी ने शिकायत की थी कि उनके फोन में पेगासस है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट द्वारा कहे जाने पर वह अपने फोन की *चेकिंग* कराने नहीं गए, कहीं उनका फोन वास्तव में खराब तो नहीं हो गया।

उप्र अब माफिया नहीं, महोत्सव का प्रदेश बन चुका है : सीएम योगी

योगी सरकार 2.0 के एक वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री ने गिनाईं उपलब्धियां

लखनऊ (हिंस)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने शनिवार को अपने दूसरे कार्यकाल का पहला साल पूरा किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पिछले छह वर्ष में उत्तर प्रदेश के प्रति देश और दुनिया का नजरिया बदला है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। उप्र अब माफिया नहीं, महोत्सव का प्रदेश बन चुका है। लोकभवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 6 वर्ष पहले यूपी कहां था, इन 6 साल में जो परिवर्तन हुआ है, वह इस गाथा को सबके सामने रखता है। ये 6 साल यूपी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। पूर्ण बहुमत की सरकार और इसकी स्थिरता का मतलब क्या होता है, यह भाजपा सरकार ने यूपी के अंदर परस्पर समन्वय संवाद के माध्यम से प्राप्त किया। योगी ने कहा कि 6 साल में हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से यूपी के समग्र विकास की जो कार्ययोजना बनाई थी, पूरी ईमानदारी से उसे लागू करने के लिए हर स्तर पर प्रयास किया। परिणाम सबके सामने है। पहले यूपी के अंदर परंपरागत जाति, मत-मजहब, भ्रष्टाचार, परिवारवाद के नाम पर जो राजनीति होती थी, उससे अलग हटकर हमने यहां की पहचान यूपी के अनुरूप असीम संभावनाओं वाले प्रदेश के रूप में बढ़ाने के

लिए 10 सेक्टर चिह्नित किए, जिस पर पूरी टीम ने काम किया। सीएम ने कहा कि 6 में से 3 साल कोरोना से लड़ते-जूझते हुए काम हुए। यूपी ने इस दौरान अनेक उपलब्धियां हासिल कीं। जिस यूपी के बारे मे कहा जाता था कि वह विकास नहीं कर सकता, पीएम की सभी फ्लैगशिप योजनाओं में आज वह नंबर एक की दौड़ में है। यूपी के इन्फ्रास्ट्रक्चर की चर्चा पूरे देश में हो रही है। कोरोना के संकट काल में लोगों को हर महीने दो-दो बार मुफ्त राशन दिया गया। ओडीओपी ने हर श्रमिक को रोजगार प्रदान किया है। विपत्ति के समय में चुनौती के साथ कैसे काम होता है, यूपी ने इसका मानक प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि उनकी सरकार जनता को जनार्दन मानकर काम कर रही है। युवाओं की नौकरी में पारदर्शिता बरती जा रही है। निजी क्षेत्र में भी नौकरी और रोजगार के ढेर सारे अवसरों को सृजित करने के प्रयास सामने हैं। आज एक करोड़ से अधिक निराश्रित महिला, वृद्धावस्था पेंशन पाने वाली महिलाओं, दिव्यांगजनों को 12 हजार रुपये मासिक पेंशन यूपी प्रदान कर रहा है। यह वही यूपी है, जहां तमाम अभिभावक इस बात के लिए चिंतित होते थे कि बिटिया का विवाह कैसे करेंगे, उसे कैसे पढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि आज 14 लाख बेटियां मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना से लाभान्वित हुईं। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत सवा दो लाख बेटियों का विवाह संपन्न हुआ।

देश में अघोषित इमरजेंसी, सभी संस्थाओं को समाप्त किया जा रहा : ललन सिंह

पटना (हिंस)। राहुल गांधी की संसद सदस्यता जाने के मामले पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए शनिवार को जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि जिस तरह से 24 घंटे के भीतर फैसला लिया गया उससे यह साबित होता है कि केंद्र सरकार पूरी तरह हताश है। वह बौखलाहट में इस तरह की कार्रवाई कर रही है। साथ ही उन्होंने कहा कि देश में अघोषित इमरजेंसी लागू हो गई है और सभी संस्थाओं को समाप्त किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अगर इस तरह से राहुल के मामले में कोर्ट का फैसला आने के 10 घंटे के भीतर अगर सारी प्रक्रिया पूरी कर ली जाए तो साफ झलकता है कि इसमें केंद्र सरकार की कहीं न कहीं भूमिका है। उन्होंने कहा कि देश की जनता सबकुछ देख रही है। भाजपा को इसका जवाब 2024 में मिलेगा। बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव से सीबीआई की पूछताछ पर उन्होंने कहा कि जो राहुल गांधी के साथ हो रह है वैसा ही तेजस्वी यादव के साथ हो रहा है। लैंड फॉर जॉब स्कैम में 2008 से 2014 तक कोई जांच नहीं हुई। 2020 तक भी सीबीआई-ईडी चुप बैठी रही लेकिन जैसे ही नीतीश कुमार महागठबंधन में शामिल हुए सीबीआई और ईडी को दिव्य ज्ञान हो गया, जो फाइल बंद हो गई थी वह 2022 में फिर से खुल गई। विपक्ष एकता की एकजुटता का दावा करते हुए उन्होंने कहा कि 14 राजनीतिक दलों ने सुप्रीम कोर्ट में केंद्र की सरकार के विरोध में याचिका दायर किया है।

सपा विधायक इरफान सोलंकी पेशी पर पहुंचे कानपुर न्यायालय

कानपुर (हिंस)। फर्जी आधार कार्ड और रंगदारी मामले में महाराजगंज जेल से कानपुर न्यायालय में पेशी के लिए शनिवार को कड़ी सुरक्षा के बीच चार सौ किलोमीटर दूर से सपा विधायक इरफान सोलंकी और उनके भाई रिजवान पहुंचे। दोनों की एमपी-एमएलए कोर्ट में पेशी होगी। सपा विधायक इरफान और उनके भाई रिजवान शनिवार को कोर्ट में पेशी होने के मद्देनजर कचहरी परिसर में भारी पुलिस फोर्स तैनात की गई थी। महाराजगंज की जेल से कड़ी सुरक्षा के बीच दोनों भाई कानपुर कोर्ट पहुंचे। इस दौरान इरफान बेटी का हाथ थामे हंसते-मुस्कुराते और बात करते रहे। समर्थकों को देखते ही उन्होंने रमजान की मुबारकबाद दी। एमपी/एमएलए तृतीय की कोर्ट में फर्जी आधार कार्ड एवं रंगदारी वसूलने और एडीजे-11 कोर्ट में गैंगस्टर के रिमांड एक्सटेंशन मामले में आज इरफान की पेशी है। रंगदारी के मामले में न्यायालय ने इरफान पर आरोप तय कर दिए हैं। एडवोकेट गौरव दीक्षित ने बताया कि आरोप तय होने के बाद अब उसकी सुनवाई शुरू हो सकेगी। उन्होंने बताया कि गैंगस्टर मामले में 12 अप्रैल की तारीख दी गई है, जबकि रंगदारी मामले में छह अप्रैल की तारीख दी गई है। अधिवक्ता गौरव दीक्षित ने बताया कि आगजनी मामले में अब इरफान की पेशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए होगी। कहा कि मैंने ही एप्लिकेशन दी थी। रात में दो बजे जेल से लेकर आना पड़ता है। 12-12 घंटे सो नहीं पाता हूं। बहुत परेशान हो गया था।

नहाए खाए के साथ चैती छठ शुरू

बेतिया (हिंस)। नहाय खाय के साथ चार दिवसीय लोक आस्था के महापर्व चैती छठ की शुरुआत शनिवार को हो गई। व्रतियों ने नदियों और तालाबों में स्नान कर चावल, रहर की दाल व कद्दू की सब्जी का ग्रहण किया। रविवार को खरना व सोमवार को संध्याकालीन सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। जबकि मंगलवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही इसका समापन हो जाएगा। छठ पूजा को लेकर नगर समेत ग्रामीण क्षेत्रों मे छठ घाटों को पूजा के लिए तैयार करने का काम शुरू कर दिया गया है। नगर के न्यू मार्केट के समीप स्थित मुख्य छठ घाट पर व्रतियों की सुविधा के मद्देनजर साफ सफाई समेत अन्य जरूरी कार्यों को अंतिम रूप देने का काम किया जा रहा है।

बिहार में कक्षा एक से 12वीं तक की किताबें उपलब्ध होंगी ऑनलाइन

पटना (हिंस)। राज्य के सरकारी विद्यालयों की कक्षा एक से 12वीं तक की किताबों पर अब क्यूआर कोड रहेगा। इसे स्कैन कर स्टूडेंट ऑनलाइन किसी चैप्टर को पढ़ सकते हैं। बिहार राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने सभी विषयों में क्यूआर कोड को पहले और द्वितीय पृष्ठ पर डाला है। नए सत्र में ये किताबें बच्चों को मिल जाएगी। इससे छात्रों को काफी फायदा होगा। किताब के साथ उसके पीडीएफ को मोबाइल में भी बच्चे पढ़ सकते हैं। इस क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए मोबाइल के प्ले स्टोर से *दीक्षा* ऐप डाउनलोड करना होगा। उसी ऐप के जरिए क्यूआर कोड को डाउनलोड कर पढ़ा जा सकता है। सरकारी स्कूलों में बच्चों को मिलने वाली किताबों की छपाई कर ली गई है। इस बार एक अप्रैल से सभी प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में किताबों का वितरण शुरू हो जाएगा। राज्यभर के लगभग डेढ़ करोड़ बच्चों के बीच किताबें वितरित की जानी हैं। आठवीं तक की किताबों में लर्निंग आउटकम डाला गया है। इससे क्लास में जो भी चैप्टर पढ़ाए जाएंगे, वह बच्चों को कितना समझ में आया है, इसका पता चलेगा। उल्लेखनीय है कि एससीईआरटी (एससीईआरटी) ने नई शिक्षा नीति के तहत किताबों का पाठ्यक्रम तैयार किया है। अभी कक्षा एक से तीसरी तक की किताबें नई शिक्षा नीति के आधार पर बनाई गई है। डिजिटल फॉर्म में सभी किताबों को ई-लॉर्ट्स से जोड़ा गया है। ई-लॉर्ट्स मतलब ई-लाइब्रेरी टीचर्स एंड स्टूडेंट्स।

हज यात्रा व मदरसा शिक्षा को लेकर मुस्लिम धर्मगुरुओं के साथ प्रभारी मंत्री की बैठक

मेरठ (हिंस)। प्रदेश के प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने शनिवार को सर्किट हाउस में हज यात्रा और मदरसा शिक्षा के संबंध में मुस्लिम धर्मगुरुओं के साथ बैठक की। इस दौरान हज यात्रा को लेकर धर्मगुरुओं ने प्रभारी मंत्री को सुझाव भी दिए। प्रदेश के अल्पसंख्यक कल्याण एवं मुस्लिम वक्फ धर्मपाल सिंह ने शनिवार को मेरठ का दौरा किया। सर्किट हाउस में उन्होंने मुस्लिम धर्मगुरुओं के साथ बैठक की। इस दौरान मंत्री ने उनसे हज यात्रा के संबंध में सुझाव मांगे और बताया कि हज यात्रा हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मार्च तक बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार से अनुरोध किया गया है। जनपदवार अलग-अलग टेबिल की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही इस बार करेंसी एक्सचेंज की सुविधा भी हज हाउस से ही दी जाएगी ताकि हाजियों को कोई परेशानी न हो। मौलाना शम्स कादरी एवं मौलाना रिजवान द्वारा सुझाव दिए गए कि कई बार हाजी घर से अहराम पहनकर नहीं जाते हैं तथा एयरपोर्ट पर भीड़

ज्यादा होने के कारण वहां अहराम बांधने आदि में बहुत कठिनाई होती है तो इस संबंध में एयरपोर्ट पर ऐसी सुविधा हो जिससे हाजी आसानी से अहराम बांध सकें। साथ ही खुद्दाम हेतु जाने वाले यात्रियों के आवेदन पत्र के संबंध में जनपद स्तर पर भी आवेदन प्राप्त किए जाएं। मंत्री ने उन्हें इस पर विचार करने का आश्वासन दिया। कारी शफीकुर्रहमान ने कहा कि समय बहुत कम है और इस संबंध में अभी तक हाजियों को कितनी धनराशि जमा करनी है एवं कोविड वैक्सीन की उपलब्धता न होने के कारण हाजियों को कोविड वैक्सीन लगाया जाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। साथ ही उनके द्वारा शाही ईदगाह में हाजियों के टीकाकरण कैम्प बनाये जाने का भी अनुरोध किया। मदरसा शिक्षा को लेकर भी प्रभारी मंत्री को सुझाव दिए गए। मौलाना शम्स कादरी ने कहा कि मदरसों में हिन्दी, अंगेजी, गणित, विज्ञान आदि विषयों के अध्यापकों की नियुक्ति न होने के कारण इन विषयों की छात्रों को शिक्षा दिया जाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। इस पर मंत्री द्वारा आश्वस्त किया गया कि मदरसों में ट्रेंड स्टाफ की नियुक्ति हेतु कार्यवाही की जाएगी एवं आधुनिक विषयों के अध्यापन हेतु स्टाफ भी उपलब्ध कराया जाएगा। इस अवसर पर मौलाना ऑन मोहम्मद, मौलाना अतहर काजमी, मौलाना रिजवान, मौलाना सलमान, मौलाना शहाबुद्दीन, हमीदुल्ला राजशाही आदि उपस्थित रहे।

पलामू में टीएसपीसी के पांच नक्सली कमांडर गिरफ्तार

मेदिनीनगर (हिंस)। पलामू पुलिस को प्रतिबंधित नक्सली संगठन तृतीय सम्मेलन प्रस्तुति कमेटी (टीएसपीसी) के खिलाफ बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने टीएसपीसी के टॉप कमांडर सहित पांच नक्सलियों को गिरफ्तार किया है। एसपी चंदन सिन्हा ने शनिवार को बताया कि गिरफ्तार नक्सलियों में टीएसपीसी के एरिया कमांडर बसंत भुईया, रंजय कुमार, बिरेन्द्र कुमार, छोटू दास और सुधीर कुमार मेहता शामिल हैं। गिरफ्तार नक्सलियों ने 21 मार्च को नावाबाजार थाना के कंडा घाटी में स्थित एसकेएम ईंट-भट्ठे में खड़े पांच वाहनों को आग के हवाले कर दिया था। पुलिस के अधिकारी गिरफ्तार नक्सलियों से पूछताछ कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि पलामू

पुलिस ने नावाबाजार, पाटन, नावाजयपुर, मनातू, छतरपुर के सीमावर्ती इलाकों में सर्च अभियान चलाया और सभी को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार नक्सलियों ने पलामू पुलिस के अधिकारी को कई अहम जानकारी दी हैं, जिसके बाद पुलिस के शीर्ष अधिकारी सर्च अभियान चला रहे हैं। गिरफ्तार नक्सलियों ने टीएसपीसी के समर्थक उसके ठिकाने समेत कई बिंदुओं पर पुलिस को जानकारी दी है।

हिंदू समाज को आगे बढ़ाने के लिए सभी लोग मिलकर करें काम : मिलिंद परांडे

बेगूसराय, 25 मार्च (हि.स.)। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने एक दिवसीय बेगूसराय प्रवास के दौरान प्रबुद्ध जनों के साथ बैठक कर हिंदू समाज को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने बैठक में उपस्थित बुद्धिजीवियों से सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होने की अपील किया। होटल जेम्स के सभागार में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए मिलिंद परांडे ने कहा कि अपने धर्म संस्कृति को जानें। अपने हिंदू धर्म-संस्कृति का अपमान नहीं करें, इसमें अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें। आज धर्मांतरण और लव जिहाद तेजी से बढ़ रहा है। ईसाई मशीनरी सिर्फ हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कराने के लिए लगातार अभियान चला रही है। इसके प्रति सभी हिंदू समाज को सतर्क होना होगा, सतर्क करना होगा। उन्होंने कहा कि देश में करीब छह लाख गांव हैं, जिसमें से एक लाख 35 हजार गांव तक हम पहुंच गए हैं। इन सभी गांव में रामोत्सव मनाना, प्रभु श्रीराम के आदर्शों को अपनाने के लिए हिंदू समाज को जागृत करना हमारा लक्ष्य है। इन सभी हिचिंतक गांव के बाद देश के सभी गांव में पहुंचकर हिंदू समाज में फैला अंधियारा भगाना है, उनके बीच ज्ञान की ज्योति जलाना जलना है। हिंदुओं का धर्मांतरण कराया जा रहा है।

रामनवमी पर पांच हजार होमगार्ड होंगे तैनात

रांची (हिंस)। रामनवमी पर विधि व्यवस्था को दुरूस्त रखने के लिए राज्य के 24 जिलों में 5000 होमगार्डों की तैनाती होगी। इस संबंध में एडीजी अभियान ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। इन सभी जवानों की तैनाती 28 मार्च से एक अप्रैल तक के लिए होगी। झारखंड पुलिस मुख्यालय ने स्वीकृति आदेश में कहा है कि रामनवमी पर्व पर विधि व्यवस्था के संधारण के लिए सभी जिलों के लिए 28 मार्च से लेकर चार अप्रैल तक पांच दिन के लिए पांच हजार होमगार्ड जवानों की तैनाती पूरे प्रदेश में की जाएगी। 28 मार्च को सभी होमगार्ड अपने-अपने जिलों में योगदान देंगे, जहां से सभी पुलिस अधीक्षकों के जरिए उन्हें जिले की सुरक्षा और विधि व्यवस्था के संधारण के काम में लगाया जाएगा। रांची- 500, खूंटी- 100, रामगढ़- 100, लोहरदगा- 200, गुमला- 200, सिमडेगा- 100, जमशेदपुर- 300, चाईबासा- 200, सरायकेला- 150, धनबाद- 300, बोकारो- 300, पलामू- 250, गढ़वा- 250, लातेहार- 100, हजारीबाग- 500, चतरा- 200, कोडरमा- 100, गिरिडीह- 200, दुमका- 150, जामताड़ा- 300, साहिबगंज- 250, गोंदा- 100 और देवघर जिले में 150 होमगार्ड जवानों की तैनाती करने करने का आदेश है। हजारीबाग और राजधानी रांची में सबसे ज्यादा 500-500 होमगार्ड की तैनाती की जा रही है। क्योंकि, हजारीबाग की रामनवमी बेहद संवेदनशील होती है। अन्य जिलों में योगदान देने के बाद सभी होमगार्ड को जिलों के एसपी संवेदनशील और अतिसंवेदनशील स्थानों पर अन्य सुरक्षा बलों के साथ तैनात करेंगे। कुछ स्थानों पर इन्हें ट्रैफिक व्यवस्था में भी लगाया जाएगा।

उप्र में गुंडे-माफिया का राज समाप्त हुआ : धर्मपाल सिंह

मेरठ (हिंस)। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री एवं मेरठ के प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि योगी सरकार में उत्तर प्रदेश से गुंडे-माफिया का राज समाप्त हो गया है। उत्तर प्रदेश अब प्रगति पथ पर अग्रसर है। डबल इंजन की भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बना दिया है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार-2 का एक वर्ष पूरा होने पर प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। इस दौरान विकास भवन सभागार में राज्य सरकार की एक वर्ष की उपलब्धियों का लखनऊ में हुए कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखा गया। इस अवसर पर विकास पुस्तिका (सुशासन विकास रोजगार डबल इंजन की सरकार) का विमोचन किया गया। मेरठ के प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश में जबसे योगी सरकार आई है। तब से गुंडे माफियाओं का राज खत्म हो गया है। अब उत्तर प्रदेश में भयमुक्त राम राज्य स्थापित हो गया है। उत्तर प्रदेश सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। प्रदेश में उद्यमियों के लिए भी कई योजनाएं चला रही है। प्रदेश में रहने वाले गुंडे-माफिया को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि योगी सरकार में गन्ना मूल्य का भुगतान भी नियमित कराया जा रहा है।

एमपी-एमएलए कोर्ट से साक्ष्य के अभाव में गिरिराज सहित 23 बरी

मुजफ्फरपुर (हिंस)। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह समेत 23 लोगों के खिलाफ शनिवार को विशेष एमपी एमएलए कोर्ट में सजा के बिंदु पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने साक्ष्य के अभाव में सभी 23 आरोपियों को तत्काल बरी कर दिया। पक्ष के अधिवक्ता अशोक कुमार ने बताया कि बिहार में बढ़ते पेट्रोल-डीजल के दाम को लेकर वर्ष 2014 में भाजपा नेताओं ने ट्रेन रोको अभियान किया था। इस मामले में मुजफ्फरपुर के तत्कालीन रेलवे थानाध्यक्ष अरविंद कुमार ने भाजपा के गिरिराज सिंह, सुरेश शर्मा सहित कुल 23 लोगों को नामजद करते हुए मुकदमा दर्ज किया था। अधिवक्ता ने बताया कि मामले में कुल 23 व्यक्ति आरोपी थे। इसमें प्रमुख रूप से केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह के अलावा राज्य के पूर्व मंत्री सुरेश कुमार शर्मा, रामसूरत राय, वैशाली सांसद वीणा देवी, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष अरविंद कुमार सिंह, अंजू रानी, देवांशु किशोर, कमलेश्वर प्रसाद उर्फ केपी पप्पू, आशीष साहू, विनोद कुमार कुशवाहा, देवीलाल, शशि कुमार सिंह, रितेंद्र कुमार उर्फ रितेंद्र प्रकाश शर्मा, दिनेश कुमार उर्फ दिनेश कुमार पुष्पम, धीरेंद्र प्रसाद सिंह उर्फ धीरेंद्र कुमार सिंह, मनीष कुमार अविनाश सुमन कुमार उर्फ सुमन कुमार सिन्हा, रघुनंदन प्रसाद सिंह, मदन चौधरी, रामबाबू राय, गीता देवी और वंदना नाम था।

कांग्रेसियों ने किया सड़क पर प्रदर्शन

नवादा 25 मार्च(हिंस)। नवादा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सतीश कुमार *मनटन* की अध्यक्षता में जिले के कांग्रेसजनों के द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी की संसद सदस्यता आनन-फानन में रद्द करने के विरुद्ध भगत सिंह चौक से लेकर प्रजातंत्र चौक तक प्रतिरोध मार्च निकालकर मोदी-सरकार के विरूद्ध नारे लगाए गए। प्रजातंत्र चौक पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला दहन किया गया। उनके द्वारा मोदी-शाह व पूंजीपतियों के संबंधों के जांच की मांग की गई। प्रदर्शन में जिलाध्यक्ष सतीश कुमार *मनटन* के साथ कार्यकारी अध्यक्ष बंगाली पासवान, नवादा विधानसभा प्रभारी शुभंकर शर्मा, पूर्व अध्यक्ष रामनरेश सिंह, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष उपेंद्र प्रसाद सिंह सहित अन्य वरिष्ठ कांग्रेसीजन उपस्थित रहेद्य

बंदर को लग गई शराब की लत

बांदा (हिंस)। उत्पाती बंदरों को अक्सर लोगों का खाने पीने का सामान छीन कर खाते हुए देखा होगा। लेकिन जनपद बांदा में एक बंदर को शराब की लत लग गई है। यह बंदर शराब के ठेकों में शराब पी रहे शराबियों की बोतल छीन कर चंपत हो जाता है और बाद में शराब गटागट करके पी जाता है। शराब पीते ही नशे में यह बंदर लोगों पर हमला कर करता है। अब तक कई लोगों को हमला करके घायल कर चुका है। यह पूरा मामला जनपद बांदा में मटौंध थाना क्षेत्र के कस्बे का है। इस कस्बे में शराब पीने का आदी हो चुका यह बंदर आजकल लोगों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है। खासकर, शराब पीने के शौकीन लोग बंदर के आतंक से भयभीत हैं। जब वह शराब पीते हैं तो उन्हें इस बात का भय सताता रहता है। कहीं वह बंदर न जाए जो शराब की बोतल छीनकर भाग जाता है। कस्बे के लोगों का कहना है कि यह बंदर नगर पंचायत थाना क्षेत्र और बस स्टैंड इलाके में घूमता रहता है। अक्सर शराबियों की बोतल छीन कर शराब पी

जाता है और फिर नशे में होने के बाद लोगों पर हमले करना शुरू कर देता है। शुक्रवार को भी एक शराबी की बोतल छीन कर पी गया। कुछ लोगों ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में वायरल कर दिया।

चांद के ठीक नीचे दिखा चमकीला तारा सोशल मीडिया में छाया

खूबसूरत खगोलीय नजारे को कैमरे में कैद कर लोग रात से ही कर रहे शेयर

वाराणसी (हिंस)। वासंतिक चैत्र नवरात्र के तीसरे दिन और माहे रमजान के पहले दिन शुक्रवार देर शाम आसमान में चंद्रमा के ठीक नीचे दिखा चमकीला तारा लोगों में आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। रात से लेकर शनिवार सुबह तक लोग इसकी तस्वीरों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर शेयर कर इसकी खूबसूरती के साथ इसके परिणाम को लेकर भी तरह-तरह की चर्चा कर रहे है। आसमान में दिखे अद्भुत नजारे को अपने सेलफोन में कैद करने के लिए लोग देर शाम तक घरों की छतों पर डटे रहे। हर कोई उतावला इसके बारे में जानने के लिए बेचैन दिखा। ज्योतिष विदों के अनुसार चंद्रमा और शुक्र एक ही राशि पर आए हैं। यह एक खगोलीय घटना है और ज्योतिष की दृष्टि से भी यह शुभ

हैं। इससे धार्मिक व मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। वैज्ञानिकों के अनुसार यह नजारा कभी-कभी दिखता है। यह शुक्र ग्रह पर ग्रहण की एक खगोलीय घटना है। शुक्रवार की शाम 6.30 बजे से रात 9 बजे के बाद तक यह नजारा आसमान में दिखा। इस घटना को लूनर ऑक्यूलेशन और वीनस कहते हैं। पृथ्वी, चंद्रमा और शुक्र ग्रह एक सीध में आ जाते हैं। अपनी कक्षा में घूमते हुए शुक्र जब चंद्रमा और पृथ्वी के सामने आता है तो कुछ देर के लिए यह चंद्रमा के नीचे ऐसे दिखाई देता है जैसे चंद्रमा ने गले में मणि वाला कोई लॉकेट पहन रखा हो। यह घटना वर्षों में एक बार होती है। शुक्र ग्रह इससे पहले 2020 में देखा गया था। यह नजारा अब वर्ष 2035 में दिखाई देगा। इस खगोलीय घटना को सनातन धर्मी देवी चंद्रघंटा का स्वरूप बताते रहे। तो मुस्लिम युवा इसे खुदा का करिश्मा बता रहे है। उनका कहना है कि रमजान के पहले दिन ऐसा नजारा देश के लिए खुशी का पैगाम है।

संपादकीय

सियासी मंच पर जनमंच

सवाल जनमंच की उपयोगिता से निकला और इसकी बिसात में भी सियासत बिछ गई। विधानसभा सत्र के बहाने फिर राजनीति के मंच पर चढ़ा जनमंच। इसके पक्ष और विरोध में हुए राजनीतिक मुकाबले से दूर कहीं आम आदमी के सवालों का विश्£षण होता तो व्यवस्था भी सही होती। शिकायत को माइक की जरूरत है या सरकारों के पास शिकायती कान होने चाहिएं, जो प्रक्रिया के बजाय मंच पर बजें। बेशक आंकड़ों में जनमंच पर 39726 शिकायतें चढ़ीं, लेकिन इससे सुशासन को मुंह छुपाने का बहाना भी मिल गया। इतनी शिकायतों का समाधान अगर जनमंच की प्राथमिकता बता रहा या यह साबित कर रहा कि रूटीन में दफ्तर असफल हो रहे, तो यह व्यवस्था की कुशलता तो नहीं है। हम अगर जनमंच को सही विकल्प नहीं मानते, तो आगे भी इसी तरह के मंच का समर्थन नहीं कर सकते। यहां सवाल कान पकडने के तरीके का नहीं और न ही यह मुकाबला मंचों पर हो रहा कि किस सरकार ने कहां से कान पकड़े, बल्कि मूल प्रश्न सरकारी कार्य संस्कृति की परंपरा बदलने का है या यह देखने का भी है कि कहां तालमेल में अंतर और सार्वजनिक सुनवाई में छेद हैं। जनमंच हो या कल इसी तरह का कोई अन्य शिकायत मंच स्थापित हो जाएं, इनकी प्रस्तुति ये ये केवल सियासी रंगमंच ही बनते रहेंगे। हमने अतीत के जनमंचों पर कुछ मंत्रियों को केवल अधिकारियों को लताड़ते देखा है, जबकि न तो कार्रवाइयों से व्यवस्था में परिवर्तन हुआ और न ही समाधानों का स्थायी कृतित्व विकसित हुआ। आश्चर्य यह कि शिकायत भी अगर लोकचरित्र का मंचन करे, तो माहौल की तलखियों में केवल नौटंकी ही होगी। सुशासन को हम जनमंच से जोड़ पाए या हर दफ्तर को सचेत करने पर बहस होनी चाहिए। बहुत सारे विभाग हैं जिन्हें चौबीस घंटे सक्रिय रहना होता है, तो क्या चंद जनमंचों की बदौलत इनका चरित्र और चेहरा बदल जाएगा। जनमंच न तो दैनिक क्रिया रही है और न ही इसमें जुटने वाली प्रतिक्रियाओं की सार्थकता सामने आई। दफ्तर के रूटीन कार्यों को अगर मंचों पर आसीन होने की आदत लग जाए, तो कार्यसंस्कृति केवल मंचन ही होगा और यह होने लगा था जब कुछ प्रमाणपत्र या लाइसेंस जैसे दस्तावेज भी सार्वजनिक रूप से बंटने लगे थे। सरकार की मौजूदगी में जनमंच भले ही ऊंचे संबोधनों की विरासत में राजनीतिक लाभ चुन लें, लेकिन प्रशासन की मौलिकता, पारदर्शिता, ईमानदारी व पवित्रता को इससे आंका नहीं जा सकता। सुशासन पर मोहर तब लगेगी जब विभागों के लक्ष्य इन्हीं के दायित्व में पूरे होंगे। सुशासन की पहचान के लिए मंच से उतर कर फील्ड को देखना पड़ेगा ताकि पता चले कि लोक निर्माण विभाग के कार्यों की गुणवत्ता क्या है। जलशक्ति विभाग की परियोजनाओं का मुआयना करके ही पता चलेगा कि जलापूर्ति कितनी दोषपूर्ण है। बस में जब मंत्री चलेंगे तो एचआरटीसी की दिक्कतें पता चलेंगी। जनमंच केवल शिकायतों को मौका देता है, जबकि प्रशासन के भीतर बहुत सारे कर्मचारी-अधिकारी वर्षों से अपने दायित्व की मिसाल हैं, तो उनको श्रेय देने के लिए क्या कोई पद्धति बनी। सरकारें अगर अपनी स्थानांतरण नीति या नियम ही तय नहीं कर पाएंगी, तो मंच सजा कर कोसने के सिवाय मिलेगा भी क्या। क्या बेरोजगारों को जनमंच रोजगार दे पाएगा या जब भर्ती घोटाले या कर्मचारी चयन आयोग में पेपर लीक हो रहे थे, तो क्या किसी जनमंच ने इनके कान पकड़े। शिकायतें तो व्यापारी, दुकानदार या हर निजी व्यापार में ढेरों हैं, तो क्या कभी इनके पास कोई जनमंच गया। जनमंच एक अच्छा आयोजन हो सकता और अगर सत्ता को भीड़ इक_ी करके खुद को भांपना है तो भी यह सुखद अनुभव हो सकता है, लेकिन क्या जनमंच को आम नागरिक हमेशा अपने नजदीक बुला सकता है। उसके नजदीक तो पंचायत कार्यालय है, जहां सचिव मौजूद होना चाहिए। उसके नजदीक पटवारी, डिस्पेंसरी में डाक्टर-नर्स, स्कूल में अध्यापक-शिक्षा, जलापूर्ति के लिए फिटर, विद्युत आपूर्ति के लिए लाइनमैन और कानून व्यवस्था के लिए पास में कोई पुलिस चौकी या थाना होता है, लेकिन यह सही तरह से उसे सुनें उसके लिए हर दिन तो जनमंच नहीं हो सकता। जनमंच के माध्यम से खुशफहमी हो सकती है या कोई बजीर कुछ क्षण के लिए आपा खो सकता है, लेकिन देखें कि राज्य सचिवालय में आबंटित कार्यालयों में हमारे मंत्री नियमित रूप से कितने दिन बैठते हैं। जिला के अधिकारियों को जनमंच सजाने, बंदोबस्त करने व खाल बचाने के लिए अधिकांश समय निकल जाएगा, तो फिर दफ्तरों को अलविदा कर दें। ऐसे में वर्तमान मुख्यमंत्री अगर विभागीय तथा दफ्तरी माहौल में सरकारी कार्यसंस्कृति को उत्तरदायी व जवाबदेह बनाने के लिए सार्वजनिक प्रक्रिया को चुस्त-दुरुस्त करें, तो ही बदलाव आएगा।

> सरकार की मौजूदगी में जनमंच भले ही ऊंचे संबोधनों की विरासत में राजनीतिक लाभ चुन लें, लेकिन प्रशासन की मौलिकता, पारदर्शिता, ईमानदारी व पवित्रता को इससे आंका नहीं जा सकता। सुशासन पर मोहर तब लगेगी जब विभागों के लक्ष्य इन्हीं के दायित्व में पूरे होंगे। सुशासन की पहचान के लिए मंच से उतर कर फील्ड को देखना पड़ेगा ताकि पता चले कि लोक निर्माण विभाग के कार्यों की गुणवत्ता क्या है। जलशक्ति विभाग की परियोजनाओं का मुआयना करके ही पता चलेगा कि जलापूर्ति कितनी दोषपूर्ण है। बस में जब मंत्री चलेंगे तो एचआरटीसी की दिक्कतें पता चलेंगी। जनमंच केवल शिकायतों को मौका देता है, जबकि प्रशासन के भीतर बहुत सारे कर्मचारी-अधिकारी वर्षों से अपने दायित्व की मिसाल हैं, तो उनको श्रेय देने के लिए क्या कोई पद्धति बनी।

कुछ अलग

लगा पोस्टर, निकली सियासत

राजधानी दिल्ली की दीवारों पर अचानक कुछ पोस्टर चिपका दिए गए-'मोदी हटाओ, देश बचाओ।' यह कोई देश-विरोध का नारा नहीं है और न ही चुनावी मौसम में अप्रत्याशित माना जा सकता है। भारतीय लोकतंत्र में ऐसे नारों और पोस्टरों की परंपरा नेहरू-कालखंड से रही है। 1962 में भारत-चीन युद्ध जारी था, लेकिन तब विपक्षी जनसंघ ने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के खिलाफ नारों और पोस्टरों का अभियान छेड़ा था। आपातकाल के दौरान जयप्रकाश नारायण ने यह भी नारा दिया था-'इंदिरा हटाओ, देश बचाओ।' उस दौर में पोस्टर ही नहीं छापे गए, बल्कि काली स्याही से दीवारों पर भी नारे लिखे गए। भारतीय राजनीति में और भी उदाहरण होंगे, लेकिन दिल्ली में प्रधानमंत्री-विरोधी पोस्टर नजर आए, तो पुलिस ने करीब 140 प्राथमिकियां दर्ज कर लीं और 30 से अधिक लोगों को गिरफ्तार भी किया। यह सिलसिला अभी जारी है। यकीनन प्राथमिकी के संदर्भ में ये आंकड़े अभूतपूर्व हैं, क्योंकि पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराना टेढ़ी खीर है। पहले और अब की राजनीति में फर्क इतना ही है कि 2009 में एक कानून बनाया गया था। उसके मुताबिक, किसी भी पोस्टर पर प्रिंटिंग प्रेस और प्रकाशक का नाम छापना अनिवार्य है और पोस्टरों की संख्या सार्वजनिक करना भी लाजिमी है। ऐसा नहीं करना 'अपराध' माना जाता है। कुछ घंटों तक यह रहस्य बना रहा कि प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ पोस्टर-अभियान किसने छेड़ा है? लेकिन 'आम आदमी पार्टी' (आप) के दफ्तर से पोस्टरों से भरी एक वैन निकल रही थी, जिसे पुलिस ने पकड़ लिया। बाद में 'आप' के कुछ मंत्रीनुमा नेताओं ने भी कबूल किया कि पोस्टर 'आप' ने ही छपवाए हैं। यह प्रधानमंत्री का विरोध-अभियान है, क्योंकि उन्होंने देश को ठगा है और अपने वायदे पूरे नहीं किए हैं। 'आप' ने यह मौका जानबूझ कर चुना है, क्योंकि पोस्टर कांड के अगले ही दिन 23 मार्च को भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव सरीखे क्रांतिकारियों का 'शहीदी दिवस' था। इस मौके पर दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान समेत 'आप' के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने 'जंतर-मंतर' पर विरोध-प्रदर्शन भी किया। बहरहाल पोस्टरकांड से दो बुनियादी सवाल उभरते हैं कि क्या प्रधानमंत्री मोदी वाकई तानाशाह, कायर, मनोरोगी हैं, जैसा कि 'आप' के नेता बयान दे रहे हैं? दूसरे, क्या पोस्टरबाजी के जरिए चुनाव जीता जा सकता है और 2024 का आम चुनाव 'मोदी बनाम केजरीवाल' होगा? दरअसल हम 'आप' की राजनीति से सहमत नहीं हैं, क्योंकि देश के प्रधानमंत्री के लिए इस्तेमाल की गई भाषा 'लोकतांत्रिक' नहीं है। दूसरे, 'मोदी बनाम केजरीवाल' का चुनावी समीकरण भी 'हास्यास्पद' है। लोकसभा में 'आप' का एक भी सांसद नहीं है। 2019 के आम चुनाव में 'आप' ने कुल 35 उम्मीदवार उतारे थे। उनमें से सिर्फ एक सीट पर भगवंत मान जीत पाए थे। उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद उस सीट पर उपचुनाव हुआ, जिसमें 'आप' हार गई।

जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई

भारत की प्राचीन जल संस्कृति को जीवंत करें

ललित गर्ग

> पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। पैकेट और बोतल बन्द पानी आज विकास के प्रतीकचिह्न बनते जा रहे हैं और अपने संसाधनों के प्रति हमारी लापरवाही अपनी मूलभूत आवश्यकता को बाजारवाद के हवाले कर देने की राह आसान कर रही है। विशेषज्ञों ने जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है, जिन्हें भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू-जल स्तर लगातार घट रहा है।

जल प्रदूषण एवं पीने के स्वच्छ जल की निरन्तर घटती मात्रा को लेकर बड़े खतरे खड़े हैं। धरती पर जीवन के लिये जल सबसे जरूरी वस्तु है, जल है तो जीवन है। जल ही किसी भी प्रकार के जीवन और उसके अस्तित्व को संभव बनाता है। जीव मंडल में पारिस्थितिकी संतुलन को यह बनाये रखता है। पीने, नहाने, ऊर्जा उत्पादन, फसलों की सिंचाई, सीवेज के निपटान, उत्पादन प्रक्रिया आदि बहुत उद्देश्यों को पूरा करने के लिये स्वच्छ जल बहुत जरूरी है। जिन पाँच तत्वों को जीवन का आधार माना गया है, उनमें से एक तत्व जल है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव एवं जीव-जन्तुओं के अलावा जल कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी बेहद आवश्यक है। परंतु आज पूरी दुनिया जल-संकट के साए में खड़ी है। अनियोजित औद्योगीकरण, बढ़ता प्रदूषण, घटते रेगिस्तान एवं ग्लेशियर, नदियों के जलस्तर में गिरावट, पर्यावरण विनाश, प्रकृति के शोषण और इनके दुरुपयोग के प्रति असंवेदनशीलता पूरे विश्व को एक बड़े जल संकट की ओर ले जा रही है। इसका उद्देश्य विश्व के सभी देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है साथ ही जल संरक्षण के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करना है। आप सोच सकते हैं कि एक मनुष्य अपने जीवन काल में कितने पानी का उपयोग करता है, किंतु क्या वह इतने पानी को बचाने का प्रयास करता है? दुनिया की आबादी आठ अरब से अधिक हो चुकी है। इसमें से लगभग आधे लोगों को साल में कम से कम एक महीने पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई है और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। पैकेट और बोतल बन्द पानी आज विकास के प्रतीकचिह्न बनते जा रहे हैं और अपने संसाधनों के प्रति हमारी लापरवाही अपनी मूलभूत आवश्यकता को बाजारवाद के हवाले कर देने की राह आसान कर रही है। विशेषज्ञों ने जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है, जिन्हें

भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू-जल स्तर लगातार घट रहा है। धरती पर सुरक्षित और पीने के पानी के बहुत कम प्रतिशत के आंकलन के द्वारा जल संरक्षण या जल बचाओ अभियान हम सभी के लिये बहुत जरूरी हो चुका है। औद्योगिक कचरे की वजह से रोजाना पानी के बड़े स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। जल को बचाने में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिये सभी औद्योगिक बिल्डिंगें, अपार्टमेंट्स, स्कूल, अस्पतालों आदि में बिल्डरों के द्वारा उचित जल प्रबंधन व्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिये। पीने के पानी या साधारण पानी की कमी के द्वारा होने वाली संभावित समस्या के बारे में आम लोगों को जानने के लिये जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये। जल की बर्बादी के बारे में लोगों के व्यवहार को मिटाने के लिये इसकी त्वरित जरूरत है। इसी सप्ताह संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में जल सम्मेलन आयोजित हो रहा है, जिसमें सभी के लिए जल और स्वच्छता उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण चर्चा होगी। पानी धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधारभूत आवश्यकता है। आबादी में वृद्धि के साथ पानी की खपत बेतहाशा बढ़ी है, लेकिन पृथ्वी पर साफ पानी की मात्रा कम हो रही है। जलवायु परिवर्तन और धरती के बढ़ते तापमान ने इस समस्या को गंभीर संकट बना दिया है। इस सम्मेलन में सरकार, उद्योग जगत और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के लिए लक्ष्य तो निर्धारित किये ही जायेगे, साथ ही आम लोगों को पानी बचाने के मुहिम से जोड़ने के लिए भी कारगर कार्ययोजना बनाने पर विचार होगा। दुनिया के कई हिस्सों की तरह भारत भी जल संकट का सामना कर रहा है। वैश्विक जनसंख्या का 18 प्रतिशत हिस्सा भारत में निवास करता है, लेकिन चार प्रतिशत जल संसाधन ही हमें उपलब्ध है। भारत में जल-संकट की समस्या से निपटने के लिये प्राचीन समय से जो प्रयत्न किये गये है, वे दुनिया के लिये मार्गदर्शक हैं। देश के सात राज्यों के 8220 ग्राम पंचायतों में भूजल प्रबंधनों के लिए अटल भूजल योजना चल रही है। स्थानीय समुदायों के नेतृत्व में चलने वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। साथ ही, नल से जल, नदियों की सफाई, अतिक्रमण हटाने जैसे प्रयास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे हैं। जल संरक्षण की दिशा में बड़ी पहल करते हुए केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने इस वर्ष जनवरी में राज्यों के जल मंत्रियों का सम्मेलन आयोजित किया था। अब यह सम्मेलन हर साल आयोजित किया जाएगा। इसके उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उचित ही रेखांकित किया कि सभी राज्यों को मिलकर काम करना होगा तथा जल संरक्षण एवं उपयोग किये गये पानी को फिर से इस्तेमान में लाने के उपाय करने होंगे। हमारे यहां जल बचाने के मुख्य साधन है नदी, ताल एवं कूप। इन्हें अपनाओं, रक्षा करो, अभय दो, इन्हें मरुस्थल के हवाले न करो। अन्तिम समय यही तुम्हारे जीवन और जीवनी को बचायेंगे। ख्यात पर्यावरणविद अनुपम मिश्र तो 'अब भी खरे है तालाब' कहते कहते स्वर्गस्थ हो गये। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व जल दिवस की मूल भावना को अपने दैनिक जीवन में उतारकर हर व्यक्ति, हर दिन जल संरक्षण का यथासंभव प्रयास करे। गाँव के स्तर पर लोगों के द्वारा बरसात के पानी को इकट्ठा करने की शुरुआत करनी चाहिये। उचित रख-रखाव के साथ छोटे या बड़े तालाबों को बनाने के द्वारा बरसात के पानी को बचाया जा सकता है। धरती के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है। परंतु, पीने योग्य जल मात्र तीन प्रतिशत है। इसमें से भी मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं। पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। जल का संकट एवं विकट स्थितियां अति प्राचीन समय से बनी हुई है।

देश को क्षति पहुंचाने वाले ढोंगी और दल

> भारत में धार्मिक आस्थाओं से खिलवाड़ करके देशद्रोह का काम करने वाले द्रोहियों की सूची काफी लंबी है। इसी खला में देश की सुरक्षा एजेंसियों को अभी तक इस्लाम के कथित उपदेशक जाकिर नाइक की तलाश है। जाकिर नाइक पर भारत में भडक़ाऊ भाषण देने, मनी लॉन्ड्रिंग करने और आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप है। मई 2019 में ईडी ने जाकिर नाइक के खिलाफ टेरर फंडिंग मामले में चार्जशीट दायर की थी। नाईक 2016 से भारत से बाहर है। उसके खिलाफ भारतीय एजेंसियो ने नोटिस जारी किया है। इसी तरह ईसाई धर्म की आड़ में धार्मिक आस्थाओं को भुना कर अपने नापाक मंसूबे पूरे करने के प्रयास के मामले में तमिलनाडु के कन्याकुमारी में एक रोमन कैथोलिक पादरी जॉर्ज पोन्नैया को गिरफ्तार किया गया था। पादरी पोन्नैया पर धार्मिक समूहों के बीच नफरत और दुश्मनी फैलाने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, डीएमके नेता एवं अन्य के खिलाफ विवादित टिप्पणी करने के आरोप लगे थे।

यह पहला मौका नहीं है जब धर्म की आड़ में हथियार जमा करके खालिस्तान समर्थक अमृतपाल जैसे स्वयंभू धार्मिक प्रचारक ने देश की एकता-अखंडता को चुनौती दी है। दरअसल ऐसे कथित बाबा और स्वयंभू पंथ प्रवर्तक जब तक राज्य और देश के लिए खतरा नहीं बन जाते तब तक पुलिस और अन्य एजेंसियां तमाशबीन बनी रहती हैं। धर्म के नाम पर होने वाले इस तरह के कारनामों से भारत की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खराब हुई है। राजनीतिक दल ऐसे मुद्दों पर वोट खिसकने के भय से मौन साधे रहते हैं। ऐसे ढोंगियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई अमल में तभी लाई जाती है, जब राजनीतिक दलों को इनसे खतरा सताने लगता है। इससे पहले इनकी सारी आपराधिक हरकतों पर सरकारें वोट बैंक खिसकने के भय से चुप्पी साधे रहती हैं। ऐसा ही खालिस्तान समर्थक और संगठन 'वारिस पंजाब दे' के प्रमुख अमृतपाल के मामले में हुआ। यह मुद्दा सिरदर्द बनने के बाद सरकारें बगलें झांकने लगी। धर्म की आड़ लेकर समानांतर सरकार चलाने का ख्वाब पालने वाले ऐसे कथित ढोंगियों को राजनीतिक दल शह देते आए हैं। जब पानी सिर से गुजरने लगता है, तब कारवाई की नौबत आती है। अमृतपाल ने जब सरेआम हथियारों के साथ प्रदर्शन किया, तब तक पुलिस कार्रवाई के लिए पंजाब सरकार का मुंह ताकती रही। केंद्र सरकार के चेतावनी देने पर खतरे की गंभीरता के मद्देनजर कानूनी कार्रवाई की पहल की गई। अमृतपाल से पहले भी दूसरे ऐसे दूसरे ढोंगी बाबाओं के मामलों में पुलिस, केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियां और राजनीतिक दल तब तक कार्रवाई करने से कतराते रहे जब तक वे देश या राज्य के लिए खतरा नहीं बन गए। अमृतपाल के अलावा चर्चित मामला ढोंग विद्या में माहिर नित्यानंद स्वामी का है। नित्यानंद की धोखाधड़ी की गूंज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुई। समय रहते हुए कार्रवाई नहीं करने से इससे भारत की छवि पर प्रतिकूल असर पड़ा है। नित्यानंद ने नागरिकों के अलावा अमरीकी सरकार को अपने फरेब के जाल में फांस लिया और यह विश्वास दिला दिया कि वह एक देश कैलाशा का सर्वेसर्वा है। इस आधार पर उसने 30 अमरीकी शहरों को ठग लिया। फर्जीवाड़े की इंतहा यह रही कि नित्यानंद संयुक्त राष्ट्रसंघ तक पहुंचने में कामयाब हो गया। इस दौरान भारत और अमरीका की सुरक्षा एजेंसियां सोती रही। शातिर नित्यानंद के हथकंडों का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कागजी देश कैलाशा का प्रतिनिधित्व करते हुए उसकी एक महिला प्रतिनिधि सबकी आंखों में धूल झोंकते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ में ऑनलाइन भारत के खिलाफ भाषण तक दे आई। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र की नींद खुली। भारत में धार्मिक आस्थाओं से खिलवाड़ करके देशद्रोह का काम करने वाले द्रोहियों की सूची काफी लंबी है। इसी खला में देश की सुरक्षा एजेंसियों को अभी तक इस्लाम के कथित उपदेशक जाकिर नाइक की तलाश है। जाकिर नाइक पर भारत में भडक़ाऊ भाषण देने, मनी लॉन्ड्रिंग करने और आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप है। मई 2019 में ईडी ने जाकिर नाइक के खिलाफ टेरर फंडिंग मामले में चार्जशीट दायर की थी। नाईक 2016 से भारत से बाहर है। उसके खिलाफ भारतीय एजेंसियो ने नोटिस जारी किया है। इसी तरह ईसाई धर्म की आड़ में धार्मिक आस्थाओं को भुना कर अपने नापाक मंसूबे पूरे करने के प्रयास के मामले में तमिलनाडु के कन्याकुमारी में एक रोमन कैथोलिक पादरी जॉर्ज पोन्नैया को गिरफ्तार किया गया था। पादरी पोन्नैया पर धार्मिक समूहों के बीच नफरत और दुश्मनी फैलाने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, डीएमके नेता एवं अन्य के खिलाफ विवादित टिप्पणी करने के आरोप लगे थे। ऐसा ही एक मामले में खुद को ईसा मसीह का पैगंबर बताकर भविष्य में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करने का दावा करने वाले ठग पादरी बजिंदर सिंह को 2017 में अपनी ही फॉलोवर लडक़ी से दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। बजिंदर हत्या के मामले में जेल भी गया। कथित धर्म गुरुओं ने कई बार लोगों की जान खतरे में डाली है। मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के नयापुरा इलाके में कोरोना को चूम कर भगाने का दावा करने वाले मौलवी या इस्लामिक धर्मगुरु असलम कोरोना से संक्रमित पाया गया था, जिसके कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके सम्पर्क में आए 19 लोगों में से 4 की मौत हो गई। रेप और मर्डर के संगीन मामले में सजा काट रहे गुरमीत राम रहीम का प्रकरण पुराना नहीं है। डेरा प्रमुख 2017 से हरियाणा की सुनारिया जेल में बंद है, जहां वह सिरसा में अपने आश्रम के मुख्यालय में दो महिला शिष्यों से बलात्कार के आरोप में 20 साल की सजा काट रहा है। उसकी गिरफ्तारी पर पंचकूला और सिरसा में दंगे हुए और 38 लोगों की मौत हो गई। डेरा प्रमुख को राजनीतिक कारणों से पैरोल पर रिहा किए जाने के आरोप लगे। गुजरात निवासी आसाराम बापू की गिरफ्तारी पर भी राजनीतिक दलों ने खूब शोर मचाया। आसाराम पर छेडख़ानी, हत्या, जान से मारने की धमकी और दुष्कर्म करने का आरोप है। कुटिया में छात्रा से दुष्कर्म के आरोप में आसाराम जोधपुर जेल में बंद है। देश और समाज विरोधी कार्रवाई में लिप्त रहे इन पाखंडी बाबाओं और धर्म के ठेकेदारों को अंदाजा होता है कि राजनीतिक दल और सरकार वोट बैंक खिसकने के डर से आसानी से उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करेंगे। यदि सरकार ने ऐसा कोई प्रयास किया तो उनके समर्थक बवाल मचा देंगे। इसी आड़ में वे न केवल समर्थकों की फौज खड़ी कर लेते हैं, बल्कि यहां तक कि हथियारों का जखीरा भी जमा करने से नहीं हिचकिचाते। यही कारण है कि ऐसे ढोंगियों को कानून की परवाह नहीं होती। ऐसा नहीं है कि पुलिस और खुफिया एजेंसियों को इनकी करतूतों की जानकारी नहीं होती। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों के हाथ बंधे होते हैं। सत्तारूढ़ दल की स्वीकृति के बगैर कोई कानूनी कार्रवाई सम्भव नहीं होती। अमृतपाल सहित दूसरे ऐसे सरगना सरकारों की ऐसी कमजोरियों का फायदा उठाते हुए सिर उठाते रहे हैं। जब तक राजनीतिक दल और सरकारें देश को नुकसान पहुंचाने वाले ऐसे अपराधियों के मामले में वोट बैंक की राजनीति से परे जाकर कार्रवाई नहीं करेंगी, तब तक लोगों की धार्मिक आस्था की आड़ में देशविरोधी कृत्य करने वालों को मौका मिलता रहेगा। ऐसे दलों और सरकार को अब समय रहते सचेत हो जाना चाहिए।

देश दुनीया से

आत्मनिर्भर अस्तित्व के लिए

आत्मनिर्भर पर्वतीय राज्य को अपने प्राकृतिक संसाधनों के लिए लडऩा और राष्ट्रीय अनुपात पर जमी बर्फ को अपने पक्ष में हटाने को संघर्ष करना ही पड़ेगा। हिमाचल ने वाटर सेस के जरिए अपनी आर्थिकी के आत्मबल को जिस पटरी पर रखा है, वहां पंजाब व हरियाणा की मूंछें तनी हुई नजर आ रही हैं। आश्चर्य यह कि जो पंजाब कल तक हिमाचल की नदियों से निकले पानी की बूंदों पर हरियाणा के अधिकार पर ताला लगाने की हर मुमकिन कोशिश करता रहा है, उसे भी हिमाचल के आत्मनिर्भर अस्तित्व पर एतराज है। यह जलविवाद नहीं है और न ही पंजाब पुनर्गठन की आत्मा से कोई धोखा। सबसे पहले तो यही कि किसी सरकार ने पानी में बहती आर्थिकी को निचोडऩे की हिम्मत दिखाई है। अगर गौर से देखें तो पर्वतीय राज्यों को समझने में केंद्रीय नीतियों का भी दोष रहा है। आज तक न तो पानी को कच्चा माल स्वीकार करके रायल्टी तय हुई और न ही पर्वतीय जिम्मेदारियों व लेनदारियों के एवज में केंद्र सरकारों ने न्याय किया। हिमाचली अधिकारों की बात सर्वप्रथम शांता कुमार ने दिल्ली मार्च के माध्यम से उठाई थी, तो प्रेम कुमार धूमल के समय में आया औद्योगिक पैकेज एक खूबसूरत पैगाम रहा। विद्युत उत्पादन में मिलने वाली मुफ्त बिजली जरूर एक सांचे की तरह हिमाचल को आश्रय देती है, लेकिन आगे बढने के लिए इनसाफ की डगर पानी से निकलेगी या जंगल के बदले वित्तीय भरपाई का कोई फार्मूला ढूंढना पड़ेगा। आश्चर्य यह कि हिमाचल वाटर सेस उन विद्युत इकाइयों से हासिल करना चाहता है जो प्रदेश की धरती पर स्थापित होने के बदले पहले ही हजारों लोगों को उजाड़ चुकी हैं। यह कैसे संभव हो सकता है कि उजड़े तो हिमाचल, लेकिन मालामाल केवल पड़ोसी राज्य ही होते रहें। पौंग डैम का ही उदाहरण लें, तो इससे एक यूनिट बिजली भी हिमाचल को नहीं मिली। यह कैसा दस्तूर कि सतलुज, ब्यास या रावी में बाढ़ आए तो हमारी, लेकिन इसके बदले पड़ोसी राज्यों के अधिकार बरकरार रहेंगे। आज भी पंजाब पुनर्गठन की लकीरों में फंसे हिमाचल का 7.19 प्रतिशत हिस्सा इसलिए गुम है क्योंकि न तो प्रदेश सरकारों ने संघर्ष को अंजाम तक पहुंचाया है और न ही केंद्र ने ईमानदारी से प्रदेश के साथ इनसाफ किया। अब तो पर्वतीय राज्यों की वित्तीय मदद से पूरी तरह 90:10 की औसत से योजनाओं-परियोजनाओं के पोषण से भी केंद्र न-नुकर करने लगा है। स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में वित्तीय पोषण की 50:50 प्रतिशत की शर्त से हिमाचल का शहरी विकास अवरुद्ध हुआ है। पड़ोसी राज्यों से जमीन जैसे मसले अगर नहीं सुलझे तो इसलिए भी कि केंद्र ने हमें महत्त्व ही नहीं दिया या हमारा प्रतिनिधित्व संसद में सोया रहा। देश के लिए कुर्बानियों का इतिहास रचने वाले हिमाचल को न तो सैन्य संस्थान मिले और न ही आज तक राष्ट्रीय निर्माण योजनाओं में पूर्ण अधिकार मिले। सिर्फ एक बार जब अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने राज्य को औद्योगिक पैकेज दिया था, तब लगने लगा था कि इसके मार्फत प्रदेश आर्थिक आधार पर खड़ा हो पाएगा, लेकिन बड़े राज्यों के विरोध के कारण यह भी अधूरे संकल्प के साथ समाप्त हो गया। हमारा मानना है कि प्रदेश को आर्थिक तौर पर आगे बढने के लिए सबसे पहले उस ताक-झांक को छोडऩा होगा, जो केवल केंद्रीय रहमोकर्म पर पल्लवित होती रही है। दूसरी ओर वित्तीय संरचना के आर्थिक संचार के लिए कठिन विकल्प चुनने होंगे और तीसरे युवा पीढ़ी को गैर सरकारी सोच व स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बनने का माहौल व प्रोत्साहन देना होगा। एक पानी पर सेस लगा कर हिमाचल को पता चल गया कि उसे 'पप्पू' बना कर रखने वाली प्रवृत्तियां किस तरह व्यवहार करती हैं। हमें आत्मनिर्भर होने के लिए एक नई जमीन व वातावरण चाहिए और यह केवल जंगलों की मिलकीयत से मिलेगा। हम प्रदेश की 70 फीसदी जमीन जंगलों को देकर हासिल क्या कर रहे हैं? सिर्फ यही कि चारे की कमी ने पशुओं को आवारा बना दिया या बंदरों ने जंगल से बाहर निकल कर हमारा जीवन उजाड़ दिया। जो पंजाब-हरियाणा जंगल के लिए मात्र चार फीसदी जमीन ही दे रहे हैं, उनका आर्थिक आधार हमसे बेहतर होगा, लेकिन मात्र तीस फीसदी जमीन की पात्रता में हिमाचल के हाथ क्यों बंधे रहे।

> वित्तीय संरचना के आर्थिक संचार के लिए कठिन विकल्प चुनने होंगे और तीसरे युवा पीढ़ी को गैर सरकारी सोच व स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बनने का माहौल व प्रोत्साहन देना होगा। एक पानी पर सेस लगा कर हिमाचल को पता चल गया कि उसे 'पप्पू' बना कर रखने वाली प्रवृत्तियां किस तरह व्यवहार करती हैं। हमें आत्मनिर्भर होने के लिए एक नई जमीन व वातावरण चाहिए और यह केवल जंगलों की मिलकीयत से मिलेगा। हम प्रदेश की 70 फीसदी जमीन जंगलों को देकर हासिल क्या कर रहे हैं।

नागरिक बोध

बेमौसम बारिश से कई राज्यो में किसानों को तैयार फसलों का नुकसान

बेमौसम बारिश से देश मे अनेक राज्यो में तैयार फसलों पर बारिश और ओलावृष्टि के कारण करोड़ो का नुकसान हुआ है।कुदरत ने निवाला छीन लिया है।किसानों की फसलों को सही कीमत नही मिलने से फसलों को बर्बाद कर रहे है। उपर से मौसम की मार से किसानों की कमर टूटती जा रही है। पिछले दिनों साथ राज्यो में बारिश से फसलों को नुकसान हुआ है।किसानों की चिंता बढ़ गई है। किसानों की माली हालत ठीक नही है। कर्ज में डूबे किसानों पर बेमौसम बारिश की मार से तैयार फसल सड़ गल गई है। तमाम राज्यो में लगभग 21 लाख हेक्टेयर भूमि पर फसल खराब हुई है। किसानों को मुआवजा नही मिलता है तो उनको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। कुदरत के समक्ष लाचार हरकोई फसलों के नुकसान को लेकर चिंतित है।ओलावर्ष्टि और बारिश से जनजीवन भी प्रभावित हुआ है वही राजस्थान,पंजाब, हरियाणा,छतीसगढ़, बिहार,उत्तरप्रदेश और महारास्ट्र में फसल नष्ठ हुई है। कई राज्यो में आंधी,बारिश और ओलावृष्टि की चेतावनी आगामी दिनों में दी गई है। मौसम विभाग ने यूपी में तीन दिन अलर्ट रहने की चेतावनी दी है। बरेली और आसपास के क्षेत्रों में बारिश के कारण मौसम में ठंड पसर गई है। अनेक राज्यो में आगामी 26 तक ओले और बारिश के साथ आंधी आने की चेतावनी मौसम विभाग के द्वारा दी गई है। किसानों के नुकसान का मुआवजा किसी राज्य ने अभी तक नही दिया है। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी तीन दिनों में किसानों के नुकसान का मुआवजा देने का आदेश जारी किया है। किसान पहले से आर्थिक संकट झेल रहे है। उसके ऊपर बेमौसम बारिश से किसानों का जीना दुस्वार कर दिया है। बारिश से नष्ट हुई फसलों के लिए सरकार किसानों की मदद कर मुआवजा राशि अदा की जाए।

गांधीवादी विचारधारा के साथ विश्वासघात : राहुल की सजा पर आया अमेरिकी सांसद का बयान

वॉशिंगटन ।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की सजा और फिर लोकसभा सदस्यता जाने के मुद्दे पर जहां भारत में पूरा विपक्ष बिफर गया है, वहीं इसे लेकर अब संयुक्त राष्ट्र से लेकर अमेरिकी सांसद तक के बयान सामने आए हैं। भारतीय मूल के प्रभावशाली अमेरिकी सांसद रो खन्ना ने राहुल गांधी को लोकसभा सदस्यता से अयोग्य घोषित किए जाने के फैसले को गांधीवादी विचारधारा के साथ 'गहरा विश्वासघात' करार दे दिया।

क्या बोले अमेरिकी सांसद

रो खन्ना ने ट्वीट किया, राहुल गांधी को संसद की सदस्यता से अयोग्य ठहराया जाना गांधीवादी दर्शन और भारत के गहरे मूल्यों के साथ गहरा विश्वासघात है। उन्होंने कहा, यह वह नहीं है, जिसके लिए मेरे दादाजी ने अपनी जिंदगी के कई साल जेल में कुर्बान कर दिए थे। रो खन्ना अमेरिका की प्रतिनिधि सभा में सिलिकॉन वैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह भारत और भारतीय-अमेरिकियों पर अमेरिकी संसद के कॉकस के सह-अध्यक्ष हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से इस मामले में हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

रो खन्ना ने एक अन्य ट्वीट में कहा, भारतीय लोकतंत्र के हित के लिए आपके पास इस फैसले को पलटने की शक्ति है। वहीं, अमेरिका में इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के उपाध्यक्ष जॉर्ज अब्राहम ने राहुल की अयोग्यता को भारत में लोकतंत्र के लिए एक दुखद दिन करार दिया। उन्होंने कहा, यह भारत में लोकतंत्र के लिए एक दुखद दिन है। राहुल गांधी को अयोग्य ठहराकर, मोदी सरकार हर जगह अभिव्यक्ति की आजादी और भारतीयों की आजादी के अधिकार के लिए मौत की घंटी बजा रही है।

सजा पर आ चुका है यूएन का बयान

राहुल गांधी को सूरत कोर्ट की ओर से सुनाई गई सजा का मामला यूएन तक पहुंच चुका है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंटोनियो गुटेरेस के प्रवक्ता फरहान हक का इस मसले पर शुक्रवार को ही बयान आया था। उन्होंने कहा था कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को दो साल की जेल की सजा और कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ उनकी पार्टी द्वारा अपील करने की खबरों से संयुक्त राष्ट्र अवगत है।

न्यूज ब्रीफ

अफगान छात्राओं के स्कूल जाने से रोकने पर दुखी हुईं उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, बोलीं- अमेरिका लड़कियों के साथ

वाशिंगटन । अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस अफगानिस्तान में लड़कियों की माध्यमिक विद्यालय में

उपस्थिति पर प्रतिबंध लगाए जाने से दुखी है। हैरिस ने ट्विटर पर कहा, दुनिया भर की लड़कियों और महिलाओं के अधिकारों के लिए अमेरिका अपना समर्थन करना बंद नहीं करेगा। अमेरिका पहले भी अफगान महिलाओं की स्थिति के बारे में चिंता व्यक्त कर चुका हैं। बता दें कि, अफगानिस्तान में तालिबान सरकार ने 6 से 12 तक की छात्राओं को अपनी कक्षाओं में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि हिंसा का सामना कर रही अफगानिस्तान की महिलाओं के साथ अमेरिका खड़ा है। वहीं, अमेरिका के उप विदेश मंत्री ने भी तालिबान से महिलाओं और लड़कियों को अपने बुनियादी मानवाधिकारों का प्रयोग करने की अनुमति देना का आह्वान किया। तालिबान के अनुसार, महिलाओं के अधिकार अफगानिस्तान का एक आंतरिक मुद्दा है और विदेशी देशों को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इस्लामिक अमीरात के प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद ने कहा, उन्हें अफगानिस्तान के संबंध में अपनी जिम्मेदारियों को समझना चाहिए। इससे पहले पीएम ऋषि सुनक ने ट्वीट किया था कि बेटियों के पिता के रूप में, मैं ऐसी दुनिया की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें उन्हें शिक्षा से वंचित रखा गया हो। अफगानिस्तान की महिलाएं इस दुनिया को बहुत कुछ दे सकती हैं। उन्हें विश्वविद्यालय तक पहुंच से वंचित करना एक गंभीर कदम है। हम तालिबान को उनके कार्यों से आंकेंगे।

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री का बड़ा बयान, बोले- वित्त मंत्रालय के पास चुनाव कराने के पैसे ही नहीं हैं

इस्लामाबाद । पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ का कहना है कि देश के वित्त मंत्रालय के

पास चुनाव कराने के पैसे ही नहीं हैं। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय मीडिया को एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान ख्वाजा आसिफ ने ये बात कही। ख्वाजा आसिफ का यह बयान पाकिस्तान के चुनाव आयोग के उस फैसले के बाद आया है, जिसमें चुनाव आयोग ने पाकिस्तानी पंजाब में होने वाले प्रांतीय चुनाव को स्थगित करने का आदेश दिया है। देश में कानून व्यवस्था की खराब स्थिति का हवाला देते हुए चुनाव आयोग ने यह कदम उठाया है। जिसका इमरान खान की पार्टी द्वारा विरोध किया जा रहा है। बता दें कि पाकिस्तान की तहरीक ए इंसाफ पार्टी की तत्कालीन सरकारों ने 14 और 18 जनवरी को खैबर पख्तूनख्वा प्रांतों की विधानसभाओं को भंग कर दिया था। इसके बाद एक मार्च को पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने विधानसभा भंग होने के 90 दिनों दोनों राज्यों में चुनाव कराने का आदेश दिया था। इसके तहत अप्रैल में पंजाब और मई में खैबर पख्तूनख्वा में चुनाव होने थे लेकिन अब चुनाव आयोग ने अक्टूबर तक चुनाव टाल दिए हैं। इस पर ख्वाजा आसिफ का बयान कि चुनाव कराने के पैसे नहीं हैं, साफ इशारा कर रहे हैं कि पाकिस्तान की पीएमएलएन सरकार फिलहाल चुनाव नहीं कराना चाहती और इसे इमरान खान के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। ख्वाजा आसिफ ने पीटीआई चीफ इमरान खान पर प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि इमरान ने पूर्व आर्मी चीफ कमर जावेद बाजवा का कार्यकाल बढ़ाया और बाद में सत्ता से बाहर होने के बाद बाजवा पर ही उन्हें सत्ता से बाहर करने के आरोप लगाए।

अमेरिका-ईरान के बीच जंग का मैदान बना सीरिया! एयर स्ट्राइक के बाद बाइडन ने दी चेतावनी- हम नहीं रुकने वाले

वॉशिंगटन/दमिश्क। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने ईरान को चेतावनी दी है और कहा है कि वह अमेरिकी

नागरिकों को बचाने के लिए कड़ी कार्रवाई करेंगे। बता दें कि बाइडन का यह बयान अमेरिका द्वारा ईरान समर्थित सुरक्षाबलों के खिलाफ सीरिया में एयर स्ट्राइक के बाद आया है। वहीं सीरिया में ही अमेरिका के ठिकाने पर हुए एक ड्रोन हमले में एक अमेरिकी कॉन्ट्रैक्टर की मौत और पांच अमेरिकी सैनिक घायल हो गए थे। अमेरिका ने इसका आरोप ईरान पर लगाया है। अमेरिका ने ईरान समर्थित ताकतों के ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की। जिसमें अमेरिका के एफ-15 जेट्स ने ईरान के इस्लामिक रेवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स से संबंधित संगठनों के दो ठिकानों पर हमले किए। सीरिया में मानवाधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था का दावा है कि इस अमेरिका हमले में आठ ईरान समर्थित लड़ाके मारे गए हैं। हालांकि ईरान के सरकारी टीवी ने दावा किया है कि इस हमले में कोई हताहत नहीं हुआ है।

जयशंकर बोले- ब्रिटेन ने जिम्मेदारी नहीं निभाई

हाई कमीशन तोड़फोड़ पर विदेश मंत्रालय ने कहा- आश्वासन नहीं एक्शन चाहिए ; सैन फ्रांसिस्को में भारतीयों की रैली

लंदन/सैन फ्रांसिस्को।

लंदन में भारतीय हाई कमीशन में तोड़फोड़ और तिरंगा उतारने के मामले में विदेश मंत्री एस जयशंकर का बयान सामने आया है। जयशंकर ने ब्रिटिश सरकार को सुरक्षा में चूक के लिए जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा- च सरकार सुरक्षा दायित्वों को पूरा करने में विफल रही है। जयशंकर ने कहा- जिस देश में ऐंबैसी या हाई कमीशन होता है, उस देश की ये जिम्मेदारी होती है कि वहां डिप्लोमैट्स को काम करने के लिए सुरक्षा दी जाए। हाई कमीशन कैंपस की सेफ्टी का ध्यान रखा जाए। लेकिन ब्रिटिश सरकार ऐसा करने में विफल रही है। हम इस पर उनसे बातचीत कर रहे हैं। वहीं सैन फ्रांसिस्को में इंडियन कॉन्सुलेट के सामने भारतीयों ने एक रैली निकाली। इस दौरान लोग भारतीय और अमेरिकी झंडों के साथ नाचते दिखे। वहीं बैरिकेडिंग की दूसरी तरफ खालिस्तानी समर्थक भी झंडे लिए नजर आए।

जयशंकर बोले- ऐसा व्यवहार स्वीकार नहीं – बेंगलुरु में एक युवा संवाद को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि कुछ देशों का अपने नागरिकों की सुरक्षा को लेकर अलग रवैया होता है और दूसरे देशों के लोगों को लेकर अलग रवैया। लेकिन बतौर विदेश मंत्री मैं इस तरह का व्यवहार स्वीकार नहीं करूंगा। वहीं विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा- हमें सिर्फ आश्वासन नहीं एक्शन चाहिए। सैन फ्रांसिस्को में इंडियन कॉन्सुलेट पर हमले के चलते एक कार्यक्रम रद्द किया गया। हमने इस बारे में कनाडा के अधिकारियों से बात की

है।

इंडियन हाई कमीशन पर विशाल तिरंगा फहराया गया – इससे पहले 22 मार्च को लंदन में इंडियन हाई कमीशन के बाहर फिर 2 हजार से ज्यादा खालिस्तान समर्थकों ने प्रदर्शन किया था। हालांकि, इस बार लंदन की मेट्रो पुलिस ने यहां सिक्योरिटी के सख्त इंतजाम किए थे। इंडियन हाई-कमीशन की इमारत पर बुधवार को पहले से बड़ा तिरंगा फहराया गया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को बिल्डिंग से कुछ दूरी पर रोक दिया।

हमले के बाद से हाई-कमीशन के बाहर सुरक्षा बढ़ी – पिछले हमले के बाद हाई-कमीशन के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। प्रदर्शनकारियों में से कई के हाथ में खालिस्तानी झंडे थे। इस घटना को लेकर ब्रिटिश विदेश मंत्री ने भरोसा जताया था कि वे उच्चायोग की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाएंगे। ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवर्ली ने कहा था- लंदन में इंडियन हाई-कमीशन के स्टाफ पर हमले बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे। हम लंदन में इंडियन हाई-कमीशन और नई दिल्ली में भारत सरकार के संपर्क में हैं। हम इंडियन हाई-कमीशन में सुरक्षा की समीक्षा कर रहे हैं। यहां मौजूद स्टाफ की सुरक्षा के लिए जरूरी बदलाव किए जाएंगे।

क्या हुआ था लंदन में – खालिस्तानी समर्थक अमृतपाल सिंह के खिलाफ पंजाब पुलिस कार्रवाई कर रही है। 19 मार्च को इसका विरोध लंदन में मौजूद कुछ खालिस्तान समर्थकों ने किया। खालिस्तानी लंदन में भारतीय हाई कमीशन पहुंचे। पहले तोड़फोड़ की और बाद में यहां लगा तिरंगा उतार दिया। भारत ने इस पर सख्त एतराज जताया। दिल्ली में ब्रिटिश हाई कमिश्नर को तलब किया गया। इस बीच, हाई कमीशन पर अब पहले से ज्यादा बड़ा तिरंगा लगा दिया गया। लंदन में भारत के हाई कमीशन पहुंचे लोगों के हाथ में खालिस्तानी झंडा और अमृतपाल सिंह के पोस्टर थे। पोस्टर्स पर लिखा, फ्री अमृतपाल सिंह (अमृतपाल सिंह को आजाद करो), वी वॉन्ट जस्टिस (हमें न्याय चाहिए) और वी स्टैंड विथ अमृतपाल सिंह (हम अमृतपाल के साथ हैं)। इंडियन डिप्लोमैट्स ने हमले के कुछ ही देर बाद पहले से ज्यादा बड़ा तिरंगा हाई कमीशन पर लगा दिया था। लंदन स्थित भारतीय हाई कमीशन के बाहर तिरंगे का अपमान करने वाले खालिस्तानी समर्थक अवतार सिंह खंडा को ब्रिटेन में गिरफ्तार कर लिया गया। खंडा प्रतिबंधित ग्रुप बब्बर खालसा इंटरनेशनल का सदस्य है। वहीं पंजाब में चल रही जांच में भी सामने आ रहा है कि खंडा ही अमृतपाल का हैंडलर है। रविवार को अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में इंडियन कॉन्स्यूलेट के बाहर प्रदर्शन करते खालिस्तान समर्थक। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लंदन के बाद अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में भी इंडियन कॉन्स्यूलेट पर हमला किया गया था। 19 मार्च को यहां भी खालिस्तान समर्थक जुटे। इन लोगों ने स्प्रे पेंट्स से अमृतपाल को रिहा करो.. लिख दिया। इन लोगों ने कॉन्स्यूलेट के गेट तोड़ दिए। वहां खालिस्तान के झंडे लगा दिए। भारतीय अमेरिकियों ने हमलावरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

लंदन में भारतीयों ने दिखाई एकजुटता – भारतीयों ने मंगलवार को भारतीय हाई कमीशन के बाहर इकट्ठे होकर एकजुटता का संदेश दिया और खालिस्तान समर्थकों का विरोध किया। इस दौरान भारत माता की जय और जय हिंद के नारे गूंजते रहे। प्रदर्शन कर रहे लोग भारतीय फिल्म स्लमडॉग मिलेनियर के ऑस्कर विनिंग सॉन्ग 'जय हो' पर झूमते दिखे। वहीं, माहौल तब खुशनुमा नजर आया, जब एक ब्रिटिश पुलिस अफसर एक भारतीय लड़की के साथ डांस करता दिखा। अफसर लड़की से डांस मूव सीख रहा था।

होगी मौत और तबाही

रिश्वत मामले में जांच के बीच डोनाल्ड ट्रंप ने दी चेतावनी, समर्थकों से की यह अपील

वॉशिंगटन ।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी है कि अगर एडल्ट फिल्म में काम करने वाली स्टॉर्मी डेनियल को पैसे देने के मामले में उन्हें दोषी ठहराया गया तो यह संभावित मौत और विनाश का कारण बनेगा। बता दें कि ट्रंप के निजी वकील की ओर से 2016 में एक पोर्न स्टार को रिश्वत देने के मामले में न्यूयॉर्क में जांच रही है। ट्रंप ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की जब करीब एक सप्ताह पहले उन्होंने दावा किया था कि उन्हें इस मामले में गिरफ्तार किया जाएगा। ऐसी स्थिति में उन्होंने अपने समर्थकों से प्रदर्शन के लिए तैयार रहने को कहा था।

पूर्व राष्ट्रपति बोले- यह सभी को पता है कि कोई अपराध नहीं किया गया – उन्होंने कहा, किस तरह का व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति पर आरोप लगा सकता है, इस मामले में अमेरिका के एक ऐसे पूर्व राष्ट्रपति पर आरोप लग रहे हैं, जिसे इतिहास में अब किसी भी राष्ट्रपति की तुलना में अधिक वोट मिले हैं और वर्ष 2024 के चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी के नामांकन के लिए अग्रणी उम्मीदवार (अब तक!) है। उन्होंने कहा, यह सभी को पता है कि कोई अपराध नहीं किया गया है और यह भी पता है कि इस तरह के झूठे आरोप में संभावित मौत और विनाश हमारे देश के लिए घातक हो सकता है ट्रंप ने अपने ट्रूथ सोशल प्लेटफॉर्म पर यह बात कही।

मैनहट्टन के जिला अटॉर्नी एल्विन ब्रैग पर टिप्पणी करते रहे हैं ट्रंप – इस बीच 2024 में फिर से व्हाइट हाउस के लिए दावेदारी पेश कर रहे पूर्व राष्ट्रपति ने मैनहट्टन के जिला अटॉर्नी एल्विन ब्रैग को बार-बार फटकार लगाई है। ब्रैग पोर्न स्टार को पैसे देने के मामले की जांच की अभियोजक के तौर पर देखरेख कर रहे हैं। ताजा बयान देने के कुछ घंटे पहले ट्रंप ने एक लेख पोस्ट किया था जिसमें एक तस्वीर थी जिसमें एक तरफ बेसबॉल का बल्ला पकड़े पूर्व राष्ट्रपति की तस्वीर और दूसरी तरफ ब्रैग की तस्वीर दिखाई गई थी। राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप की हार के बाद समर्थकों ने यूएस कैपिटल पर किया था हमला जो बाइडेन की राष्ट्रपति चुनाव में जीत की पुष्टि को रोकने की कोशिश करने के लिए 6 जनवरी 2021 को ट्रम्प समर्थकों की भीड़ के यूएस कैपिटल पर हमला कर दिया था।

भारत में अमेरिका के नए राजदूत बने एरिक गार्सेटी, उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने दिलाई शपथ

वाशिंगटन ।

लॉस एंजिल्स के पूर्व मेयर एरिक गार्सेटी भारत में अमेरिका के नए राजदूत बन गए हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने एरिक गार्सेटी को भारत में अमेरिका के राजदूत के रूप में औपचारिक शपथ दिलाई। भारत में अमेरिकी राजदूत का पद पिछले दो साल से खाली था। अमेरिकी सीनेट ने इस महीने की शुरुआत में भारत में अमेरिका के अगले राजदूत के रूप में गार्सेटी के नामांकन की पुष्टि की थी। इससे भारत में दो साल से अधिक समय से रिक्त पड़े अमेरिकी राजदूत के पद पर गार्सेटी की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया था।

शपथ समारोह के बाद अपनी नई राजनयिक भूमिका के बारे में पूछे जाने पर गार्सेटी ने कहा, मैं इस पद पर सेवाएं देने को लेकर उत्सुक हूं। शपथ समारोह में गार्सेटी की पति एमी वेकलैंड, पिता गिल गार्सेटी, मां सुके गार्सेटी, सास डी वेकलैंड और परिवार के कई अन्य करीबी सदस्य शामिल हुए।

कौन हैं एरिक गार्सेटी

एरिक गार्सेटी का जन्म चार फरवरी 1971 को लॉस एंजिल्स में हुआ। एरिक एक अच्छे फोटोग्राफर, जैज पियानिस्ट और कंपोजर हैं। वह अमेरिकी नेवी के रिजर्व इंफॉर्मेशन डोमिनेंस कॉर्प्स में लेफ्टिनेंट रह चुके हैं। 2013 में पहली बार उन्होंने लॉस एंजिल्स के मेयर का चुनाव लड़ा था और जीत हासिल की थी। 2017 में दोबारा मेयर बने। इसके पहले 2006 से 2012 तक वह लॉस एंजिल्स सिटी काउंसिल के प्रेसिडेंट भी रह चुके हैं। मेयर चुने जाने से पहले वह और उनका परिवार इको पार्क में रहता था। एरिक को बाइडेन का करीबी माना जाता है। 50 साल के एरिक राष्ट्रपति चुनाव में जो बाइडेन के चुनाव अभियान का हिस्सा थे।

सऊदी अरब भी बिना शर्त नहीं देगा ऋण, कंगाली की कगार पर खड़े पाकिस्तान का क्या आगे होगा?

इस्लामाबाद ।

आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान के लिए परेशानियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। आईएमएफ की वित्तीय मदद पहले ही रुकी हुई थी कि अब सऊदी अरब ने इस्लामाबाद को बिना शर्त ऋण देने से इनकार कर दिया है। वहीं, हाल में आई संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान में 2022 में आई विनाशकारी बाढ़ के छह महीने बाद भी एक करोड़ से अधिक लोगों को, सुरक्षित जल व स्वच्छता उपलब्ध नहीं है। ऋण को लेकर पाकिस्तान की नई मुसीबत क्या है सऊदी ने बिना शर्त ऋण देने से इंकार क्यों किया संकट का असर क्या पड़ रहा है संकट से उबरने के लिए सरकार क्या कर रही है

ऋण को लेकर पाकिस्तान की नई मुसीबत क्या है – संकट से

उबरने के लिए पाकिस्तान अपने मित्र देश सऊदी अरब से ऋण की आस लगाए बैठा था। लेकिन इसने पाकिस्तान को कोई राहत पैकेज या ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करने से इनकार कर दिया है। इस फैसले से सरकार भी झटके में है। वित्त मंत्री को यह कहना पड़ा कि यहां तक कि मित्र देश भी पाकिस्तान को उसके आर्थिक आपातकाल से बाहर निकालने में मदद करने के इच्छुक नहीं हैं। हाल ही में पाकिस्तानी सेना प्रमुख ने सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान से मुलाकात करने के लिए दौरा किया था। लेकिन वो भी देश के लिए आपातकालीन फंडिंग जारी करने के लिए राजी नहीं कर सके।जनवरी में दावोस में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में ही सऊदी अरब के वित्त मंत्री मोहम्मद अल-जदान ने सरकार की नई नीति को स्पष्ट कर दिया था। पाकिस्तान को लेकर एक बयान में उन्होंने कहा था, हम बिना किसी शर्त के सीधे अनुदान और जमा राशि देते थे लेकिन अब हम इसे बदल रहे हैं। आगे उन्होंने कहा था कि हम अपने लोगों पर कर लगा रहे हैं, हम दूसरों से भी ऐसा ही करने की उम्मीद कर रहे हैं। हम मदद करना चाहते हैं लेकिन हम चाहते हैं कि आप भी अपने हिस्से का प्रयास करें। हालांकि, पाकिस्तान सऊदी अरब के लिए नया नहीं है इससे पहले जॉर्डन, मोरक्को और यहां तक कि मिस्र को भी वित्तीय सहायता देने से सऊदी अरब इनकार कर चुका है। इस बीच, पाकिस्तान भारी नकदी संकट से जूझ रहा है। वह वॉशिंगटन स्थित वैश्विक ऋणदाता से 1.1 अरब डॉलर के वित्तपोषण की किस्त का इंतजार कर रहा है।

ईरान के बाद अब सीरिया से रिश्ते बनाएगा सऊदी

ईद के बाद खुल सकती हैं ऐंबैसी, अरब लीग में असद की वापसी मुमकिन

दमिश्क/रियाद।

7 साल बाद ईरान से डिप्लोमैटिक रिलेशन बहाल करने वाला सऊदी अरब एक और बड़ा कदम उठाने जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जल्द ही सऊदी और सीरिया के बीच भी कूटनीतिक संबंध बहाल हो सकते हैं। 11 साल पहले यह रिश्ते टूट गए थे। इससे जुड़ी एक और बड़ी खबर तो यह है कि अगर सीरिया और सऊदी के डिप्लोमैटिक रिलेशन री-इन्सटॉल हुए तो सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल असद और उनके मुल्क की 22 अरब देशों के ग्रुप यानी अरब लीग में वापसी भी सकती है।

ईरान और सीरिया में क्या कॉमन

रिपोर्ट के मुताबिक- ईरान और सऊदी अरब के बीच रिश्ते सुधरने के बाद सीरिया ने भी ऐसा करने का फैसला

किया है। ऐंबैसी अप्रैल में ईद के बाद खुल सकती हैं। गल्फ डिप्लोमैट ने बताया कि ये फैसला सऊदी अरब और एक सीरियन इंटेलिजेंस ऑफिसर के बीच कई दौर की बातचीत के बाद लिया गया। इस मामले में खास बात यह है कि जब ईरान और सऊदी अरब के डिप्लोमैटिक रिलेशन बहाल हुए थे तो चीन ने इसमें अहल रोल प्ले किया था। अमेरिका को इस बातचीत की भनक तक नहीं लगी थी। अब अगर सीरिया और सऊदी के रिलेशन बहाल होते हैं, तो गल्फ में अमेरिकी दबदबे को ये एक और बड़ा झटका होगा।

यूएई दौरे पर गए थे सीरियन राष्ट्रपति

19 मार्च को राष्ट्रपति असद और उनकी पत्नी सीरियन डेलिगेशन के साथ यूएई पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने यूनाइटेड अरब एमीरेट्स के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल-नाहयान से भी मुलाकात की थी। दोनों नेताओं के बीच संबंध बेहतर करने और सीरिया में शांति बढ़ाने पर चर्चा हुई थी। इस मुलाकात का पर कतर ने विरोध जताया था।

सऊदी को सबक सिखा सकता है अमेरिका

सऊदी अरब के बड़े सहयोगी अमेरिका ने सीरिया और असद से रिश्ते सुधारने का विरोध किया है। स्टेट डिपार्टमेंट के एक अधिकारी ने कहा था कि अमेरिका सीरिया से संबंध बेहतर करने के मामले में अपने फैसले पर अडिग है। हम सीरियन सरकार के पुराने रवैये को नहीं भुला सकते। अमेरिका कभी दूसरे देशों को सीरिया से संबंध ठीक करने के लिए नहीं कहेगा। आसानी से समझें तो सीरिया वॉर दरअसल, ताकतवर मुल्कों की देन है। वहां करीब 11 साल पहले असद सरकार के खिलाफ एक छोटा आंदोलन शुरू हुआ था। अमेरिका ने असद के विरोधियों की मदद की। इसके बाद बाद इजराइल उसके साथ आया। दूसरी तरफ, रूस और ईरान असद के साथ खड़े हो गए। ये सिलसिला अब तक चल रहा है और सीरिया करीब-करीब तबाह हो चुका है। सऊदी ने अमेरिका के कहने पर सीरिया से रिश्ते तोड़े थे। अब अगर सऊदी अरब यह फैसला लेता है कि वो सीरिया से डिप्लोमैटिक रिलेशन बहाल करेगा तो यह अमेरिका के लिए लगातार दूसरा झटका होगा। सऊदी ही नहीं, बल्कि तमाम गल्फ नेशन्स के पास 90प्रतिशत हथियार और टेक्नोलॉजी अमेरिकी है। अमेरिका ने अगर इस मामले में हाथ खींच लिए तो यह इन देशों के लिए मुश्किल दौर की शुरुआत होगी।

दोनों देशों में कॉन्सुलर सर्विसेज शुरू करने पर बातचीत

दोनों देशों की सरकारों ने मामले पर बयान देने से इनकार कर दिया। हालांकि, बाद में एक सऊदी स्टेट टेलीविजन चैनल ने इस बात की पुष्टि कि सीरियन विदेश मंत्रालय और सऊदी अरब के बीच कॉन्सुलर सर्विसेज फिर शुरू करने पर बातचीत हो रही है। वहीं मार्च की शुरुआत में सऊदी के विदेश मंत्री प्रिंस फैजल बिन फरहान अल सऊद ने कहा था कि सीरिया के राष्ट्रपति असद के साथ फिर से बातचीत शुरू होने पर मुमकिन है कि सीरिया फिर से 22 सदस्यीय अरब लीग का हिस्सा बन जाए।

चंडीगढ़ में कांग्रेस नेताओं ने रोकी शताब्दी पुलिस ने ट्रैक से हटाया

चंडीगढ़ (हिंस)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द होने से गुस्साए युवा कांग्रेस नेताओं ने विरोध प्रदर्शन करते हुए रेलवे स्टेशन पर शताब्दी समेत कई गाड़ियों को रोक दिया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला और कांग्रेस नेताओं को ट्रैक से हटाया। चंडीगढ़ युवा कांग्रेस के प्रधान मनोज लुबाना ने इसे लोकतंत्र की हत्या बताया है। लुबाना ने आरोप लगाते हुए कहा कि जो भी नरेंद्र मोदी के खिलाफ आवाज उठा रहा है उसकी आवाज को कुचला जा रहा है। लुबाना ने कहा कि राहुल गांधी कई सालों से मोदी के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। अब मोदी के दोस्त अडाणी पर बात आई तो राहुल गांधी पर कार्रवाई की गई। उन्होंने आगे कि भाजपा के कई लीडर्स पर केस हैं मगर उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। जीआरपी इंस्पेक्टर मनीषा देवी ने बताया कि नई दिल्ली-चंडीगढ़ शताब्दी ट्रेन के स्टेशन से चलने से 15 मिनट पहले कांग्रेस नेता यहां जुटे थे और 5 मिनट में ही उन्हें हटा दिया गया था।

मुख्यमंत्री की राज्य कार्मिकों को सौगात
महंगाई भत्ते में चार प्रतिशत की बढ़ोतरी

जयपुर (हिंस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को महंगाई से राहत देने के लिए महंगाई भत्ते में 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। अब राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को 1 जनवरी, 2023 से 42 प्रतिशत महंगाई भत्ता एवं महंगाई राहत दर देय होगी। पूर्व में राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को 38 प्रतिशत महंगाई भत्ता एवं महंगाई राहत दर दी जा रही थी। गहलोत के इस निर्णय का लाभ राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम-2017 के आधार पर वेतन प्राप्त कर रहे करीब 8 लाख कार्मिकों के साथ ही लगभग 4 लाख 40 हजार पेंशनर्स को मिलेगा। यह लाभ राज्य कर्मचारियों के अतिरिक्त कार्य प्रभारित, पंचायत समिति तथा जिला परिषद के कर्मचारियों को भी देय होगा। कर्मचारियों को 1 जनवरी, 2023 से 31 मार्च, 2023 तक बढ़े हुए महंगाई भत्ते की राशि उनके सामान्य प्रावधायी निधि, सामान्य प्रावधायी निधि-2004 या सामान्य प्रावधायी निधि-एसएबी खाते में जमा की जाएगी। अप्रैल, 2023 के वेतन से बढ़े हुए

महंगाई भत्ते का नकद भुगतान किया जाएगा। राज्य सरकार इस बढ़ोतरी पर सालाना करीब 1640 करोड़ रुपए का वित्तीय भार वहन करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा है कि केंद्र सरकार महंगाई भत्ते की घोषणा कर देती है, लेकिन वहां इस पर अमल काफी समय बाद होता है, जबकि राजस्थान सरकार घोषणा के साथ ही बड़ी हुई राशि का अविलंब भुगतान भी सुनिश्चित करती है।

पटियाला और दिल्ली की सीसीटीवी फुटेज में दिखा अमृतपाल

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब पुलिस भले ही खालिस्तानी समर्थक अमृतपाल को गिरफ्तार नहीं कर सकी है लेकिन अमृतपाल को लेकर आए दिन नए-नए खुलासे हो रहे हैं। शाहबाद के बाद अब अमृतपाल की एक नई सीसीटीवी फुटेज सामने आई है यह पटियाला की बताई जा रही है। इसमें अमृतपाल जैकेट और चश्मा पहने हुए नजर आ रहा है। पुलिस के मुताबिक यह सीसीटीवी फुटेज अमृतपाल के हरियाणा में दाखिल होने से पहले का है। यहीं से स्कूटी लेकर वह कुरुक्षेत्र के शाहाबाद पहुंचा था। वहीं शनिवार सुबह पंजाब पुलिस की कुछ टीमों ने दिल्ली में भी दबिश दी। पुलिस ने कश्मीरी गेट से कुछ सीसीटीवी फुटेज को कब्जे में लिया है, जिसमें अमृतपाल अगल भेष में नजर आ रहा है। इस बीच पंजाब पुलिस ने अमृतपाल के एक और साथी सुक्खा को मध्य प्रदेश के इंदौर से गिरफ्तार किया है। अमृतपाल जब हरियाणा में कुरुक्षेत्र के शाहाबाद में महिला बलजीत कौर के घर रुका तो सुक्खा से लंबी बातचीत की थी।

राहुल गांधी के मुद्दे पर यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गुरुग्राम में दिल्ली-जयपुर हाइवे किया जाम

गुरुग्राम (हिंस)। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द के फैसले का युवा कांग्रेस ने शनिवार को सड़क पर उतरकर विरोध किया। युवा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष दिव्यांशु बुद्धिराजा की अगुवाई में कार्यकर्ताओं ने खेड़की-दौला टोल पर दिल्ली-जयपुर हाइवे को जाम कर जोरदार प्रदर्शन किया। युवा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष दिव्यांशु बुद्धिराजा के अगुवाई में कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी की सदस्यता रद करने के विरोध में दिल्ली-जयपुर हाइवे पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने इस दौरान हाइवे पर टायर फूंककर केंद्र सरकार के फैसले का विरोध जताया। अडानी की संपत्ति बढ़ने के बारे केंद्र की भाजपा सरकार से जवाब भी मांगा। युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विरोध स्वरूप टायर फूंके। प्रदर्शनकारियों को हाइवे से हटाने के दौरान कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच नोंक-झोंक हुई। पुलिस ने जबरदस्ती करते हुए कई कार्यकर्ताओं को हिरासत में भी लिया। दिव्यांशु बुद्धिराजा ने कहा कि केंद्र सरकार ने विपक्ष की आवाज को दबाने के लिए राहुल गांधी की सदस्यता को रद्द किया है। उन्होंने केंद्र सरकार को चेताया कि राहुल गांधी सदस्यता रद करने से डरने वाले नहीं हैं, क्योंकि उनका नाम राहुल गांधी है न कि राहुल सावरकर है। कांग्रेस और यूथ कांग्रेस केंद्र सरकार की तानाशाही फैसलों का सड़कों पर उतरकर विरोध करेगी। कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार को चेतावनी दी कि इस तरह के तानाशाही फैसले लिए गए तो देशभर की सड़कें जाम होंगी और सरकार को इसका हर्जाना भुगतना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा को मिले समर्थन से केंद्र की भाजपा सरकार डरी हुई है और जिस तरह से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने संसद में अडानी की बढ़ी संपत्ति पर सरकार से जवाब मांगा, उससे दबाने के लिए लोकसभा की सदस्यता रद करने का तानाशाही फैसला लिया गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेता गांधी परिवार के खिलाफ हर रोज अनर्गल टिप्पणी करते हैं, जिन्होंने देश को आजाद कराने से लेकर देश के विकास में अहम योगदान दिया। भाजपा 2024 के चुनावों में हार के डर से तानाशाही फैसले ले रही है। इस अवसर पर प्रदेश प्रभारी शिवी चौहान, सत्यवान,

शादी के बंधन में बंधे पंजाब के कैबिनेट मंत्री हरजोत बैंस

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब के कैबिनेट मंत्री हरजोत सिंह बैंस शनिवार को आईपीएस ज्योति यादव के साथ शादी के बंधन में बंध गए। ज्योति यादव हरियाणा के गुरुग्राम की रहने वाली पंजाब कैडर की आईपीएस अधिकारी हैं। दोनों का आनंद कारज परिजनों की मौजूदगी में पंजाब के नंगल के निकट स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारा बिभोर साहिब में हुआ। हालांकि इस शादी में पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को शामिल होना था, लेकिन खराब मौसम के चलते उनका कार्यक्रम बदल गया। हाल ही में हरजोत बैंस तथा ज्योति यादव की सगाई की खबरें सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी। आईपीएस ज्योति यादव इस समय मानसा में बतौर एसपी तैनात हैं। पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद कई विधायक तथा मुख्यमंत्री भगवंत मान शादी के बंधन में बंध चुके हैं। पिछले साल मुख्यमंत्री भगवंत मान ने डॉ. गुरप्रीत कौर के साथ शादी की थी। इसके अलावा पंजाब के कई विधायक भी चुनाव जीतने के बाद शादी के बंधन में बंध चुके हैं।

धीरेंद्र शास्त्री पर एफआईआर : उदयपुर में हिंदू समाज का दिन भर प्रदर्शन

उदयपुर (हिंस)। उदयपुर में बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री पर भड़काऊ भाषण का मामला दर्ज होने के बाद हिंदू समाज में रोष व्याप्त हो गया है। मामला दर्ज करने के विरोध में उदयपुर शहर के युवाओं ने अचानक जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। युवाओं ने *मैं हूं बागेश्वर* के नारे लगाए और सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ किया। कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन की सूचना जैसे-जैसे शहर में फैली, वैसे-वैसे कई लोग और कलेक्ट्रेट पहुंचना शुरू हो गए। पुलिस प्रशासन को चौराहों पर यातायात व्यवस्था में तब्दीली करनी पड़ी। प्रदर्शनकारियों ने उदयपुर और राजसमंद में शास्त्री पर दर्ज मुकदमा हटाने तथा केलवाड़ा में गिरफ्तार किए गए युवकों को तुरंत रिहा करने की मांग की। युवकों को अदालत के आदेश पर शाम को जमानत पर रिहा कर दिया गया। हिंदू समाज ने शास्त्री पर की गई एफआईआर निरस्त करने या एफआर तुरंत नहीं लगाने पर पूरे देश में आंदोलन का ऐलान किया है। दरअसल, भारतीय नववर्ष को लेकर 23 मार्च शाम को उदयपुर के महाराणा भूपाल स्टेडियम में हुई विशाल धर्मसभा में

बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री ने कुंभलगढ़ को लेकर कहा था कि कुम्भलगढ़ किले में हरे झंडे हटाने हैं और भगवा झंडा लगाना है। उदयपुर की हाथीपोल थाना पुलिस ने इस बयान को धार्मिक हिंसा भड़काने वाला बयान माना और स्वतः संज्ञान लेते हुए मामला दर्ज किया। दूसरी ओर शुक्रवार को राजसमंद जिले के केलवाड़ा थाने में पांच युवकों को कुंभलगढ़ पर भगवा झंडा फहराने की कोशिश करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। इसे पुलिस ने धीरेंद्र शास्त्री के भड़काऊ बयान का असर मानते हुए वहां भी मामला दर्ज किया था। पुलिस की इस कार्रवाई से हिंदू समाज में रोष व्याप्त हो गया। शनिवार सुबह 11 बजे अचानक कई युवा जिला कलेक्ट्रेट पहुंच गए। इनमें बड़ी संख्या में युवतियां भी शामिल थी। देखते ही देखते संख्या बढ़ती गई और प्रदर्शनकारियों ने कलेक्ट्रेट के पास कोर्ट चौराहे पर पड़ाव डाल लिया और वहीं प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। यातायात रोकने के प्रयास के दौरान प्रदर्शनकारियों की पुलिस से धक्कमपेल भी हुई। प्रदर्शनकारियों के सड़क पर ही बैठ जाने से देहलीगेट से जिला कलेक्ट्रेट होते हुए कोर्ट चौराहा मार्ग पर यातायात पूर्ण रूप से बंद हो गया। दोपहर बाद इस प्रदर्शन में उदयपुर के संतजन भी पहुंच गए। संतों ने युवाओं को संबोधित भी किया। दोपहर करीब 4 बजे बाद जब केलवाड़ा में गिरफ्तार युवकों को जमानत पर रिहा करने की सूचना आई तब तक सभी वहीं डटे रहे। हिंदू समाज के विभिन्न संगठनों की ओर से जिला कलेक्टर को ज्ञापन भी सौंपे गए। ज्ञापन में सारे मामले को गलत और इसे सरकार के इशारे पर किया गया कृत्य बताया गया। उन्होंने इसे संत समाज का अपमान बताया और मुकदमा वापस लेने की मांग की गई। उन्होंने सवाल उठाया कि कुंभलगढ़ पर कोई भगवा ध्वज फहराए तो वह अपराध की श्रेणी में कैसे आएगा, भगवा पताका तो शौर्य का प्रतीक है और कुंभलगढ़ शौर्य की धरती। कुछ समाज-संगठनों ने यह भी कहा है कि कुंभलगढ़ के बारे में कोई गलत बयान नहीं दिया गया। वहां पर लगातार अवैध कब्जे-अतिक्रमण बढ़ रहे हैं, इसका सर्वे करवा लिया जाना चाहिए, सारी हकीकत सामने आ जाएगी। कुंभलगढ़ ऐतिहासिक धरोहर है और देश का पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग उसके संरक्षण के लिए जिम्मेदार है।

भारत-पाक सीमा से 49 करोड़ की हेरोइन बरामद

चंडीगढ़ (हिंस)। पाकिस्तान ने एक बार फिर से भारतीय सीमा में हेरोइन की खेप पहुंचाई है। बीएसएफ ने यह खेप बरामद करने के बाद पंजाब पुलिस के साथ मिलकर स्थानीय संपर्कों की तलाश शुरू कर दी है। इससे पहले शुक्रवार गुरदासपुर सेक्टर से हथियार बरामद किए गए थे। बीएसएफ द्वारा जारी जानकारी के अनुसार शनिवार सुबह जवान तरनतारन बॉर्डर पर गश्त कर रहे थे। तरनतारन के सरहदी गांव वान में जवानों ने तकरीबन सात पैकेट देखे। यह पैकेट फेंसिंग के पार खेतों में फसल के बीच में छिपाए गए थे। जिसे तस्करों ने फेंसिंग के इस पार लेकर आना था, लेकिन उससे पहले ही इसे जब्त कर लिया गया। यह पैकेट पीले रंग के लिफाफे में बांधकर पाकिस्तान से यहां फेंके गए हैं।

श्रीगंगानगर पहुंचे थल सेना अध्यक्ष मनोज पांडे
चार रेजीमेंटों को राष्ट्रपति के मानक देकर किया सम्मानित

श्रीगंगानगर (हिंस)। जिले के सूरतगढ़ मिलिट्री स्टेशन में शनिवार को एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें थल सेना अध्यक्ष मनोज पांडे ने विशेष रूप से शिरकत की और चार रेजीमेंटों को राष्ट्रपति के मानक भेंट किए। इस मौके पर टैंकों की एक शानदार परेड का भी आयोजन किया गया। सेना के राजस्थान पीआरओ अमिताभ शर्मा ने बताया कि थल सेना अध्यक्ष मनोज पांडे ने 49 आर्मर्ड रेजिमेंट, 51 आर्मर्ड रेजिमेंट, 53 आर्मर्ड रेजिमेंट और 54 आर्मर्ड रेजिमेंट को प्रतिष्ठित *राष्ट्रपति के मानक* या *निशान* प्रदान किए। इस मौके पर सूरतगढ़ मिलिट्री स्टेशन में प्रभावशाली मानक प्रस्तुति परेड आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों और सैन्य दिग्गजों ने भाग लिया। कार्यक्रम में चार आर्मर्ड रेजीमेंट की ओर से टैंकों की आकर्षक परेड भी जवानों ने प्रदर्शित की। इसके साथ ही घुड़सवार परेड का भी आयोजन किया गया। इससे पहले थल सेनाध्यक्ष पांडे का सूरतगढ़ मिलिट्री स्टेशन पर जोरदार स्वागत किया गया। उन्हें सेना की टुकड़ी की ओर से सलामी दी गई। इसके बाद उन्होंने मानक प्रस्तुति परेड की समीक्षा की एवं युद्ध और शांति में बख्तरबंद कोर की ओर से दिखाई गई वीरता, बलिदान और परंपराओं की समृद्ध विरासत की सराहना की। सेनाध्यक्ष ने अपने संबोधन में उन रेजीमेंटों की सराहना की जिन्होंने अनुकरणीय सेवा के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रपति के मानक प्राप्त किए। उन्होंने सैन्य कर्मियों के परिवारों को अपनी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने बताया कि आधुनिक और पेशेवर भारतीय मशीनीकृत बल भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार हैं और सभी खतरों से देश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

राजस्थान में भाजपा, कांग्रेस की सत्ता की बंदर बांट को रोकेगी आप : नवीन पालीवाल

जयपुर (हिंस)। आम आदमी पार्टी राजस्थान के नव नियुक्त प्रदेशाध्यक्ष नवीन पालीवाल ने शनिवार को जयपुर में पार्टी के प्रदेश कार्यालय में पद भार ग्रहण करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी आज लोकतंत्र को बचाने के लिए व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई लड़ रही है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बताते हुए उन्होंने मीडिया से भी इसमें सहयोग करने की अपील की। उन्होंने राजस्थान की जनता को विश्वास दिलाया कि आम आदमी पार्टी अपने पूरे दम खम के साथ चुनाव लडेगी और हम जीत कर ही दम लेंगे। जीतने के बाद दिल्ली और पंजाब में जो सुविधाएं जनता को मिल रही है वो सारी सुविधाएं राजस्थान की जनता को भी मिलेगी। उन्होंने पार्टी नेतृत्व का आभार जताया जिन्होंने इतने बड़े राजस्थान की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी है, अरविंद केजरीवाल के विश्वास पर खरा उतरने का संकल्प भी उन्होंने लिया। पालीवाल ने गहलोत सरकार से जवाबदेही कानून को पास करने के साथ साथ ओलावृष्टि से हुई फसल के नुकसान की भरपाई करने के लिए कहा। इस अवसर पर राजस्थान चुनाव प्रभारी विनय मिश्रा ने भी प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी जमीनी स्तर पर काम करने वालों को मौका देती है, इसी की मिसाल है कि उन्होंने

पालीवाल को मौका दिया जो अन्ना आंदोलन के समय से पार्टी से जुड़े हुए हैं। मिश्रा ने कहा कि पार्टी शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, बिजली, महिला सुरक्षा, बेरोजगारों व किसानों के हित के मुद्दों पर चुनाव लडेगी और भाजपा कांग्रेस दोनों को पटखनी देगी। उन्होंने कहा कि वो अरविंद केजरीवाल ही है जो लोकतंत्र को बचाने के लिए नरेंद्र मोदी से लड़ सकता है। इस अवसर पर जागो पार्टी राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा ने बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं के साथ पार्टी ज्वाइन की। इसके साथ ही बांदीकुई के वर्तमान पार्षद मनमोहन बैरवा, बांदी कुई बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल पोसवाल, मंडेरू गांव के पूर्व प्रधान मुकेश मीणा आदि ने भी प्रेस कांफ्रेंस में आम आदमी पार्टी ज्वाइन की।

वेटिंग लिस्ट से नियुक्ति नहीं देने पर मांगा जवाब

जयपुर (हिंस)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2016 की वेटिंग लिस्ट से अभ्यर्थियों को नियुक्ति नहीं देने और परिणाम को रिशफल नहीं करने पर गृह सचिव, डीजीपी और आरपीएससी सचिव से जवाब तलब किया है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश योगेन्द्र सिंह की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि आरपीएससी ने वर्ष 2016 में पुलिस उपनिरीक्षक के पदों पर भर्ती निकाली। भर्ती को वर्ष 2018 में संशोधित किया गया। वहीं अगस्त 2020 में हुए साक्षात्कार में याचिकाकर्ता अभ्यर्थी सफल हुए और उन्हें प्रतीक्षा सूची में रखा गया। याचिका में कहा गया कि फरवरी 2022 में मेरिट लिस्ट में शामिल कई अभ्यर्थी शिक्षा विभाग में चयनित होने के चलते एसआई पद छोड़कर चले गए। वहीं कई अभ्यर्थियों ने एसआई पद का कार्यभार ग्रहण नहीं किया। याचिका में कहा गया की खाली पदों को प्रतीक्षा सूची से भरा जाना चाहिए था। इसके बावजूद न तो प्रतीक्षा सूची को लागू किया गया और ना ही भर्ती को रिशफल किया गया। जिसके चलते याचिकाकर्ता नियुक्ति से वंचित हो गए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

एक और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने की चेतावनी

कैथल (हिंस)। किसान अभी दो पश्चिमी विक्षोभ के कारण बरसात और ओलावृष्टि से उभर नहीं सके थे, कि मौसम विभाग ने 30 मार्च से फिर से एक पश्चिमी विक्षोभ के प्रदेश में सक्रिय होने का अलर्ट जारी कर दिया है। बरसात और ओलावृष्टि के कारण अभी तक प्रदेश के अधिकतर किसानों का कृषि बीमा योजना के तहत पंजीकरण भी नहीं हो सका है। इसी बीच मार्च महीने की तीसरी बरसात का खतरा मंडराने लगा है। गेहूं और सरसों को बरसात से हुए नुकसान की विशेष गिरदावरी करवाने के लिए किसान सरकार से मांग कर रहे हैं। हरियाणा में करीब 25 लाख हेक्टेयर में गेहूं की फसल पक कर तैयार खड़ी है। देश के केंद्रीय भंडार में हरियाणा करीब 15 प्रतिशत गेहूं देता है। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि हरियाणा में मौसम के आमतौर पर 30 मार्च तक परिवर्तनशील परंतु खुश्क रहने की संभावना है। इस दौरान बीच बीच में हल्के बादल व हवाएं चलने की संभावना है, जिससे दिन के तापमान में हल्की बढ़ोतरी संभावित है। परंतु एक और पश्चिमिविक्षोभ के आंशिक प्रभाव से राज्य के ज्यादातर क्षेत्रों में 30 मार्च रात्रि से मौसम में फिर से बदलाव की संभावना बन रही है।

अमृतपाल मामले में पंजाब पुलिस के खिलाफ एक दर्जन याचिकाएं

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब पुलिस द्वारा ऑप्रेशन अमृतपाल के दौरान हिरासत में लिए गए युवाओं के परिजनों ने पुलिस के खिलाफ हाई कोर्ट का रुख कर लिया है। परिजनों का दावा है कि पुलिस ने बिना बताए उनके वारिसों को घर से उठाया। अब कोई जानकारी नहीं दी जा रही है। पंजाब पुलिस ने बीती 18 मार्च को पंजाब में ऑप्रेशन अमृतपाल शुरू किया था जिसमें अब तक 207 गिरफ्तारियां की जा चुकी हैं। इनमें से पुलिस 30 आरोपियों को अमृतपाल का बेहद करीबी तथा समाज विरोधी कार्रवाइयों में लिप्त मान चुकी है जबकि 44 लोगों को पूछताछ के बाद रिहा किया जा चुका है। इनमें से कुछ आरोपियों को असम के डिब्रुगढ़ भेजा गया है लेकिन कई लोग ऐसे हैं, जिनकी स्थिति के बारे कुछ भी पता नहीं चल पा रहा है कि वे कहां हैं। आरोप है कि कई लोगों को गिरफ्तार कर पुलिस ने उन्हें कोर्ट में पेश करने के बजाय अपनी हिरासत में रखा है। मामले के करीब एक दर्जन आरोपियों के परिजनों ने पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट में याचिका दायर की है। यह सिलसिला लगातार जारी है। याचिकाकर्ताओं ने हाई कोर्ट से उनके अपनों की तलाश की मांग की है। सभी मामलों की याचिकाएं एडवोकेट सिमरनजीत सिंह के माध्यम से दायर की गई हैं। हाई कोर्ट दायर सभी याचिकाओं पर 28 मार्च को सुनवाई करेगी। याचिकाकर्ताओं के वकील सिमरनजीत सिंह मान ने कहा कि जिन लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, उनके परिवारों को पुलिस ने सूचना तक नहीं दी है जबकि कानूनन गिरफ्तार/हिरासत में लेने के 24 घंटे के अंदर आरोपियों को कोर्ट में पेश करना अनिवार्य होता है और उनके परिवार को भी सूचना देनी होती है।

मूर्ति प्रकरण में हांसी पुलिस ने की एडीजीपी के आदेशों की अवहेलना

हिसार (हिंस)। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रवक्ता मनोज राठी हांसी पुलिस पर बहुचर्चित मूर्ति प्रकरण में एडीजीपी के आदेशों की अवहेलना करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि हांसी पुलिस ने एडीजीपी के आदेश न मानकर इस मामले में अनुशासनहीनता का परिचय दिया है। मूर्ति प्रकरण में हांसी पुलिस की कारस्तानी के खुलासे करते हुए मनोज राठी ने शनिवार को बताया कि गत 17 मार्च को एडीजीपी ने हांसी पुलिस के नाम आदेश जारी किए थे कि वह मूर्ति प्रकरण में आगामी कार्रवाई न करें। एडीजीपी के आदेशों की अवहेलना का खुलासा उस समय हुआ जब हांसी अदालत में एडवोकेट रोहित शर्मा ने एडीजीपी द्वारा जारी आदेशों की फोटो प्रति पेश की जबकि हांसी पुलिस इन आदेशों की असल प्रति ही पेश नहीं कर पाई।

सदस्यता खत्म कर राहुल को चुप कराना चाहती है सरकार : कुमारी सैलजा

चंडीगढ़ (हिंस)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी सैलजा ने कहा कि भाजपा और केंद्र सरकार लोकसभा सदस्यता को खत्म कर कांग्रेस नेता राहुल गांधी को चुप कराने का षड्यंत्र रच रहे हैं लेकिन ये इसमें सफल होने वाले नहीं हैं। भारत जोड़ो यात्रा से कांग्रेस एवं राहुल गांधी को मिले जनसमर्थन के साथ ही भाजपा में हताशा और बौखलाहट बननी शुरू हो गई थी। अब अडाणी और केंद्र सरकार के संबंधों पर राहुल गांधी ने ताजा हमले किए तो भाजपा ने अपने बचाव में राहुल गांधी के खिलाफ व्यूहरचना शुरू कर दी। शनिवार को यहां जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा कि भाजपा ने देश में निरंकुशता का माहौल बना दिया है। आपातकाल जैसी स्थिति पैदा कर दी हैं। देश हित में कोई भी भाजपा और इसकी केंद्र सरकार के खिलाफ बोल नहीं सकता। अगर कोई बोलने की कोशिश करता है तो उस आदमी और उसकी आवाज को दबाने की कोशिश शुरू कर दी जाती है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि कोई भी तानाशाह उस समय डरने लगता है, जब लोग उससे डरना बंद कर देते हैं। राहुल गांधी ने भी इनसे डरना बंद कर दिया था और लगातार देश हित में हर आम आदमी की बात को उठा रहे थे।

तीन बार आया सीएम बनने का मौका : बीरेंद्र सिंह

जींद (हिंस)। पूर्व केंद्रीय मंत्री बीरेंद्र सिंह ने कहा कि राजनीति जीवन में तीन बार सीएम बनने का अवसर आया। एक बार किस्मत ने तो दो बार लोगों ने साथ नहीं दिया। 1991 में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला लेकिन 21 जून को राजीव गांधी की मौत हो गई जबकि हरियाणा के परिणाम 23 को आना थे। 2000 में जब कांग्रेस चेयरपर्सन सोनिया गांधी बड़ी जिम्मेदारी देने की बात कही लेकिन विधानसभा चुनाव में लोगों ने हराया दिया। ऐसे ही 2009 के चुनाव में भी लोगों ने हराया दिया। यहां के लोगों को समझाया नहीं जा सकता है लेकिन बहकाया जा सकता है। दूसरी जगह से आ कर यहां से लोगों को बहका कर विधायक बन जाते है। बीरेंद्र सिंह शनिवार को उचाना स्थित नर्सिंग कॉलेज में आयोजित शिविर को संबोधित कर रहे थे। शिविर का आयोजन बीरेंद्र सिंह के जन्म दिन पर बीरेंद्र सिंह के साथी, युवा शक्ति बदलाव

की ओर एवं छोटूराम विचार मंच द्वारा सयुंक्त रूप से किया। बीरेंद्र सिंह ने कहा कि दो अक्तूबर को जींद बीरेंद्र सिंह के साथी संगठन द्वारा आयोजित रैली के बाद प्रदेश में राजनीति, व्यवस्था बदलाव होगा। इस दिन रिकार्ड तोड़ भागीदारी होनी चाहिए। विधानसभा में 20 से 25 युवा पहुंचे ये उनकी सोच है। आप ईमानदार नेता का साथ दे ताकि गरीब आदमी आर्थिक तौर पर मजबूत हो, किसानों को उनकी फसल के भाव अच्छे मिले, भ्रष्टाचार पर लगाम लगे। जो लोग चाहते है उसके अनुरूप ही वो फैसला लेंगे। हलके के लोग चुनाव में ये नहीं देखते कि जीताना किसको है लेकिन ये देखते है कि हराना किसको है। लोगों को अपनी सोच बदलनी होगी। जिस तरह से मुठी बंद होती है उस तरह से एकजुट होना होगा। उन्होंने कहा कि हलके में 100 काम अगर हुए है तो 95 काम उनके द्वारा या यहां से विधायक रही प्रेमलता द्वारा करवाए गए हैं। 48 हजार वोटों से बीते विस चुनाव में प्रेमलता को हलके से हराया दिया। लोगों ने कहा कि भाजपा के खिलाफ वोट दिया है।

केंद्र ने बढ़ाया महंगाई भत्ता; 47 लाख सरकारी कर्मचारियों और 69 लाख से ज्यादा पेंशनभोगियों को फायदा

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा दिया है। केंद्रीय कैबिनेट ने केंद्र सरकार को महंगाई भत्ते की एक अतिरिक्त किस्त जारी करने की मंजूरी दे दी है। जानकारी के मुताबिक, कैबिनेट ने सरकारी कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में चार फीसदी की बढ़ातरी करने का फैसला किया है। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक के बाद यह फैसला लिया गया है। सरकार के मुताबिक, कैबिनेट ने शुक्रवार को एक जनवरी 2023 से केंद्र सरकार के कर्मचारियों को महंगाई भत्ते और पेंशनरों को महंगाई राहत की अतिरिक्त किस्त जारी करने की मंजूरी दे दी है। इससे 47.58 लाख कर्मचारियों और 69.76 लाख पेंशनभोगियों को फायदा होगा। इस बढोतरी के बाद डीए अब बढ़कर 42 फीसदी पर पहुंच गया है।

इस तारीख से लागू होगा बढ़ा हुआ महंगाई भत्ता – गौरतलब है कि आंकड़ों के मुताबिक महंगाई का जोड़-घटाना करके कर्मचारियों को मंहगाई भत्ता दिया जाता है। यह हर छह माह में संशोधित किया जाता है। अब जबकि केंद्र सरकार ने जनवरी के लिए महंगाई भत्ते में 4 फीसदी बढ़ोतरी का एलान किया है। ऐसे में यह भत्ता एक जनवरी 2023 से ही लागू किया जाएगा। ऐसे में केंद्रीय कर्मचारियों को दो महीने का बकाया एरियर भी मिलेगा। कहा जा रहा है कि मार्च के वेतन के साथ ही इसका भी भुगतान हो जाएगा।

कैसे तय होता है डीए – महंगाई भत्ता वेतन का एक हिस्सा होता है। यह कर्मचारी के मूल वेतन यानी बेसिक का एक तय फीसदी होता है। महंगाई के असर को कम करने के लिए सरकार अपने कर्मचारियों को महंगाई भत्ता देती है। इसे समय-समय पर बढ़ाया जाता है। सरकार ऑल इंडिया कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स पर आधारित महंगाई दर को बेस मानकर महंगाई भत्ता तय करती है। इससे पहले 28 सितंबर 2022 में केंद्र सरकार ने कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी की थी। साल में दो बार महंगाई भत्ते की समीक्षा की जाती है। यह समीक्षा जनवरी और जुलाई में होती है।

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि वैश्विक कारणों के कारण गरीब जनता पर बोझ न पड़े इसके लिए 2022 में प्रधानमंत्री उवला योजना के लाभार्थियों को साल में 12 सिलेंडर और एक सिलेंडर पर 200 रुपए की सब्सिडी देने का निर्णय लिया गया था।

न्यूज ब्रीफ

आरआईएल के नए सीएफओ चुने गए वेंकटचारी श्रीकांत, आलोक अग्रवाल चेयरमैन के वरिष्ठ सलाहकार होंगे

नई दिल्ली। अरबपति कारोबारी मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने श्रीकांत वेंकटचारी को कंपनी का चीफ फाइनेंसियल ऑफिसर नियुक्त किया है। वे एक जून से कंपनी में सीएफओ का पद संभालेंगे। कंपनी की ओर से स्टॉक एक्सचेंज में दी गई जानकारी के मुताबिक, श्रीकांत वेंकटचारी एक जून से रिलायंस इंडस्ट्रीज के सीएफओ की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे आलोक अग्रवाल की जगह लेंगे, जो कि 2005 से कंपनी के सीएफओ हैं। अग्रवाल को प्रमोट कर कंपनी के चेयरमैन और एमडी मुकेश अंबानी का सीनियर एडवाइजर नियुक्त किया गया है। मौजूदा समय में 57 वर्षीय वेंकटचारी रिलायंस में अग्रवाल के साथ पिछले कुछ समय से ज्वॉइट सीएफओ की जिम्मेदारी निभा रहे थे। वे करीब 14 साल पहले कंपनी के साथ जुड़े थे। वहीं, रिलायंस के सीएफओ से मुकेश अंबानी के सीनियर एडवाइजर बने 65 वर्षीय अग्रवाल करीब 30 वर्षों से कंपनी के साथ जुड़े हुए थे। उन्हें 2005 में कंपनी का सीएफओ बनाया गया था। कंपनी के बोर्ड की ओर से आलोक अग्रवाल के योगदान की सराहना की गई है। रिलायंस के साथ जुड़ने से पहले वेंकटचारी ने करीब दो दशकों तक सिटी ग्रुप के साथ काम किया है। जहां वे फॉरेक्स ट्रेडिंग के प्रमुख थे।

मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग तीसरी बार बने पिता: पत्नी प्रिसिला ने बेटी को दिया जन्म, फेसबुक पर फोटो शेयर कर दी जानकारी

नई दिल्ली। फेसबुक के फाउंडर मार्क जुकरबर्ग के घर एक और नन्हा मेहमान आया है। जुकरबर्ग की पत्नी प्रिसिला चॉन ने बेटी को जन्म दिया है, जिसके बारे में उन्होंने फेसबुक और इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए जानकारी दी। जुकरबर्ग ने तस्वीर पोस्ट करते हुए लिखा, ओरिलिया चॉन जुकरबर्ग, दुनिया में स्वागत है। तुम सच में ईश्वर का नन्हा सा आशीर्वाद हो। मार्क जुकरबर्ग और प्रिसिला का ये तीसरा बच्चा है। इसके अलावा जुकरबर्ग की 5 साल की दूसरी बेटी अगस्त और 7 साल की पहली बेटी मैक्सिमा है। जुकरबर्ग ने 2 तस्वीरें पोस्ट की हैं, एक तस्वीर में जुकरबर्ग को न्यू बोर्न बेबी को देखकर मुस्कुराते हुए देखा जा सकता है। वहीं दूसरी तस्वीर में प्रिसिला चॉन के साथ न्यू बोर्न बेबी दिखाई दे रही है। फेसबुक पर शेयर की गई पोस्ट को 1.9 मिलियन से अधिक लाइक मिल चुके हैं। लगातार लोग जुकरबर्ग की पोस्ट पर कमेंट करके दोनों को बधाई दे रहे हैं। मार्क जुकरबर्ग और प्रिसिला चॉन साल 2003 से साथ हैं। दोनों की मुलाकात हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में हुई थी। इसके बारे में उन्होंने सितंबर 2010 में फेसबुक के जरिए एक साथ होने की घोषणा की थी और साल 2012 में दोनों शादी के बंधन में बंध गए। जुकरबर्ग ने अपने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के हॉस्टल से 4 फरवरी 2004 में फेसबुक की शुरुआत की। जनवरी में फेसबुक के दुनियाभर में 2.963 बिलियन एक्टिव यूजर्स थे, जिसके यूजर्स नवंबर 2022 से लेकर जनवरी 2023 के बीच 0.2प्रतिशत बढ़े हैं।

9.6 करोड़ लोगों को बड़ी राहत: उवला योजना के तहत एलपीजी पर सब्सिडी एक साल और बढ़ी, हर सिलेंडर पर 200 का फायदा

नई दिल्ली। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में प्रधानमंत्री उवला योजना के तहत 1 साल के लिए एलपीजी सिलेंडर पर सब्सिडी बढ़ाने को भी मंजूरी दे दी गई है। केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में यह फैसला लिया गया। इसके अलावा कच्चे जूट के एमएसपी में भी बड़ा ऐलान किया है। सरकार के इस फैसले का लाभ 9.6 करोड़ लोगों को मिलेगा। स्कीम के तहत हर साल 14.2 किलो गैस वाले 12 सिलेंडर पर 200 प्रति सिलेंडर सब्सिडी दी जाती है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि सरकार के इस कदम से, वैश्विक तनाव की वजह से बढ़ रही गैस कीमतों से आम जनता को राहत मिलने की संभावना है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1 मार्च 2023 तक कुल 9.59 करोड़ लोगों को उवला योजना का लाभ मिल रहा है। सब्सिडी को 1 साल के लिए बढ़ाने से सरकार को वित्त वर्ष 2023 में 6,100 करोड़ रुपए और वित्त वर्ष 2024 में 7,680 करोड़ रुपए का अतिरिक्त खर्च उठाना होगा।

डेट म्यूचुअल फंड की जगह कम कर वाले विकल्पों में बढ़ेगा निवेशकों का आकर्षण, एलटीसीजी लाभ खत्म

नई दिल्ली।

इक्विटी में अपनी संपत्ति का 35 फीसदी से कम निवेश करने वाले डेट म्यूचुअल फंड में लंबी अवधि के निवेश पर मिलने वाला कैपिटल गेन्स टैक्स (एलटीसीजी) लाभ खत्म करने से डेट फंड से निवेशकों का मोह भंग होगा। वे कम कर वाले अन्य साधनों में निवेश की ओर आकर्षित होंगे।

39.40 लाख करोड़ रुपये का है म्यूचुअल फंड उद्योग का एयूएम

कोटक म्यूचुअल फंड की मुख्य निवेश अधिकारी (डेट) लक्ष्मी अय्यर ने कहा, तीन साल से ज्यादा अवधि की निवेश वाली फंड योजनाओं पर इंडेक्सेशन लाभ के साथ 20प्रतिशत एलटीसीजी लगता है। अब यह खत्म हो गया है। इससे डेट म्यूचुअल फंड के निवेशक किसी और साधन में निवेश कर सकते हैं, जहां उन्हें कम टैक्स देना पड़े। एमएफ किंग के एमडी डीडी शर्मा कहते हैं कि म्यूचुअल फंड इससे बचने के लिए इक्विटी में 35प्रतिशत से ज्यादा निवेश कर सकते हैं। फंड उद्योग का एसेट अंडर मैनेजमेंट 39.40 लाख करोड़ है। इसमें 12.41 लाख करोड़ डेट का हिस्सा है।

फिर भी घाटे का सौदा होगा एफडी में निवेश

एक अप्रैल, 2023 से नियम लागू होने के बाद अगर निवेशक एफडी में पैसा लगाएंगे तो भी उन्हें घाटा उठाना पड़ेगा। मान लीजिए, आपने बैंक में 100 रुपये जमा किया। अगले साल 10 रुपये का ब्याज मिला।

बैंक में जो भी ब्याज बनता है, उस पर मासिक या तिमाही आधार पर टैक्स खुद बैंक काट देता है। लेकिन म्यूचुअल फंड में अगर आप इस 110 रुपये को नहीं निकालते हैं तो आपका टैक्स नहीं कटेगा। आप जब अंत में पैसा निकालेंगे तो उस पर टैक्स लगेगा। ऐसी स्थिति में 110 रुपये में जो 10 रुपये ब्याज का है, उस पर भी रिटर्न मिलेगा, जो फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में नहीं होता है।

नियम इन पर भी लागू सोने, फंड ऑफ फंड और अंतरराष्ट्रीय इक्विटी के निवेश पर भी यह नियम लागू

होगा। ऐसे साधनों में निवेश करने वालों को भी एलटीसीजी लाभ नहीं मिलेगा।

जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरण : कम होगा अदालतों का बोझ नांगिया एंडरसन इंडिया में निदेशक (अप्रत्यक्ष कर) तनुश्री रॉय ने कहा कि अपीलीय न्यायाधिकरण की स्थापना से अदालतों पर भार कम होगा और करदाताओं को भी राहत मिलेगी। यह सकारात्मक और स्वागतयोग्य कदम है। उद्योग का लंबे समय से चला आ रहा इंतजार भी अब खत्म हो गया।

एसटीटी : एफएंडओ से कमाई पर टैक्स में 25 फीसदी तक बढ़ोतरी

सरकार ने ट्रेडर्स को झटका देते हुए फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस (एफएंडओ) के जरिये कमाई पर सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स (एसटीटी) को 0.05 फीसदी से बढ़ाकर 0.062 फीसदी कर दिया है। नए नियम के मुताबिक, ऑप्शंस ट्रेडर्स को अब एक करोड़ रुपये के टर्नओवर पर 6,200 रुपये का एसटीटी देना होगा, जो पहले 5,000 रुपये था। इसका मतलब है कि 25 फीसदी की वृद्धि की गई है। इसी तरह, फ्यूचर्स की बिक्री पर एसटीटी को 0.01 फीसदी से बढ़ाकर 0.125 फीसदी कर दी गई है। इसका मतलब यहां भी 25 फीसदी की वृद्धि की गई है। दूसरे शब्दों में कहें तो एक करोड़ के टर्नओवर पर जब फ्यूचर की बिक्री की जाएगी तो 1,250 रुपये एसटीटी लगेगा। निवेशकों को दोहरा झटका : मास्टर कैपिटल सर्विसेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंदर सिंह का कहना है कि एसटीटी में वृद्धि से इंट्रा डे ऑप्शन पर असर होगा क्योंकि उनकी रणनीति की लागत बढ़ जाएगी। इससे हाई फ्रिक्वेंसी ट्रेडर्स (एचएफटी) ज्यादा प्रभावित होंगे, क्योंकि उनका वॉल्यूम ज्यादा है। एसटीटी में वृद्धि एचएफटी वाले एफएंडओ व्यापारियों के मनोबल को और गिराने वाली है। साथ ही खुदरा निवेशक को भी झटका लगेगा।

क्रेडिट कार्ड : विदेश यात्रा के लिए भुगतान पर कर

विदेश यात्रा के लिए क्रेडिट कार्ड से भुगतान को आरबीआई के उदारीकृत धन प्रेषण योजना (एलआरएस) के दायरे में लाया जाएगा। इसका उद्देश्य सुनिश्चित करना है कि ऐसे खर्चे स्रोत पर कर संग्रह (टीसीएस) के दायरे में आएं। वित्त मंत्री ने कहा, आरबीआई से विदेशी दौरों पर क्रेडिट कार्ड से भुगतान को एलआरएस के दायरे में लाने के तरीके खोजने का आग्रह किया गया है।

ईडी ने जानकारी लीक करने के आरोप में अपने दो संविदा कर्मियों समेत 3 लोगों को पकड़ा

नई दिल्ली ।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कहा कि उसने रिश्वत लेकर जांच की संवेदनशील जानकारी साझा करने के आरोप में अपने मुंबई कार्यालय में अनुबंध पर कार्यरत दो कर्मचारियों और महाराष्ट्र स्थित एक सहकारी बैंक के गिरफ्तार पूर्व अध्यक्ष के करीबी सहयोगी को गिरफ्तार किया है।

यह जांच सेवा विकास सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष अमर मूलचंदानी के खिलाफ धन शोधन की जांच से संबंधित है। महाराष्ट्र पुलिस ने ईडी के छापे के दौरान बाधा डालने और सबूत नष्ट करने के आरोप में मूलचंदानी और उनके परिवार के पांच सदस्यों को 27 जनवरी को गिरफ्तार किया था।

ईडी ने कहा, जांच के दौरान यह पाया गया कि एक व्यक्ति (मुंबई में) ईडी कार्यालय परिसर के आसपास अक्सर छिपा रहता था। उससे पूछताछ की गई तो पता चला कि वह बबलू सोनकर (अमर मूलचंदानी का कर्मचारी) है। उसे मूलचंदानी परिवार ने गवाहों को धमकाने और संवेदनशील जानकारी के बदले ईडी कार्यालय में काम करने वाले एक डेटा-एंट्री ऑपरेटर और एक आकस्मिक कर्मचारी को रिश्वत देने का काम सौंपा था।

ईडी के अनुसार भुगतान की गई राशि वसूल कर ली गई है। एजेंसी ने कहा कि सोनकर के पास से आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए हैं और ईडी के अनुबंधित कर्मचारियों ने स्वीकार किया है कि वे उसे संवेदनशील जानकारी दे रहे थे। इसलिए उन्हें धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत गिरफ्तार किया गया है।

मूलचंदानी और अन्य के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग की जांच पुणे पुलिस की ओर से बैंक की शिकायतों के आधार पर दर्ज कई एफआईआर और सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार की ओर से किए गए ऑडिट से संबंधित है। इसमें बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी और सार्वजनिक धन के दुरुपयोग की बात सामने आई है, जिससे सेवा विकास सहकारी बैंक को 429 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है।

ईडी ने कहा, सहकारी बैंक को किसी भी विवेकपूर्ण वित्तीय मानदंडों का पालन किए बिना एक परिवार के स्वामित्व की तरह चलाया जा रहा था। ऋण बिना किसी व्यवहार्य सुरक्षा के और बड़े पैमाने पर रिश्वत के बदले आवेदकों की योग्यता का पता लगाए बिना मंजूर किए जा रहे थे। ईडी ने कहा, 92 प्रतिशत से अधिक ऋण वाले खाते एनपीए में बदल गए और अब बैंक दिवालिया हो गया है।

ऊर्जा क्षेत्र में कोयले की मांग पूरी करने की तैयारी

मुंबई।

सार्वजनिक क्षेत्र की कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने कहा कि ऊर्जा क्षेत्र में आपूर्ति को प्रभावित करे बगैर धातु, सीमेंट जैसै गैर-नियमित क्षेत्र (एनआरएस) को अधिक मात्रा में कोयले की आपूर्ति करने के हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। उत्पादन में वृद्धि से इसमें मदद मिल रही है।

कुछ दिन पहले इस महारत्न कंपनी ने कहा था कि गर्मियों का मौसम समयपूर्व आने और बिजली की औद्योगिक मांग में बढ़ोतरी के बीच वह ऊर्जा क्षेत्र में कोयले की मांग को पूरा करने की तैयारी कर रही है। कोल इंडिया लिमिटेड चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में गैर-नियमित क्षेत्र (एनआरएस) के ग्राहकों को कोयला आपूर्ति में 16.6 प्रतिशत वृद्धि के रास्ते पर है। कंपनी ने एक बयान में बताया कि इस तिमाही में अब तक एनआरएस ग्राहकों को कोयले की प्रतिदिन औसतन 3.67 लाख टन की आपूर्ति की गई है। चालू तिमाही में इस क्षेत्र को लगभग 3.3 करोड़ टन कोयला भेजा जाएगा जो तीसरी तिमाही की तुलना में 16.6 प्रतिशत और पिछले वर्ष की समान तिमाही के मुकाबले 10.4 प्रतिशत अधिक होगा। कोल इंडिया ने कहा कि जनवरी-मार्च तिमाही में एनआरएस को अधिक आपूर्ति कंपनी के पास भंडार अधिक होने के चलते की गई। ऊर्जा कंपनियों को अधिक आपूर्ति के बावजूद मार्च में भी अब तक कंपनी के पास छह लाख टन प्रतिदिन का कोयला भंडार है। दिसंबर 2022 में खत्म तीसरी तिमाही में कोल इंडिया के पास 3.2 करोड़ टन का भंडार था जो 23 मार्च तक बढ़कर 6.3 करोड़ टन हो गया।

बजाज पल्सर 220एफ का अपडेटेड वर्जन भारत में लॉन्च: सिंगल-चैनल एबीएस के साथ मिलेगा सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल, कीमत 1.40 लाख

नई दिल्ली ।

टू-व्हीलर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी बजाज ऑटो ने पल्सर 220एफ का अपडेटेड वर्जन भारत में लॉन्च कर दिया है। बाइक की एक्स-शोरूम कीमत 1.40 लाख रुपए है। पुराने मॉडल की तुलना में इसकी कीमत 3,000 रुपए ज्यादा है।

कंपनी ने अप्रैल-2022 में अपनी इस सेमी-फायर्ड बाइक को बंद कर दिया था। लोगों के बीच बाइक की डिमांड को देखते हुए कंपनी ने कुछ अपडेट्स के साथ भारतीय बाजार में फिर से उतारा है। बजाज ने फिलहाल पल्सर 220एफ का एक ही वैरिएंट लॉन्च किया है। कंपनी मोटरसाइकिल को डिस्पैच करना शुरू कर दिया है। यह जल्द ही देशभर के अधीकृत डीलरशिप पर अवेलेबल होगी। नई पल्सर 220एफ अपाचे 200 बजाज पल्सर एफ250 समेत अन्य को टक्कर देगी।

2023 बजाज पल्सर 220एफ: इंजन और पावर

2023 बजाज पल्सर 220एफ अपने पुराने लुक्स के साथ मेंटेन करती है। इसमें क्लिप-ऑन हैंडलबार्स, स्प्लिट सीट और पीछे की तरफ टू-पीस ग्रैब रेल भी पुराने मॉडल की तरह ही है। बाइक में 220एफ सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड, फ्यूल-इंजेक्टेड इंजन दिया गया है, जो 20की पावर और 18.5 का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इंजन को 5-स्पीड गियरबॉक्स के साथ ट्यून किया गया है। इस इंजन को 6 फेज-2 के नए नॉर्म्स के अनुसार तैयार किया गया है।

2023 बजाज पल्सर 220एफ : फीचर्स

पल्सर 220एफ में टैकोमीटर के लिए एनालॉग डायल के साथ एक सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है। इसके अलावा यहां फ्यूल लेवल इंडिकेटर, स्पीडोमीटर और एक डिजिटल स्क्रीन दी गई है। इसमें टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क्स और रियर में डुअल गैस-चार्ज शॉक एब्जॉर्बर मिलते हैं। बाइक को कंट्रोल करने के लिए सिंगल-चैनल एबीएस के साथ दोनों छोर पर यानी आगे और पीछे डिस्क ब्रेक दिए गए हैं। बाइक में 17-इंच के अलॉय दिए हैं।

अकासा एयर ने किया हायरिंग का ऐलान

1000 एम्प्लॉइज को हायर करेगी एयरलाइन, जल्द ही इंटरनेशनल फ्लाइट्स भी शुरू होंगी

नई दिल्ली ।

इंडिया की सबसे नई एयरलाइन अकासा एयर जल्द ही हायरिंग करने जा रही है। अकासा एयर मार्च 2024 तक अपनी फ्लीट का विस्तार और 1000 एडिशनल स्टाफ मेंबर्स को हायर करने का प्लान बना रही है। एयरलाइन के सीईओ विनय दूबे ने इस बात की जानकारी दी है।

विनय दूबे ने बताया कि मार्च 2024 तक एयरलाइन के टोटल एम्प्लॉइज की संख्या बढ़कर 3,000 से ज्यादा हो जाएगी। जिसमें 1,100 पायलट और फ्लाइट अटेंडेंट शामिल होंगे। अभी एयरलाइन के पास 2,000 से ज्यादा एम्प्लॉइज हैं। सात महीने पहले ही लॉन्च हुई अकासा एयरलाइन इस साल के आखिरी तक इंटरनेशनल ऑपरेशंस भी शुरू कर देगी। हालांकि, अभी तक इंटरनेशनल डेस्टिनेशंस की अनाउंसमेंट नहीं की गई है।

आकासा का एक्सपेंशन प्लान – दुबे ने कहा कि अकासा एयर 2023 के आखिरी तक बड़ी संख्या में नए एयरक्राफ्ट्स का ऑर्डर देगी। एयरलाइन पहले ही 72 बोइंग 737 मैक्स एयरक्राफ्ट्स का ऑर्डर दे चुकी है। जिनमें से 19

एयरक्राफ्ट्स पहले से ही ऑपरेशन में हैं। 20वां एयरक्राफ्ट अप्रैल में शामिल होगा। अकासा एयर का लक्ष्य अगले फाइनेंशियल ईयर में अपनी फ्लीट में 28 एयरक्राफ्ट्स तक का विस्तार करने का है। एयरलाइन की फ्लीट में अभी 9 एयरक्राफ्ट्स शामिल हैं। अकासा एयर वर्तमान में हर दिन 110 फ्लाइट्स ऑपरेट करती है। दुबे ने कहा कि गर्मी के मौसम के आखिरी तक हर दिन 150 फ्लाइट्स ऑपरेट की जाएंगी।

हायरिंग प्रोसेस एंड चैलेंजेस – दुबे ने कहा कि ट्रेनिंग की अनुमति देने के लिए हायरिंग हमेशा पहले से ही जाती है। वहीं एम्प्लॉइज की संख्या डिलीवरी के लिए निर्धारित एयरक्राफ्ट्स की संख्या पर आधारित होती है। यह पूछे जाने पर कि क्या महामारी के बाद हायरिंग करना एक चुनौती है इस पर दुबे ने कहा कि एयरलाइन अच्छे टैलेंट को आकर्षित करने के लिए भाग्यशाली है। एयरलाइन एम्प्लॉई सेंट्रिक होने पर ध्यान देना जारी रखेगी।

इंटरनेशनल ऑपरेशंस – दुबे ने कहा कि एयरलाइन वर्तमान में पॉसिबल इंटरनेशनल डेस्टिनेशंस के लिए अवेलेबल रूट्स और ट्रैफिक राइट्स तय करने के लिए मिनिस्ट्री ऑफ एविएशन के साथ काम कर रही है। दुबे ने पुष्टि की है कि एयरलाइन ईस्ट और वेस्ट दोनों लोकेशनों पर

मोटिवेशनल स्पीकर विवेक बिंद्रा की नहीं हुई गिरफ्तारी: फरीदाबाद पुलिस ने बताया- विवेक के गिरफ्तार होने की सभी खबरें अफवाह

नई दिल्ली । मोटिवेशनल स्पीकर डॉक्टर विवेक बिंद्रा की गिरफ्तारी की खबरों को लेकर अब फरीदाबाद पुलिस ने बयान जारी किया है। दरअसल, बीते दिनों विवेक बिंद्रा की गिरफ्तारी को लेकर सोशल मीडिया पर कई खबरें वायरल हो रही थीं। विवेक पर आरोप लगा था कि उन्होंने कोर्ट के अंदर वीडियो बनाया, इस वजह से जज ने उनको गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया था। पुलिस ने इस पूरे मामले पर सफाई दी है। पुलिस ने बताया कि विवेक बिंद्रा को हिरासत में नहीं लिया गया है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहीं खबरें फर्जी हैं। फरीदाबाद पुलिस के प्रवक्ता सूबे सिंह ने मामले में कहा कि पुलिस की टीम ने बिंद्रा का मोबाइल चेक किया था, लेकिन उसके अंदर कोई वीडियो कोर्ट का नहीं मिला। उनके हिरासत में होने की खबरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रहीं, वो अफवाह मात्र हैं। कई वेबसाइट्स ने भी इस फेक न्यूज को प्रकाशित किया है।

डांस में करियर या कोरियोग्राफर कैसे बने

डांस सिखाना यानि कोरियोग्राफर बनना आज कल युवाओं की पसंद बन रहा है.यह एक पैसा और नाम देने वाला करियर है और फिल्म इंडस्ट्री में अच्छे कोरियोग्राफर की डिमांड रात दिन बढ़ती जा रही है.लेकिन इसमें करियर बनाने की सोचने से पहले यह जान लें की कोरियोग्राफी केवल डांस करना ही नहीं है बल्कि दूसरों को नए तरह का डांस सिखाना है. इसलिए सब तरह के डांस, डांसिंग स्टेप्स और डांस को हर तरह के म्यूजिक पर डांस कर सकना ही कोरियोग्राफी है. चलिए जाने डांस मैं करियर कैसे करे कोरियोग्राफर कैसे बने.

कोरियोग्राफर कैसे बनें-

कुछ लोगो को बचपन से ही डांस करने का बहुत शौक होता हैं. ऐसे लोग बचपन से डांस सीखते हैं या ऐसे भी उन् लोगो को बहुत अच्छा डांस आता. जो लोग डांस में माहिर होते हैं उन् लोगो के घर में भी बहुत सारे डांस कम्पटीशन'से जीती हुई ट्रॉफीज होती हैं. ऐसे लोग बड़े होकर भी अपनी डांस को कंटिन्यू रखना चाहते हैं और डांस मैं अपना करियर बनाना चाहते हैं. लेकिन जिन लोगो को यह अच्छी तरह से पता ही नहीं होता कि उन्हें डांस में करियर बनाने के लिए क्या क्या करने की जरूरत हैं उन् लोगो का सपना तो अधूरा ही रह जाता हैं.

लेकिन हमारा सवाल यह हैं की अगर हुनर और जज्बा हैं तो क्यों हमारा कोई भी सपना अधूरा रहे.आज हम अपने इस लेख में आप लोगो को यह बताएँगे की हम डांस मैं अपना करियर बनाने के लिए क्या क्या तरीका अपना सकते हैं.आप लोगो को बस हमारे इस लेख में दिए गए कुछ ट्रिक्स को ध्यान से पड़ने की और फॉलो करने की जरूरत हैं.यकीं मानिये इन् ट्रिक्स को फॉलो करके आप लोग डांस मैं अपना करियर बनाने में कामयाब जरूर हो जायेंगे.

डांस में करियर कैसे बनाये अपने डांस को हमेशा कंटिन्यू रखें-

आपको अगर डांस करने में रूचि हैं और आप डांस मैं अपना करियर बनाना चाहते हैं तोह आप अपने डांस को कभी भी ऑफ मत रखिए.हमारा कहने का मतलब हैं की आप हो सके तो रोज या दो तीन दिन के बाद बाद अपने घर में ही डांस की प्रैक्टिस करिए.आप अगर चाहे तोह एक कमरे को लॉक करके उस कमरे में अपने डांस की प्रैक्टिस कर सकते हैं. आप अगर अपने डांस को एक दम से बंद न करके उसको कंटिन्यू रखेंगे तो आपको डांस में एक्सपीरियंस बना रहेगा और आपको डांस करने में किसी भी तरह की गलती का एहसास नहीं होगा.

स्कूल, कॉलेज में हो रही डांस कॉम्पेटीशन्स में भाग लें-

अगर आप डांस मैं अपना करियर बनाने मैं इंटरेस्टेड हैं तो आप स्कूल, कॉलेज और बाकि छोटे मोटे functions में होने वाले डांस competitions में भाग लेते रहे. ऐसे छोटे मोटे competitions में भाग लेते रहने से आपकी ऐम्बर्रसमेंट वाली फीलिंग खतम हो जायेगी और जब आपको किसी के सामने डांस करने से ऐम्बर्रसमेंट का एहसास नहीं होगा तब आप अपने डांस को खुल के कर पाएंगे और डांस मैं अपना करियर बनाने में और डांस की दुनिया में अपनी एक जगह बनाने में कामयाब हो जायेंगे.

डांस क्लास ज्वाइन कर सकते हैं

अगर आप डांस मैं अपना करियर बनाना चाहते हैं तोह इस के लिए आपका डांस में माहिर होना बहुत जरूरी हैं. और मैं अपने आप को पक्का और निपुण बनाने के लिए आप लोग एक डांस क्लास ज्वाइन कर सकते हैं. ऐसा करने से डांस के प्रति आपका जूनून और डांस मैं आपका नॉलेज दोनों की वृद्धि होगी. और तभी आप डांस के लिए परफेक्ट माने जायेंगे.

कोरियोग्राफर कैसे बने

कोरियोग्राफर बनने के लिए जरूरी है की आप को डांस करने का बहुत शौक हो. इसके लिए सबसे पहले आप किसी अच्छे डांस स्कूल में प्रवेश लें और डांस के बेसिक स्टेप्स को जान लें जिससे किसी के भी सामने आप कुछ डांस कर के बता सकें. अब डांस की पढाई करनी होगी. कोरियोग्राफी को सिखाने के लिए हर जगह स्कूल या यूनिवर्सिटी नहीं है इसलिए आपको कुछ जगहों पर उपलब्ध डांस की ही संस्थाओं में प्रवेश लेना होगा.

कुछ प्रमुख संस्थाएं जो कोरियोग्राफी सिखाती हैं

» संगीत नाटक अकादमी न्यू डेल्ही,
» नाट्य इंस्टिट्यूट ऑफ कथाक एंड कोरियोग्राफी बंगलोरे
» फैकल्टी ऑफ आर्ट्स इन यूनिवर्सिटी मैसोरे
» स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स एंड म्यूजिक, इंदौर
» कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
» महात्मा गांधी मिशन संगीत अकादमी औरंगाबाद,
» शिवाजी यूनिवर्सिटी कोल्हापुर
» गर्ल्स कॉलेज इंदौर
» फ्लेम स्कूल ऑफ आर्ट्स पुणे
» बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी वाराणसी,

प्राइवेट इंस्टिट्यूट में भी डांसं

जब आप गवर्नमेंट के इन इंस्टिट्यूट से डांस में डिग्री या डिप्लोमा ले लें तो यह मत समझिए कि आपकी डांस की पढाई पूरी हो गयी है.इसके बाद अप्प प्राइवेट संस्थानों से डांस की पढाई करें. कुछ प्रमुख संस्थान जो कोरियोग्राफी सिखाते हैं उनके नाम हैं थे।

डांसवर्क्स परफार्मिंग आर्ट्स अकादमी, मुम्बई
न्यू डेल्ही, शामक डावर इस्टिट्यूट फॉर परफार्मिंग आर्ट्स, मुम्बई
श्रुति संगीत विद्यालय जळगाव आदि हैं.

अब किसी मुम्बई के ग्रुप को ज्वाइन करें

जब आप प्राइवेट इंस्टिट्यूट से भी डांस सीख लें उसके बाद आप मुम्बई के किसी डांस ग्रुप को ज्वाइन कर लें. वैसे तो डांस ग्रुप हर जगह होते हैं पर मुंबई में रहकर आप प्रोड्यूसर और डायरेक्टर्स से संपर्क भी कर सकते हैं इसलिए डांस में करियर बनाने के लिए मुम्बई ही सबसे सही जगह है.

जॉब में ज्यादा से ज्यादा सीखें

अपने इतना सीखा है इसका मतलब यह नहीं कि आप अपने आपको सबसे अच्छा कोरियोग्राफर समझने लगें. याद रखें पढाई के दौरान सीखने में और जॉब करते समय सीखने में बहुत अंतर होता है. इसलिए जब आप डांस ग्रुप ज्वाइन करें तो आप जयादा से ज्यादा अनुभव लेने की कोशिश करें.

विडियो सीडी से सीखें

आप कुछ फॉरेन कोरियोग्राफर के डांसेज की सीडीस खरीद लें. जब आप खाली हों तो आप डांस की सीडीस चलाकर उनके स्टेप्स को नोट करें और सोचें कि इस स्टेप में और क्या नया हो सकता है. यह सभी नए स्टेप जो आप बना रहे हैं उसे आप अकेले में परफॉर्म करके अपने वीडियो कैमरे में रिकॉर्ड कर लें जिससे की आप यह डांस स्टेप्स भूलेंगे नहीं और समय पर आप किसी प्रोड्यूसर और डायरेक्टर को वह स्टेप्स करके दिखा सकते हैं.

प्रोड्यूसर और डायरेक्टर से संपर्क करें

जब आपको यकीन हो जाए कि किसी गाने की कोरियोग्राफी आप कर सकते हैं और आपके पास अनेकों नए डांस स्टेप्स हैं तब आप फिल्म प्रोड्यूसर और डायरेक्टर से संपर्क करें और उन्हे पहली मुलाकात में ही हु डांस स्टेप दिखाएँ की फिल्म प्रोड्यूस और डायरेक्टर्स आप से प्रभवित हुए बिना नहीं रह सके और आपको की कोरियोग्राफी करने का अवसर दें. वैसे तो अनेक फिल्म प्रोड्यूसर अच्छे' कोरियोग्राफर की तलाश करते हैं पर कुछ बड़े बैनर जिनके साथ काम करके आप अपना भविष्य संवार सकते हैं बालाजी टेलीफिल्म्स, मुक्ता आर्ट्स, एरोस इंटरनेशनल, उत्व मोशन पीक्चर्स, भंसाली प्रोड्यूक्शन्स,यश राज प्रोड्यूक्शन्स, धर्म प्रॉड्यूक्शन्स, विशेष फिल्म्स, राजश्री प्रोड्यूक्शन्स हैं.

क्या सैलरी होती है

इस करियर में अनुभव के आधार पर सैलरी मिलते है. एक फ्रेशर कोरियोग्राफर के तौर पर 400 से 500 रूपए प्रति घंटा प्राप्त करता है जबकि कुछ अनुभव हो जाने पर कोरियोग्राफर को 2000 रूपए प्रति घंटे तक मिल जाते हैं.फिल्म इंडस्ट्रीज से जुड़े अनुभवी और सफल कोरियोग्राफर एक साल में 20 लाख रूपए तक कमा लेते हैं.

आप को यह अच्छी तरह से समझ में आ गया होगा की डांस में करियर कैसे बना सकते हैं या डांस में करियर बनाने के के लिए हम किन किन तरीको को अपना सकते हैं. हम तो आप लोगो से बस यही कहेंगे कि अपने इस पैशन को ऐसे ही ठंडा मत हो जाने दीजिये ।

टीवी एंकर क्या है

इस फिल्ड में स्कोप और सम्भावनायें

एंकर टीवी के परदे पर सबसे पहले किसी खबर की सूचना देता है, उसके बारे में बताता है। जब भी हम किसी टीवी एंकर के बारे में सोचते हैं तो मन में यही सवाल आता है की इस फिल्ड में जॉब करना काफी आसान होता है। टीवी पर एंकरिंग करना कोई आसान काम नही होता तथा इस फिल्ड में पैसा कमाना भी आसान काम नही है। टीवी एंकरिंग करनी हो या किसी रेडियो में शो होस्ट करना हो दोनों में काफी मेहनत करनी पड़ती है। एंकरिंग करने के लिए हमे अनेक बातो का ख्याल रखना पड़ता है। एक अच्छे एंकर का काम दर्शकों को चैनल से जोड़े रखना होता है। आजकल टीवी पर एंकरिंग करना एक फैशन बन गया है। लेकिन टीवी पर एंकरिंग करनी हो या रेडियो शो होस्ट करना या फिर किसी मैच की लाइव कमेंट्री करना, इस सबके लिए छात्रों के पास विशेष योग्य का होना अनिवार्य है। इसके साथ ही विनम्र आवाज तथा आत्मविश्वास का होना भी अनिवार्य होता है।

टीवी एंकर के लिए शैक्षिक योग्यता

आजकल काफी छात्र टीवी एंकर की चाह रखते हैं। इस क्षेत्र में आजकल जॉब के लिए काफी अवसर मिल जाते हैं। टीवी एंकरिंग करने के लिए छात्र को किसी मान्यता प्राप्त संस्था से 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण होनी अनिवार्य है। इसके अलावा छात्र को हिंदी भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान होना भी अनिवार्य है।

टीवी एंकर के लिए क्षेत्र

आजकल काफी लोग टीवी एंकर बनने के लिए इससे सम्बंधित कोर्सेज करते हैं। छात्रों को इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए अनेक ऑप्शन मिल जाते हैं। यदि आपने टीवी एंकरिंग का कोर्सेज किया है तो आप भी इस फिल्ड में अपना करियर आसानी से बना सकते हैं। आजकल टीवी में अनेक प्रकार के शो आते हैं। आप चाहे तो टीवी में होने वाले शोज में भी आप जॉब के लिए कोशिश कर सकते हैं।

टीवी एंकर के गुण

1. एक अच्छा टीवी एंकर बनने के लिए आपके पास स्पष्ट आवाज का होना बहुत ही जरुरी होता है।
2. इसके अलावा टेक्निकल सिस्टम को समझने की कैपिसिटी का होना भी अनिवार्य होता है।
3. कई बार तो टीवी एंकरिंग करने के लिए स्क्रिप्ट भी खुद ही लिखनी पड़ती है। ऐसे में आपके पास जर्नलिज्म बैकग्राउंड होना अनिवार्य है।
4. एक अच्छा एंकर बनने के लिए आपके पास मधुर आवाज के साथ-साथ कुशल संचालन योग्यता होनी चाहिए। जिससे आप आसानी से एंकरिंग कर सकेंगे।

टीवी एंकरिंग के कोर्सेस

1. एंकरिंग की बुनियादी जानकारियां
2. टीवी न्यूज़ चैनलों की दुनिया
3. स्टूडियो की बुनियादी जानकारी
4. आवाज़ को निखारें
5. कैसे बने स्टाईलिश एंकर
6. जॉब इंटरव्यू की कैसे करें तैयारी
7. एंकर टिप्स

प्रमुख इंस्टीटयूट

» इंडियन इंस्टिट्यूट आफ मास्स कम्युनिकेशन, न्यू दिल्ली
» एशियाई अकादमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन, नॉएडा
» भारतीय विद्या भवन, न्यू दिल्ली
» गार्डन सिटी कॉलेज, बैंगलोर

ज्वेलरी डिजाइनिंग

में बनाएं अपना सुनहरा भविष्य

अगर आप की रुचि डिजाइनिंग क्षेत्र में जाने की है तो ज्वेलरी डिजाइनिंग आपके लिए बेहतर करियर विकल्प हो सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहां लोगों में ज्वेलरी के प्रति सबसे ज्यादा क्रेज रहता है। इस वजह से ज्वेलरी इंडस्ट्री भी देश की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इस इंडस्ट्री की क्षमता 2015 तक 2.15 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

योग्यता: इस क्षेत्र से जुड़े कई डिप्लोमा, सर्टिफिकेट और एडवांस डिप्लोमा कोर्सेज उपलब्ध हैं। कुछ नामी इंस्टिट्यूट में कंप्यूटर की सहायता से भी ज्वैलरी डिजाइनिंग की शिक्षा दी जाती है। कुछ कोर्सेज के लिए कम से कम स्नातक होना आवश्यक है और कुछ शॉर्ट टर्म या कम अवधि ?वाले कोर्स सीधे बारहवीं के बाद भी किए जा सकते हैं।

कोर्स में क्या पढ़ाया जाता है

कोर्स में आपको पत्थरों के विभिन्न प्रकार, कलर स्कीम, डिजाइन थीम, परजेंटेशन और फ्रेमिंग, इंडिविजुअल जूलरी पीस का डिजाइन करना, पुरुषों की जूलरी, कॉस्ट्युम जूलरी, कॉस्टिंग वगैरह के बारे में बताया जाता है। जहां तक जूलरी की डिजाइनिंग का संबंध है इसके लिए कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होता। किसी फील्ड के प्रफेशनल जूलरी डिजाइनिंग वर्कशॉप में शामिल होकर अपना प्रॉडक्शन हाउस खोल सकते हैं।

जॉब के अवसर

इस क्षेत्र में दिनों दिन बढ़ते रुझान के चलते करियर का स्कोप काफी अच?छा है। शुरुआती सैलरी आप 10 हजार रुपये महीने तक आसानी से कमा सकते हैं। इसमें सबसे बेहतरीन बात यह है कि आप इसका काम फ्रीलांस भी कर सकते हैं या फिर अपना बिजनेस भी स्टार्ट कर सकते हैं।

किन क्षेत्रों मे हैं नौकरी के अवसर

प्राइवेट सेक्टर में मैन्यूफैक्चरिंग कंपनियों, ज्वेलरी हाउसेस, रिसर्च एंड ऑर्गेनाइजेशन, ऑक्शन हाउसेस में नौकरी मिलने के चांसेस रहते हैं। अगर आप चाहें तो आप फ्रीलांस डिजाइन के जरिए अपने बीजनेस की शुरुआत भी कर सकते हैं।

आभूषणों में भी विभिन्न तरह के कोर्स होते हैं इनमें से प्रमुख हैं

» डिप्लोमा इन ज्वेलरी डिजाइन एंड जैमोलॉजी (अवधि 2 वर्ष)
» डायमंड ग्रेडिंग कोर्स (अवधि 2 माह)।
» सर्टिफिकेट इन ज्वेलरी डिजाइन एंड जैमोलॉजी (अवधि 1 साल)
» जैम आइडेंटिफिकेशन (अवधि 3 माह)।
» शार्ट टर्म सर्टिफिकेट कोर्सेज इन जैमोलॉजी, पॉलिशिंग, मैन्युफैक्चरिंग।

कहां से करें कोर्स

» इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जेमोलॉजी, दिल्ली।
» इनसाइन-द ज्वैल डिजाइन इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली।
» आर्च जेमोलॉजी एंड ज्वैलरी इंस्टीट्यूट, जयपुर।
» इंडियन डायमंड इंस्टीट्यूट-सरदार बल्लभ भाई पटेल सेंटर ऑफ ज्वैलरी डिजाइन एंड मेन्युफैक्चर, सूरत।

आयुर्वेद के हैं कई फायदे, आयुर्वेद में बनाये अपना सुनहरा भविष्य

स्नातक स्तर पर बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं सर्जरी (बीएएमएस) जैसा कोर्स विभिन्न भारतीय आयुर्वेदिक संस्थानों में है। इसके बाद विद्यार्थी पीजी प्रोग्राम, जैसे एमडी (आयुर्वेद) और एमएस (आयुर्वेद) की पढ़ाई कर सकते हैं। कुछ संस्थानों में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स भी उपलब्ध हैं, जिनकी अवधि तुलनात्मक रूप से कम होती है।

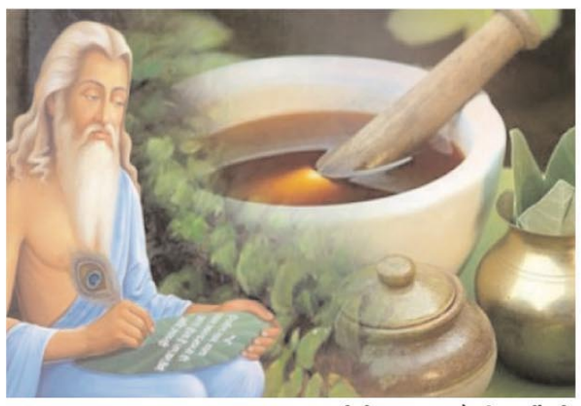

क्या है आयुर्वेद

आयुर्वेद आयुर्विज्ञान की प्राचीन भारतीय पद्धति है। यह आयु का वेद अर्थात आयु का ज्ञान है। जिस शास्त्र के द्वारा आयु का ज्ञान कराया जाए,उसका नाम आयुर्वेद है। शरीर, इंद्रिय सत्व और आत्मा के संयोग का नाम आयु है। आधुनिक शब्दों में यही जीवन है। प्राण से युक्त शरीर को जीवित कहते है। आयु और शरीर का संबंध शाश्वत है। आयुर्वेद में इस संबंध में विचार किया जाता है। जिस विद्या के द्वारा आयु के संबंध में सर्वप्रकार के ज्ञातव्य तथ्यों का ज्ञान हो सके या जिस का अनुसरण करते हुए दीर्घ आयुष्य की प्राप्ति हो सके उस तंत्र को आयुर्वेद कहते हैं।

शैक्षणिक योग्यता: बीएएमएस की अवधि एक साल की इंटर्नशिप सहित साढ़े 5 साल की होती है। जो विद्यार्थी इस कोर्स में दाखिला लेना चाहते हैं, उनके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी के साथ 12वीं उत्तीर्ण होना निर्धारित है। विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के आधार पर इस कोर्स में दाखिले की योग्यता बनती है। एमबीबीएस कर चुके विद्यार्थी भी आयुर्वेद में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में नामांकन करा सकते हैं। जिनकी रुचि शोधकार्यों में है, उन्हें सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदा एंड सिद्धा के माध्यम से मौके मिल सकते हैं।

व्यक्तिगत गुण: प्रकृति और प्राकृतिक वस्तुओं, जैसे जड़ी-बूटी, वनस्पति आदि में स्वाभाविक दिलचस्पी से आप इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। आपकी कम्युनिकेशन स्किल बेहतर होनी चाहिए, तभी आप लोगों को बेहतर परामर्श दे सकते हैं। रोगियों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनने और उनके साथ बेहतर तालमेल बनाए रखने की क्षमता आवश्यक है।

मौकों की कमी नहीं

ये आप जानते हैं कि भारत में नए ट्रेंड के मुताबिक अब ऐसा वर्ग बन रहा है जो एलोपेथी की बजाय आयुर्वेद पर विश्वास कर रहा है। मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग भी रोजमर्रा के इलाज के लिए आयुर्वेद की शरण ले रहा है। ऐसे में इस फील्ड में काफी स्कोप है। निजी और सरकारी आयुर्वेदिक अस्पतालों, क्लीनिकों में जूनियर डॉक्टरों के रूप में आयुर्वेद में प्रोफेशनल नियुक्ति पाते हैं। काम के अनुभव के साथ-साथ इस क्षेत्र में तरक्की की संभावना भी बढ़ती जाती है। इस क्षेत्र में रिसर्च के काफी काम होते हैं। ऐसे में उच्च शिक्षा प्राप्त करके रिसर्च से भी जुड़ा जा सकता है। युर्वेदिन संस्थानों में टीचिंग से संबंधित मौके भी मिलते हैं। आयुर्वेदिक क्लिनिक या आयुर्वेदिक दवाओं की दुकान खोलकर इस क्षेत्र में स्वरोजगार से भी जुड़ा जा सकता है, पर इसके लिए जरूरी है कि कहीं काम करके अनुभव प्राप्त कर लिया जाए।

17 साल पहले की सफलता दोहराने उतरेंगी महिला मुक्केबाज, नीतू और स्वीटी के निशाने पर स्वर्ण पदक

नई दिल्ली ।

भारतीय महिला मुक्केबाजों के सामने 17 साल पहले की सफलता को दोहराने का मौका है। दिल्ली में ही हुई 2006 की विश्व चैंपियनशिप में भारतीय मुक्केबाजों ने चार स्वर्ण पदक जीते थे। इस बार भी उसके चार मुक्केबाज नीतू (48), निकहत जरीन (50), लवलीना (75) और स्वीटी बूरा (81) फाइनल में हैं। नीतू और स्वीटी स्वर्ण के लिए रिंग में उतरेंगी, जबकि निकहत और लवलीना रविवार को फाइनल खेलेंगी।

नीतू ने कहा- इस चैंपियनशिप में उनका खेल सुधरा - दो बार की विश्व यूथ और बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों की विजेता नीतू के सामने दो बार एशियाई चैंपियनशिप में कांस्य जीत चुकीं मंगोलिया की अल्तांतसेतसेग लुतसाइखान होंगी। नीतू अपना पहला विश्व चैंपियनशिप स्वर्ण जीतने के लिए आश्वस्त लग रही हैं। वह कहती हैं कि उन्होंने इस चैंपियनशिप केदौरान अपने खेल में काफी सुधार किया है। पहले वह एक ही तरह से (काउंटर अटैक) बाउट लड़ती थीं, लेकिन अब उन्होंने पास जाकर भी खेलने शुरू किया है। कजाखस्तान की सर्वोच्च वरीय अलुआ के खिलाफ उन्होंने इसी तरह से खेला जिसमें उन्हें सफलता मिली।

स्वीटी ने नौ साल पहले जीता था रजत अब स्वर्ण जीतने का मौका - वहीं, 2014 की विश्व चैंपियनशिप का रजत जीतने वाली स्वीटी के पास अपने पदक का रंग बदलने का मौका है। स्वीटी के सामने 2018 की विश्व चैंपियन चीन की लिना वांग होंगी। स्वीटी के मुताबिक अभी तक उन्होंने इस टूर्नामेंट की दोनों बाउट में पहले दो दौर में अपना सर्वश्रेष्ठ आक्रामक प्रदर्शन किया है, जिसका उन्हें फायदा भी मिला है। इसी प्रदर्शन को वह फाइनल में जारी रखना चाहेंगी।

अपने खिताब की रक्षा करने उतरेंगी निकहत - गत विजेता और बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों का स्वर्ण जीतने वाली निकहत 52 की बजाय ओलंपिक में शामिल 50 भार वर्ग में उतरी हैं। वह पहली बार किसी टूर्नामेंट में छह बाउट लड़ेंगी। उनके सामने फाइनल में दो बार की एशियाई चैंपियन और जकार्ता एशियाई खेलों में कांस्य जीतने वाली वियतनाम की एनगुएन थाई ताम होंगी। कोच भास्कर भट्ट के मुताबिक थाई ताम कम लंबाई की हैं और दूर से खेलती हैं। निकहत मध्यम दूरी से खेलती हैं और इसका उन्हें फायदा मिलेगा। निकहत कहती हैं कि वह स्वर्ण जीतकर अपने माता-पिता को इसे उपहार में देना चाहती हैं।

न्यूज ब्रीफ

विराट कोहली और अनुष्का शर्मा की फाउंडेशन का विलय, सेवा पहल के जरिए करेंगे लोगों की मदद

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली और अभिनेत्री अनुष्का शर्मा ने सेवा पहल की शुरुआत की है। इस पहल के जरिए ये जोड़ा जरूरतमंद लोगों की मदद करेगा। इसके लिए विराट कोहली और अनुष्का ने अपने-अपने गैर लाभकारी संगठन का आपस में विलय कर दिया है। पहले ये दोनों अलग-अलग संगठनों के जरिए लोगों की मदद कर रहे थे। विराट और अनुष्का के नए गैर लाभकारी संगठन का नाम सेवा रखा गया है। अनुष्का और विराट ने एक संयुक्त बयान जारी कर कहा, खलील जिब्रान के शब्दों में दरअसल जीवन ही जीवन देता है- जबकि हम, जो खुद को दाता मानते हैं, केवल एक साक्षी हैं। इस भावना को ध्यान में रखते हुए, 'सेवा के माध्यम से हमने अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने के उद्देश्य से एक साथ काम करने का फैसला किया है। 'सेवा का कार्य किसी खास मुद्दे तक सीमित नहीं रहेगा, क्योंकि यह सामाजिक भलाई के लिए और मानवता के लिए लगातार काम करता रहेगा, जिसकी इस समय बहुत आवश्यकता है। विराट कोहली खेलों के उत्थान के लिए छात्रवृत्ति देना जारी रखेंगे। वह एथलीटों को प्रायोजित करने का काम भी करते रहेंगे। अनुष्का शर्मा जानवरों के हित से जुड़े कामों में सक्रिय रहेंगी। अपने नए संयुक्त संगठन सेवा के जरिए दोनों हस्तियां जरूरतमंद लोगों की पहचान करेंगी और उनकी मदद करेंगी। सेवा का उद्देश्य बड़े पैमाने पर समाज की मदद करना है।

नौवें नंबर की सिंधू को 38वें स्थान की खिलाड़ी ने हराया, सात्विक-चिराग क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

नई दिल्ली । दो ओलंपिक पदक जीतने वाली भारतीय स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू स्विस ओपन सुपर-300 में अपना खिताब सुरक्षित रख पाने के लक्ष्य में सफल नहीं हो सकीं। उन्हें प्री क्वार्टर में इंडोनेशिया की पुत्री कुसुमा वरदानी से हार का सामना करना पड़ा। दुनिया में नौवें नंबर की सिंधू को 38वीं रैंकिंग की कुसुमा से 15-21, 21-12, 18-21 से हार का सामना करना पड़ा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह सिंधू का कुसुमा के साथ पहला मुकाबला था। पुरुष युगल में दूसरी वरीयता के सात्विकसाईराज रैंकिरेड्डी और चिराग शेट्टी ने क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। भारतीय जोड़ी ने ताइवान के फैंग चिह ली और फैंग जेन ली की जोड़ी को कड़े मुकाबले में 12-21, 21-17, 28-26 से हराया। दुनिया में छठे नंबर की सात्विक-चिराग की जोड़ी का सामना अब डेनमार्क की जेपे बे और लेसे मोलहेडे से होगा। इससे पहले पुरुष एकल में दुनिया के नौवें नंबर के खिलाड़ी एचएस प्रणय को फ्रांस के गैर वरीय क्रिस्टो पोपोव के हाथों हार का सामना करना पड़ा। वह अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाए। दुनिया के 40वें नंबर के पोपोव ने उन्हें 21-8, 21-8 से सीधे गेमों में हरा दिया। इसके अलावा किदांबी श्रीकांत को प्री क्वार्टर में हांगकांग के चियुक यियू ली के खिलाफ हार मिली। दोनों खिलाड़ियों के बीच रैंकिंग में एक स्थान का ही फैसला है। चियुक दुनिया के 19वें नंबर के और श्रीकांत 20वें नंबर के खिलाड़ी हैं। राष्ट्रीय चैंपियन मिथुन मंजूनाथ भी दूसरे दौर में चीन ताइपे के चिया हाओ ली से 19-21, 10-21 से हार गए।

वॉर्नर अपने को साबित करने उतरेंगे : शेन वाटसन

मुंबई । आईपीएल टीम दिल्ली कैपिटल्स के सहायक कोच शेन वाटसन ने कहा कि टीम के नए कप्तान डेविड वॉर्नर टूनामेंट में बेहतर बल्लेबाजी कर अपने को साबित करना चाहेंगे। वार्नर को नियमित कप्तान ऋषभ पंत के कार हादसे के कारण बाहर हो जाने से टीम की कप्तानी सौंपी गयी है। वार्नर पहले भी दिल्ली के कप्तान रहे हैं पर आईपीएल में कप्तान के तौर पर उन्हें सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से ही सफलता मिली थी। उनकी कप्तानी में सनराइजर्स ने साल 2016 में खिताब जीता था। वह 2022 सत्र में दिल्ली कैपिटल्स से जुड़े थे। वह विदेशी खिलाड़ियों में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। हाल में इस खिलाड़ी का प्रदर्शन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अच्छा नहीं रहा है। भारत दौरे में वह टेस्ट में विफल रहे। इसके बाद एकदिवसीय सीरीज में भी वह बेहद कम रन बना पाये। वाटसन ने कहा, 'वॉर्नर मेरे लिये क्रम में शीर्ष पर हैं। वह अपने को साबित करना चाहेंगे। उन्होंने आईपीएल में हमेशा काफी रन बनाये हैं। वहीं वाटसन ने दक्षिण अफ्रीका के रिली रोसोऊ को दिल्ली कैपिटल्स के लिए इस सत्र के लिए 'ट्रंप कार्ड बताया। उन्होंने कहा, 'मैंने पाकिस्तान सुपर लीग में क्वेटा ग्लैडिएटर्स के लिए उनके साथ खेला था। उसने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार वापसी की है। वह एक आक्रामक बल्लेबाज है।

विमेंस प्रीमियर लीग फाइनल में मुंबई, आज दिल्ली से मुकाबला

इजाबेल वॉन्ग ने ली टूर्नामेंट की पहली हैट्रिक, नैटली सीवर का दोहरा प्रदर्शन

मुंबई।

मुंबई इंडियंस ने विमेंस प्रीमियर लीग के फाइनल में जगह बना ली है। टीम ने मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में यूपी वॉरियर्ज को एकतरफा मुकाबले में 72 रनों से हराया। मुंबई की इजाबेल वॉन्ग ने टूर्नामेंट की पहली हैट्रिक ली। वहीं नैटली सीवर ने पहले बैटिंग और फिर बॉलिंग से बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को जीत दिलाई। टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी मुंबई ने 4 विकेट पर 182 रन बनाए। जवाब में यूपी की टीम 17.4 ओवर में 110 रन बनाकर ऑलआउट हो गई।

नैटली सीवर ने नाबाद 72 रन बनाए

पहली पारी में मुंबई से नैटली सीवर ने 38 बॉल में 72 रन की नाबाद पारी खेली। इस पारी में उन्होंने 9 चौके और 2 छक्के भी लगाए। फिर गेंदबाजी में ग्रेस हैरिस का अहम विकेट लिया। इतना ही नहीं, उन्होंने लॉन्ग ऑन पर किरण नवगिरे का अहम कैच भी लिया।

यूपी से किरण नवगिरे ही टिक सकीं

अहम एलिमिनेटर मुकाबले में वॉरियर्ज की सभी टॉप बैटर फ्लॉप रहीं। एलिसा हीली 11, ताहलिया मैक्ग्रा 7, श्वेता सेहरावत एक, ग्रेस हैरिस 14 और दीप्ति शर्मा 16 रन ह्यना सकीं। लेकिन किरण नवगिरे ने आक्रामक बैटिंग कर अपनी टीम को उम्मीद दी। हालांकि, वह 27 बॉल में 43 रन बनाकर आउट हो गईं। इस पारी में उन्होंने 3 छक्के और 4 चौके लगाए। नवगिरे के बाद सिमरन शेख और सोफी एक्लेस्टन लगातार गेंदों पर शून्य के स्कोर पर पवेलियन लौट गईं। राजेश्वरी गायकवाड़ और अंजलि सर्वनी ने 5-5 रन बनाए और पार्श्वी चोपड़ा शून्य के स्कोर पर नाबाद लौटीं।

पहली हैट्रिक वॉन्ग के नाम

मुंबई की इजाबेल वॉन्ग ने विमेंस प्रीमियर लीग की पहली हैट्रिक ली। उन्होंने 13वें ओवर की दूसरी बॉल पर किरण नवगिरे को कैच आउट कराया। फिर तीसरी बॉल पर सिमरन शेख और चौथी बॉल पर सोफी एक्लेस्टन को बोल्ड कर दिया। वॉन्ग ने पावरप्ले में एलिसा हीली को भी पवेलियन भेजा था। उन्होंने 4 ओवर में 15 रन देकर 4 विकेट के साथ अपना स्पेल खत्म किया। वॉन्ग के अलावा साइका इशाक को 2 विकेट मिले। वहीं नैटली सीवर ब्रंट, जिंतीमनी कलिता और हेली मैथ्यूज को भी एक-एक विकेट मिला।

पावरप्ले में गंवाए 3 विकेट

183 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी यूपी की शुरुआत खराब रही। टीम ने 21 रन के स्कोर पर ही 3 विकेट गंवा दिए। श्वेता सेहरावत एक, ताहलिया मैक्ग्रा 7 और एलिसा हीली 11 रन बनाकर आउट हुईं। मुंबई से इजाबेल वॉन्ग और साइका इशाक को एक-एक विकेट मिला। एक बैटर रनआउट हुईं। टीम ने पावरप्ले के 6 ओवरों में 3 विकेट के नुकसान पर 46 रन बनाए।

मैथ्यूज, केर ने खेलीं उपयोगी पारियां

मुंबई से नैटली सीवर के 72 रन के अलावा अमीलिया केर ने 19 बॉल पर 29 रन बनाए। वहीं हेली मैथ्यूज ने 26, यस्तिका भाटिया ने 21 और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 14 रन बनाए। पूजा वस्त्राकर 3 बॉल में 11 रन बनाकर नाबाद रहीं। यूपी से एक्लेस्टन के अलावा अंजलि सर्वनी और पार्श्वी चोपड़ा को एक-एक विकेट मिला।

पावरप्ले में अंजलि ने दिलाई सफलता

टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी मुंबई इंडयंस को विकेटकीपर यस्तिका भाटिया ने तेज शुरुआत दिलाई। उन्होंने शुरुआत से ही अपने शॉट्स खेले, लेकिन पांचवें ओवर में वह अंजलि सर्वनी की बॉल पर कैच आउट हो गईं। 18 बॉल पर 21 रन बनाए। पावरप्ले के 6 ओवरों में मुंबई ने एक विकेट खोकर 46 रन बनाए।

यूपी ने किया एक बदलाव

यूपी की कप्तान एलिसा हीली ने शबनिम इस्माइल की जगह ग्रेस हैरिस को टीम में शामिल किया। मुंबई की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने अपनी टीम में कोई बदलाव नहीं किए।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

मुंबई इंडियंस: हरमनप्रीत कौर (कप्तान), हेली मैथ्यूज, यस्तिका भाटिया (विकेटकीपर), नैटली सीवर ब्रंट, अमीलिया केर, इजाबेल वॉन्ग, पूजा वस्त्राकर, अमनजोत कौर, हुमायरा काजी, जिंतिमनी कलिता और साइका ईशाक।

यूपी वॉरियर्ज: एलिसा हीली (विकेटकीपर और कप्तान), श्वेता सेहरावत, ताहलिया मैक्ग्रा, ग्रेस हैरिस, किरण नवगिरे, सिमरन शेख, सोफी एक्लेस्टन, दीप्ति शर्मा, अंजलि सर्वनी, पार्श्वी चोपड़ा और राजेश्वरी गायकवाड़।

दिल्ली के हर खिलाड़ी की जर्सी पर पंत का नंबर

कोच रिकी पोंटिंग बोले- ऋषभ की जगह को नहीं भरा जा सकता

नई दिल्ली ।

आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स के हर खिलाड़ी की जर्सी या कैप पर ऋषभ पंत की जर्सी नंबर 17 लिखा होगा। दिल्ली कैपिटल्स के कोच रिकी पोंटिंग ने इसकी जानकारी दी। रिकी पोंटिंग ने कहा, चोटिल ऋषभ पंत की जगह को नहीं भरा जा सकता है और कोई भी ऐसा खिलाड़ी नहीं है जो उनके जैसा प्रभाव छोड़ सके। उन्होंने आगे कहा, पंत का बाहर होना बहुत बड़ा झटका है और यह मायने नहीं रखता कि हमने उनकी जगह किसे रखा है। हमें तब भी ऋषभ की कमी खलेगी। वह हमारे लिए फिनिशर है और उनकी जगह भरना असंभव है।

पिछले साल पंत के कार का हो गया था एक्सीडेंट - दरअसल 31 मार्च से शुरू हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग में इस बार ऋषभ पंत खेलते हुए नजर नहीं आएंगे। पिछले साल 31 दिसंबर को दिल्ली से अपने घर रुड़की जाते वक्त पंत के कार का एक्सीडेंट हो गया था। जिसके बाद उन्हें गंभीर चोटें आई थी। उनके घुटने का ऑपरेशन हुआ है। उनके फिट होने में अभी टाइम लगेगा। फिलहाल वह अभी रिहैब हो रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स का पहला मैच 1 अप्रैल को लखनऊ में लखनऊ जायंट्स के खिलाफ है।

कप्तान वार्नर ही करेंगे टीम के लिए ओपनिंग - दिल्ली कैपिटल्स ने डेविड वार्नर को 6.25 करोड़ रुपये में खरीदा था और वो आईपीएल 2023 में टीम का नेतृत्व करेंगे। वहीं ऑलराउंडर अक्षर पटेल टीम के उप-कप्तान होंगे। पोंटिंग ने साफ किया कि पारी का आगाज वॉर्नर ही करेंगे। पोंटिंग ने कहा, मैं नहीं चाहता कि वॉर्नर चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करें। वह आईपीएल इतिहास का सबसे सफल सलामी बल्लेबाज है और पिछले साल दिल्ली के लिए उन्होंने जो मैच खेले थे उनमें भी हमने इसे देखा।

दिल्ली कैपिटल्स के लिए 35 की औसत से बनाए हैं रन - पंत ने दिल्ली कैपिटल्स के लिए अब तक खेले 98 मैचों में 34.61 की औसत से 2,838 रन बनाए हैं। उन्होंने एक शतक और 15 अर्धशतक लगाए हैं।

दिल्ली कैपिटल्स पिछले साल पांचवें स्थान पर थी - आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स की बात करें तो अभी तक ट्रॉफी अपने नाम नहीं किया है। पिछले साल टीम 14 अंक हासिल कर पॉइंट टेबल में 5वें स्थान पर रही। टीम प्लेऑफ में नहीं पहुंच पाई थी।

अफगानिस्तान ने पाकिस्तान को पहली बार टी-20 में हराया: पाक ने बनाए महज 92 रन, अफगान 13 बॉल रहते 6 विकेट से जीता

नई दिल्ली ।

अफगानिस्तान ने शारजाह में तीन टी-20 मैचों की सीरीज के पहले मुकाबले में पाकिस्तान को 6 विकेट से हराया। पाकिस्तान की टी-20 में अफगानिस्तान से यह पहली हार है। पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 92 रन स्कोर बनाए। जवाब में अफगानिस्तान ने 17.5 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 98 रन बनाकर मुकाबला अपने नाम कर लिया।

पाकिस्तान ने प्रमुख खिलाड़ियों को दिया है आराम - पाकिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज से अपने स्टार खिलाड़ी बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और शाहीन अफरीदी को आराम दिया है। ऐसे में इन खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में पाकिस्तानी टीम बिखरी हुई नजर आई और अफगानिस्तान की चुनौती पार नहीं कर सकी।

पाकिस्तान की खराब शुरुआत - पाकिस्तान ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। पाकिस्तान की खराब शुरुआत रही। ओपनर मोहम्मद हारिस मात्र 6 रन बनाकर आउट हो गए। वही अब्दुल्लाह शफीक अपना खाता भी नहीं खोल पाए। सैम अयूब भी 17 रन ही बना सके। उन्होंने अपनी पारी में 2 चौके और एक छक्का जड़ा। तैयब ताहिर भी ज्यादा स्कोर नहीं कर पाए। वे भी 16 रन बनाकर आउट हो गए। कप्तान शादाब खान भी कुछ खास नहीं कर पाए। वे भी 12 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। अफगानिस्तान के लिए फजहल फारुकी, मुजीब उर रहमान और मोहम्मद नबी ने दो-दो विकेट लिए।

अफगानिस्तान ने 13 गेंद पहले हासिल किया लक्ष्य - 93 रन का टारगेट का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान ने खराब शुरुआत के बावजूद 13 गेंद पहले लक्ष्य को हासिल कर लिया। अफगानिस्ता को पहला झटका टीम के स्कोर 23 रन पर लगा। ओपनर इब्राहिम जादरान 9 रन बनाकर इहसानुल्लाह की गेंद पर आउट हो गए और गुलबदीन नैब अपना खाता खोले बगैर ही पवेलियन लौट गए। रहमानुल्लाह गुरबाज भी 16 रन बनाकर 27 के स्कोर पर चलते बने। अफगानिस्तान की पारी को मोहम्मद नबी और नजीबुल्लाह जादरान ने संभाला। नबी ने 38 रनों की नाबाद पारी खेली और जादरान ने नाबाद 17 रन बनाए। पाकिस्तान के लिए इहसानुल्लाह ने 3.5 ओवर में 17 रन देकर 2 विकेट लिए। वहीं इमाद वसीम ने 4 ओवर में 11 रन देकर 1 विकेट लिए। इसके अलावा नसीम शाह ने भी एक विकेट लिए।

पाक के तेज गेंदबाज हारिस ने वाघा बॉर्डर पर पीएसएल ट्रॉफी के साथ मनाया जश्न वीडियो वायरल होने पर भारतीय फैंस ने जमकर किया ट्रोल

नई दिल्ली ।

पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हारिस रऊफ का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वह पीएसएल ट्रॉफी के साथ वाघा बॉर्डर पर जश्न मनाते नजर आ रहे हैं। इस घटना का वीडियो पाकिस्तान सुपर लीग की फ्रेंचाइजी लाहौर कलंदर्स ने खुद अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किया है। इस दौरान उनके साथ पाकिस्तान के स्टार भाला फेंक एथलीट अरशद नदीम भी नजर आए। हालांकि इस वीडियो के वायरल होने के बाद भारतीय फैंस ने उन्हें जमकर ट्रोल किया। बता दें कि लाहौर कलंदर्स लगातार दूसरी बार शाहीन शाह अफरीदी की कप्तानी में पाकिस्तान सुपर लीग का खिताब जीतने में सफल रही है। फाइनल मुकाबले में उन्होंने मुल्तान सुल्तान पर एक रन से रोमांचक जीत दर्ज की थी।

लाहौर कलंदर्स ने हारिस रऊफ के इस वीडियो को पोस्ट करते हुए लिखा हारिस रऊफ वाघा बॉर्डर पर पीएसएल 8 ट्रॉफी लेकर आए, इसके अलावा भी इस फ्रेंचाइजी ने इस घटना की कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किए। भारतीय फैंस ने इस दौरान उन्हें जमकर ट्रोल किया। एक फैन ने लिखा कि ये क्या जीत लिया। इंडिया में इससे ज्यादा पैसा तो लोकल मैच पर लग जाते हैं, वहीं एक फैन ने कहा आईपीएल का नाम सुना है पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) 2023 का फाइनल मुकाबला लाहौर कलंदर्स और मुल्तान सुल्तान्स के बीच खेला गया था। लाहौर ने मैच में मुल्तान को एक रन से मात दी। फाइनल का नतीजा अंतिम गेंद पर निकला था। शाहीन अफरीदी की लाहौर कलंदर्स ने खिताबी मुकाबले में 200/6 का स्कोर बनाया था। लक्ष्य का पीछा करते हुए मोहम्मद रिजवान की अगुवाई वाली मुल्तान टीम निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट गंवाकर 199 रन ही जुटा सकी थी। मुल्तान को आखिरी ओवर में जीत के लिए 13 रन चाहिए थे लेकिन लाहौर के गेंदबाज जमान खान ने केवल 11 रन खर्च किए। अंतिम गेंद पर 4 रन की जरूरत थी मगर खुशदिल शाह (25) दौड़कर 2 रन ही कंप्लीट कर पाए और रनआउट हो गए। लाहौर पीएसएल में खिताब का बचाव करने वाली पहली टीम है।

इंडियन स्पोर्ट्स ऑनर्स 2023

बिजली-बिजली गाने पर जमकर थिरके नीरज चोपड़ा देसी डांस कर लूट ली महफिल

नई दिल्ली।

24 मार्च को इंडियन स्पोर्ट्स ऑनर्स 2023 का आयोजन किया गया। इस अवॉर्ड शो में देश के कई बॉलीवुड और खेल जगत के बड़े-बड़े सितारों ने शिरकत की, जिसमें ओलिंपिक मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा का नाम भी शामिल रहा, जिन्होंने पूरे शो में सबसे ज्यादा सुर्खियां बटोरी। हाल ही में सोशल मीडिया पर नीरज चोपड़ा का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह बिजली-बिजली गाने पर जमकर थिरकते हुए नजर आ रहे हैं। फैंस को उनका हरिणायवी में डांस काफी पसंद आ रहा है। दरअसल, इंडियन स्पोर्ट्स ऑनर्स के अवार्ड शो में भारतीय टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली, शुभमन गिल से लेकर भारत को जेवलिन थ्रो में ओलंपिक गोल्ड मेडल दिलाने वाले नीरज चोपड़ा ने खूब लाइमलाइट बटोरी। सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा सुर्खियां नीरज चोपड़ा के डांस ने बटोरी है, जो सूट-बूट पहनकर आए, जिन्होंने पंजाबी सिंगर हार्डी सांधू के गाने बिजली-बिजली पर जमकर ठुमके लगाए और एक दम हरियाणवी स्टाइल में डांस किया। नीरज को इस तरह से नांचते देख फैंस काफी खुश नजर आ रहे है। नीरज हाथ में कोट लेकर चेहरे पर मुस्कान लेते हुए डांस करते हुए स्पॉट हुए। बता दें कि विराट कोहली की कुछ वीडियो भी काफी वायरल हो रहे हैं। एक वीडियो में विराट कोहली और उनकी वाइफ अनुष्का शर्मा इंडियन स्पोर्ट्स ऑनर 2023 में बॉलीवुड अभिनेत्री नेहा धूपिया और उनके पति अंगद बेदी के साथ डांस करते हुए नजर आए, जिसे फैंस खूब शेयर कर रहे है। बता दें कि भारतीय खेल सम्मान (आईएसएच) पुरस्कार का शो हर साल होता है, जो खिलाड़ी के प्रदर्शन को मान्यता देता है। आयोजन के 2023 संस्करण में 1 जनवरी, 2021 और 28 फरवरी, 2023 के बीच शानदार प्रदर्शन के साथ विभिन्न खेलों के एथलीटों का सम्मान किया जाएगा।

न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को 198 रन से हराया: श्रीलंका के 8 खिलाड़ी नहीं छू पाए दहाई का अकड़ा, शिप्ले ने झटके 5 विकेट

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड ने तीन वनडे मैचों की सीरीज के पहले मुकाबले में श्रीलंका को 198 रन से हरा दिया। ऑकलैंड में खेले गए मैच में न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.3 ओवर में 10 विकेट के नुकसान पर 274 रन बनाए और श्रीलंका को 275 रन का लक्ष्य दिया। जवाब में श्रीलंका 19.5 ओवर में महज 76 रन पर ऑल आउट हो गई, और न्यूजीलैंड ने पहला वनडे 198 रनों के विशाल अंतर से जीत लिया। न्यूजीलैंड के लिए हेनरी शिप्ले ने 5 विकेट झटके। कीवी टीम के 8 बल्लेबाज दहाई (10 रन) का आंकड़ा भी नहीं छू पाए। इसके साथ ही न्यूजीलैंड ने 3 मैचों की सीरीज में 1-0 की अजेय बढ़त बना ली है। सीरीज का दूसरा मुकाबला 28 मार्च को क्राइस्टचर्च में खेला जाएगा। शिप्ले को प्लेयर ऑफ थे मैच चुना गया।श्रीलंका ने टॉस जीत कर पहले बॉलिंग करने का फैसला किया।

इन कारणों से अक्सर बेहोश हो जाते हैं लोग

क्या आपने कभी सोचा है कि बेहोशी के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? हम अपने आस - पास अक्सर ऐसा देखते हैं कि कोई व्यक्ति जो पूरी तरह से फिट और स्वस्थ दिख रहा है लेकिन अचानक बिना किसी कारण वो अपने बेहोश होने लगता है। बेहोशी जो मस्तिष्क में ऑक्सीजन की कमी के कारण होता है हालांकि बेहोशी के कारण स्पष्ट नहीं है, लेकिन कुछ ऐसे कारक हैं जो इसके लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। ये कुछ कारक है जो बेहोशी के कारण हो सकते हैं-

लो ब्लडप्रेशर: बेहोशी का मेन कारण लो ब्लडप्रेशर बताया जाता है यह आमतौर पर विशेष रूप से उन लोगों को ज्यादा होता है जो 65 से अधिक आयु वर्ग के होते हैं।

निर्जलीकरण: जब आपके शरीर निर्जलित हो जाता है, आपके खून में तरल पदार्थ की मात्रा कम हो जाती है और ब्लड प्रेशर में कमी हो जाती है। इससे बेहोशी का खतरा बढ़ जाता है।

मधुमेह: आप एक मधुमेह रोगी हैं तो आपके बेहोश होने के चांसेज ज्यादा हैं क्योंकि डायबेटिक होने पर आपको यूरिन ज्यादा आएगा जिससे आपको निर्जलीकरण होने का खतरा ज्यादा बना रहता है।

दिल की बीमारी: दिल की बीमारी भी बेहोश होने का एक प्रमुख कारण माना जाता है, क्योंकि ऐसा होने पर आपके दिमाग को होने वाली खून की सप्लाई बाधित हो जाती है। बेहोशी के इस प्रकार के लिए मेडिकल टर्मेनोलॉजी में कार्डियक सिंनकॉप कहा जाता है।

डिमेंशिया के खतरे को कम करती है नियमित कसरत

नियमित रूप से कसरत करने के कई फायदे होते हैं। इससे शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने में मदद तो मिलती ही है। एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में भी यह योगदान करता है। नियमित रूप से कसरत करने से न केवल हमारा मस्तिष्क सक्रिय रहता है बल्कि डिमेंशिया जैसी भूलने वाली बीमारी का खतरा भी कम हो जाता है। चूहे पर किए गए एक नए अध्ययन में पाया गया कि कसरत शरीर में एक महत्वपूर्ण प्रोटीन की उत्पादकता बढ़ा सकता है। यह प्रोटीन मस्तिष्क को सक्रिय करने के साथ ही (न्यूरो) तंत्रिका से जुड़ी बीमारियों के खतरे को कम करता है। अध्ययन में पाया गया कि चूहे के नियमित कसरत के दौरान कुछ रसायन स्वत: मस्तिष्क में जमा हुए और मस्तिष्क के लिए बीडीएनएफ (मिरेकल-ग्रो) का उत्पादन करने लगे। बीडीएनएफ याददाश्त बढ़ाने और तंत्रिका कोशिकाओं की वृद्धि में सहायक होता है। स्तनधारियों में कसरत से बढ़ने वाले बीडीएनएफ के पीछे होने वाली जैविक प्रकिया को हमारा यह अध्ययन दर्शाता है।

स्वास्थ्य के लिए वरदान है प्याज

प्याज एक अत्यंत गुणकारी पौधा है जिसमें औषधीय गुण भी पाएं जाते हैं। इसके अलावा इसमें ग्लूकोस भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। हरा प्याज चेहरे की झुर्रियों को दूर करता है। इसे खाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है। इसके इलावा मसूड़ो में सूजन और दांत में दर्द होने पर प्याज के रस और नमक का मिश्रण लगाने से दर्द में राहत मिलती है।

पेट के लिए वरदान पपीता

फलों में पपीता पेट के लिए काफी लाभदायक है। इसमें पेप्सिन नामक तत्व पाया जाता है, जो भोजन पचाने में मदद करता है। पपीते का सेवन रोज करने से पपीते में पर्याप्त मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट तत्व होते हैं। इसमें न सिर्फ बीटा कैरोटिन, बल्कि लाइकोपिन भी पर्याप्त मात्रा में होता है। जो पुरुष ज्यादा लाइकोपिन युक्त फल और सब्जियों का सेवन करते हैं उनमें प्रोस्टेट कैंसर की आशंका 82 प्रतिशत कम होती है।

दिमाग तेज करने इस्तेमाल करें ये जड़ी-बूटियां

आज हर कोई चाहता है कि उसका दिमाग तेज हो ताकि वे हर जगह अपनी अलग पहचान बना सके। क्योंकि दिमाग हमारे शरीर को वो हिस्सा है जिसके संकेत के बिना शरीर का कोई भी अंग काम नहीं कर सकता। लेकिन कई बार बढ़ती उम्र, गलत आदतों, नशे और आवश्यक पोषक तत्वो की कमी आदि से याददाश्त कमजोर होने लगती है।

ऐसी कौन सी जड़ी-बूटियां है जिनको अपने आहार में शामिल करके आप आसानी से तेज दिमाग पा सकते हैं।

जटामांसी

जटामांसी औषधीय गुणों से भरपूर जड़ी-बूटी है। यह दिमाग के लिए एक रामबाण औषधि है। यह याददाश्त को तेज करने की भी अचूक दवा है। एक चम्मच जटामासी को एक कप दूध में मिलाकर पीने से दिमाग तेज होता है।

बाह्मी

जड़ी-बूटी को दिमाग के लिए टॉनिक भी कहा जाता है। यह दिमाग को शांति प्रदान करती है और याद्दाश्त को मजबूत करने में भी मदद करती है। आधे चम्मच बाह्मी के पाउडर और शहद को गर्म पानी में मिलाकर पीने से दिमाग तेज होता है।

शंख पुष्पी

शंख पुष्पी दिमाग को बड़ाने के साथ-साथ हमारी याद करने की क्षमता और सीखने की क्षमता को भी बड़ाती है। दिमाग को तेज करने के लिए आधे चम्मच शंख पुष्पी को एक कप गरम पानी में मिला कर लें।

दालचीनी

दालचीनी सिर्फ गर्म मसाला ही नहीं, बल्कि एक जड़ी-बूटी भी है। यह दिमाग को तेज करने की बहुत अच्छी दवा है। रात को सोते समय नियमित रूप से एक चुटकी दालचीनी पाउडर को शहद के साथ मिलाकर लेने से डिप्रेशन में राहत मिलती है और दिमाग तेज होता है।

हल्दी

यह सिर्फ खाने के स्वाद और रंग में ही इजाफा नहीं करती है, बल्कि दिमाग को भी स्वस्थ रखने में मदद करती है। हल्दी दिमाग के लिए बहुत अच्छी जड़ी-बूटी है। इसके नियमित सेवन से एल्जाइमर रोग नहीं होता है। एक शोध के अनुसार, हल्दी में पाया जाने वाला रासायनिक तत्व कुरकुमीन दिमाग की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को रिपेयर करने में मदद करता है

जायफल

गर्म तासीर वाले जायफल की थोड़ी मात्रा का सेवन करने से दिमाग तेज होता है। इसको खाने से आपको कभी एल्जाइमर यानी भूलने की बीमारी नहीं होती।

अजवाइन की पत्तियां

अजवाइन में भरपूर मात्रा में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट दिमाग के लिए एक औषधि की तरह काम करता है। खाने में सुगंध के अलावा शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में भी मदद करती है।

तुलसी

तुलसी कई प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए एक जानी-मानी जड़ी बूटी है। इसमें मौजूद शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट हृदय और दिमाग में रक्त के प्रवाह में सुधार करता है। साथ ही इसमें पाई जाने वाली एंटी-इंफ्लेमेटरी अल्जाइमर जैसे रोग से सुरक्षा प्रदान करता हैं।

केसर

केसर का उपयोग खाने में स्वाद बढ़ाने के साथ-साथ अनिद्रा और डिप्रेशन दूर करने वाली दवाओं में किया जाता है। इसके सेवन से दिमाग तेज होता है।

कालीमिर्च

दिमाग को स्वस्थ बनाए रखने के लिए काली मिर्च का उपयोग करें। काली मिर्च में पाया जाने वाला पेपरिन नामक रसायन शरीर और दिमाग की कोशिकाओं को आराम देता है। डिप्रेशन को दूर करने के लिए भी यह रसायन जादू सा काम करता है।

अच्छी सेहत पाना चाहते हैं तो जरूर खाएं मक्खन

मक्खन हर घर मे पाया जाता है। इसे उपयोग हम खाने में करते है। इसमें कैलोरिज की मात्रा ज्यादा होती है। अगर इसे हर रोज खाया जाए तो इसे आपका वजन काफी ज्यादा बढ़ भी सकता है। पर इसके बहुत से ऐसे गुण शामिल है जो कि हमारी सेहत के लिए अच्छे है। इसमें विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट्स ज्यादा मात्रा में मौजूद है इसलिए यह छोटे बच्चों के बढ़ने के लिए बहुत ही फायदेमंद है। जिनको लिवर संबंधी समस्या होती है, उनके लिए बटर में पका खाना सुपाच्य होता है। आज हम आपको मक्खन से सेहत के लिए फायदों के बारे में बताएगे।

अच्छा मूड : मक्खन में अधिक मात्रा में सेलेनियम होता है, जिससे खाने से हमारा नर्वस सिस्टम अच्छा रहता है। जब हम इसे गरमा-गरम सब्जी में डाल कर खाते है तो इसे खाते ही हमारा मूड अच्छा हो जाता है और सब्जी खाने में स्वाद भी लगती है।

थायराइड: मक्खन थायराइड ग्रंथि को ठीक करने के लिए बहुत ही फायदेमंद है क्योंकि इसमें विटामिन ए की मात्रा अधिक पाई जाती हैं। अगर आप सोचते है कि इसे खाने से आपका वजन बढ जाएगा तो ऐसी नही है।

दिमागी विकास: मक्खन खाने से बच्चों का दिमागी विकास अच्छा रहता है और आंखो की रौशनी ठीक रहती है। इसीलिए अपने बच्चों को खाने में दूध और मक्खन जरूर दें।

एनर्जी लेवल बढाए : बटर को खाने के बाद हमारे शरीर में फैट में परिवर्तित हो जाता है और जरुर पड़ने पर यह हमारे एनर्जी लेवल को बढ़ाता हैं।

कैंसर और ट्यूमर : मक्खन में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा ज्यादा होती है और यह हमें कैंसर या ट्यूमर बचाता है। इसका प्रयोग एंटी एजिंग क्रीम में भी किया जाता है।

त्वचा में चमक : मक्खन को चेहरे पर लगाने से त्वचा कोमल बनती है और चेहरे में निखार आता है।

बटर खाने से अच्छी नींद आती है: जब भी आपके काम करने के बाद में थकावट होती है तो ऐसे में रात के खाने में बटर जरुर खाएं। इसे खाने से अच्छी नींद आती है क्योंकि इसमें सेलेनियम होता है।

विटामिन डी : मक्खन में विटामिन डी की मात्रा ज्यादा पाई जाती हैं इसीलिए इसे नाश्ते में नही खाना चाहिए। मक्खन को चेहरे पर लगाने से त्वचा कोमल बनती है और चेहरे में निखार आता है।

मुफ्त स्नैक्स हैं खतरनाक...

कई कंपनियां अपने कर्मचारियों का मनोबल और उत्पादकता बढ़ाने के लिए नि:शुल्क स्नैक्स की पेशकश करती हैं, जो कर्मचारियों में मोटापे की वृद्धि करती हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि नि:शुल्क पेय पदार्थ और नाश्ते का प्रावधान कर्मचारियों में इसे बार-बार लेने की मानसिकता को बढ़ावा देता है। अध्ययन में यह भी पता चला कि कर्मचारी स्नैक्स को पेय पदार्थों से ज्यादा तरजीह देते हैं। अमेरिका की सेंट जोसेफ यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार, यह काफी आश्चर्यजनक है कि स्नैक्स और पेय पदार्थों के बीच का चुनाव स्नैक्स लेने की आदत में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है। स्नैक्स का सेवन करने की आदतें पुरुषों में महिलाओं से अधिक देखी गई है।

...तो घबराने की जरूरत नहीं

ब्रेड में पोटेशियम ब्रोमेट और आयोडेट जैसे रसायनों की उपस्थिति को लेकर घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन किसी भी चीज की अति से बचना चाहिए। यह खतरनाक हो सकता है। सच तो यह है कि कोई भी रोज एक पूरा पैकेट ब्रेड नहीं खाता है। अधिकतर लोग एक या दो स्लाइस ब्रेड ही खाते हैं, इसलिए लंबे समय तक उपयोग को लेकर इसके बारे में घबराने की जरूरत नहीं है और भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने भी ऐसा ही कहा है। वैसे भोज्य पदार्थों में रासायनिक एडीटिव का उपयोग जहां तक हो सके कम होना चाहिए और इसकी जगह ताजे भोज्य पदार्थ जैसे अंडे, फल, सब्जी तथा अन्य विकल्पों का उपयोग होना चाहिए। इसके साथ ही कोई भी चीज कम मात्रा में ही खानी चाहिए।

बच्चों को कुछ नायाब सिखाएं...

बच्चे अक्सर गर्मियों की छुटियो में हॉलिडे होम वर्क में चिपके रहते है, क्यों न उन्हें इस गर्मी कुछ अच्छा, कुछ नया या कुछ नायाब करना सिखा दिया जाए, जिससे वे टैलेंटेड भी हो जाएं और आने वाले जीवन में हर तरीके से तैयार रहे, इसलिए आज हम आपको बच्चों के लिए कुछ ऐसी चीजें बताने जा रहे हैं, जो उनके करियर को भी शेप दे सकती हैं।

पेपर ज्वेलरी/ब्रेसलेट

एक पुराना अखबार लेकर स्केल की मदद से पेपर के सबसे ऊपरी भाग पर अल्टरनेटिव इंच का उपयोग कर निशान लगा लें। इसी तरह, पेपर के तल पर यानी नीचे की ओर आधे इंच के अंतराल पर निशान लगाएं। ऊपर के अल्टरनेटिव निशान से नीचे के निशान तक (कोण की तरह) लाइन बना लें। अब इस कोण को काट लें और दो रंग की मदद से पेपर पर अल्टरनेटिव रूप से रंग करें। सूखने के बाद, इसे विस्तृत से संकीर्ण तक रोल बना लें और और गोंद की मदद से इसके टिप को सुरक्षित करें। आप इसे पूरा करने के लिए रोल पर पारदर्शी नेल पेंट लगा दें। इसी तरह आप और बीड्स (मोती) भी बना सकते हैं। ब्रेसलेट बनाने के लिए, एक इलास्टिक धागा लें और मोतियों को एक के बाद एक डालकर और अंत में दोनों कोनों को टाई करके बंद कर दें।

साटन रिबन पर्ल नेकलेस

एक रिबन लेकर उसे दो हिस्सों में फोल्ड कर दें। फिर फोल्डेड अंत में एक गांठ बनाए। एक साइड का किनारा लेकर उस पर गांठ बना लें। अब सिरों में से एक के माध्यम से मोती डालना शुरू करें और दूसरी गांठ से मोती को सुरक्षित करें। अब अन्य साइड को किनारा लेकर उसपर गांठ बना लें। अब इसमें मोती को जोड़े और गांठ की मदद से इसे सुरक्षित कर लें और ऐसा ही दूसरी तरफ से भी करें। अब दोनों सिरों को एक साथ पकड़कर उसमें गांठ बांध दें। अब जहां से मोती डालना शुरू किया था उसी अंत में गांठ बना लें। बस गांठ के नीचे एक मोती जोड़ कर इसे फिर से सुरक्षित करने के लिए एक गांठ बना लें। एक और मोती जोड़ कर गांठ बना लें। दूसरे किनारे पर एक मोती जोड़ें। दोनों सिरों को एक साथ रखने के लिए एक गांठ बना दें। इसे तब तक करें जब तक आप इच्छित आकार नहीं पा लेते। रिबन के दो और हिस्से लेकर उसे दो टुकड़ों में फोल्ड कर लें। नेकलेस के दोनों साइट पर इस साटन रिबन जोड़ दें, इस तरह आपका साटन पर्ल नेकलेस तैयार है।

सेफ्टी पिन ब्रेसलेट

दो से तीन पैकेट सेफ्टी पिन और अलग-अलग रंगों के मोती ले लें। अब पिन को खोलकर, हर रंग के मोती को एक-एक करके उसमें डालें और मोती को सुरक्षित रखने के लिए पिन को बंद कर दें। ऐसा सभी पिनों के साथ करें।अब पिन की आंख के माध्यम से सबसे पहले इलास्टिक तार और अगले पिन के नीचे के छेद से वैकल्पिक रूप से डालें। एक बार जब सभी पिन के माध्यम से तार गुजर जाये तो इसे बाहर ले लें और वैकल्पिक रूप से पिन के दूसरे छोर के माध्यम से डालें जैसे की आपने पहली जगह में किया था।

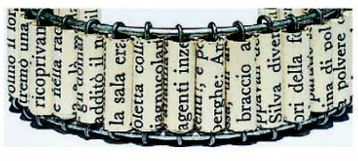

गलती या अलग करने की ललक?

इसे गलती कहें या इंसान की दुनिया से कुछ अलग करने की ललक का कमाल, कि कुछ ऐसी चीजों का निर्माण कर दिया जो मशहूर होकर अब जरूरत का हिस्सा बन गई हैं। ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनमें से कुछ खाने की हैं या इंसान के किसी और काम आने वाली। अगर हम आपको कोका कोला की बात बताएं तो इसकी खोज फार्मासिस्ट जॉन पेंबर्टन ने की थी। उन्होंने सीरप बनाना शुरू किया जिसमें वाइन और कोला को आपस में मिला दिया। बाद में उन्होंने सीरप से वाइन हटा दी और उसकी जगह कार्बोनेट मिलाया जिससे कोका-कोला तैयार हुआ। इसी तरह पेसमेकर की खोज एक इलैक्ट्रिकल इंजीनियर ने की थी। वे दरअसल रेडियो फ्रीक्वेंसी का इस्तेमाल कर शरीर का तापमान बढ़ाना चाहते थे, पर दिल को सहारा देने वाली यह मशीन बन गई।

19वीं शताब्दी तक आईसक्रीम ग्लास, पेपर में मिलती थी, पर एर्नेस्ट हेमवी ने यूं ही ब्रेड के पतले टुकड़े को लपेट दिया। बाद में कोन को कठोर कर दिया गया और आज यह हम सबके हाथों में है। चीनी हजारों सालों से माचिस में इस्तेमाल होने वाले पदार्थ का रोशनी में इस्तेमाल कर रहे थे, पर अंग्रेज कैमिस्ट ने इसे लकड़ी से लपेटकर बच्चों को लाइट से खेलने की आजादी दी और बाद में इसका इस्तेमाल होने लगा, वो हम लोगों के सामने है। बिस्किट फैक्टरी में बच्ची के हाथों गिरे चॉकलेट के टुकड़े ने चॉकलेट बिस्किट का आईडिया दिया। यह सन 1936 की बात है।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए पी.जी. इंडिया लिमिटेड एमआईई, कालापहाड़, गुवाहाटी-16 से मुद्रित एवं गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय) e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, (सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)